खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

अधिकतम : 21°C
न्यूनतम : 07°C

देहरादून, शनिवार 7 फरवरी 2026 देहरादून संस्करण: वर्ष 25 अंक 181 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com फाल्गुन कृष्ण पक्ष 4 विक्रमी सम्वत् 2082 18 शाबान 1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

मायावती ने की फिल्म घूसखोर पंडत पर प्रतिबंध लगाने की मांग पेज 2

वैभव सूर्यवंशी ने अंडर-19 विश्वकप के फाइनल में सबसे तेज शतक ठोका खेल टाइम्स

चैनलों का खेल खत्म, सरेंडर हो रहे हैं लाइसेंस सम्पादकीय

अमेरिकी नागरिकों को तुरंत ईरान छोड़ने की चेतावनी पेज 12

30 सप्ताह की गर्भावस्था समाप्त करने की अनुमति

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को एक महत्वपूर्ण फैसले में एक नाबालिग लड़की के 30 सप्ताह के गर्भ को चिकित्सकीय रूप से समाप्त करने की अनुमति दे दी। न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा कि कोई भी अदालत किसी महिला को, और विशेष रूप से एक नाबालिग लड़की को, उसकी इच्छा के विरुद्ध गर्भावस्था जारी रखने के लिए मजबूर नहीं कर सकती है।

न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने जोर देकर कहा कि गर्भवती लड़की को बच्चे को जन्म देने या नहीं देने के उसके अधिकार को उचित महत्व दिया जाना चाहिए, खासकर तब जब उसका मन नहीं हो कि वह बच्चे को जन्म दे और ऐसी इच्छा उसने साफ साफ शब्दों में बार-बार जाहिर भी की हो। पीठ ने स्पष्ट किया कि मुख्य मुद्दा यह था कि क्या एक नाबालिग को ऐसी गर्भावस्था जारी रखने के लिए मजबूर किया जा सकता है, जो उसकी मर्जी के बिना है। अदालत ने कहा कि अदालत किसी भी महिला को, नाबालिग बच्चे की तो बात ही छोड़िए, अपनी गर्भावस्था पूरी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती, अगर उसका ऐसा करने का इरादा ही नहीं हो। न्यायालय ने माना कि यह मामला इस पर निर्भर नहीं करता कि गर्भधारण सहमति से बने संबंधों के कारण हुआ था या दुष्कर्म से। वास्तव में फैसला इस बात से तय होगा कि नाबालिग की वह स्पष्ट इच्छा क्या है और उसका मन यही है कि वह बच्चे को जन्म न दे। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने स्वीकार किया कि हालांकि एक बच्चे का जन्म अंततः एक जिंदगी को दुनिया में लाना है, लेकिन इस मामले में नाबालिग की स्पष्ट अनिच्छा सबसे महत्वपूर्ण कारक है। उच्चतम न्यायालय ने मुंबई के जेजे अस्पताल को निर्देश दिया कि वे सभी आवश्यक चिकित्सा संबंधी उपायों का पालन करते हुए गर्भावस्था के चिकित्सकीय समापन की प्रक्रिया शुरू करें। यह फैसला भारत में गर्भपात कानून के तहत 'प्रजनन अधिकारों' की व्याख्या में एक मील का पत्थर माना जा रहा है। कारण यह है कि 24 सप्ताह की कानूनी सीमा के बाद भी विशेष परिस्थितियों में अदालत ने इस लड़की की पसंद को प्राथमिकता दी है। उल्लेखनीय है कि मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी संशोधन अधिनियम 2021 के अनुसार गर्भपात की समय सीमा को विभिन्न श्रेणियों में निर्धारित किया गया है। सामान्य परिस्थितियों में सभी महिलाओं के लिए 20 सप्ताह तक के गर्भ को समाप्त करने की अनुमति है, मगर इसके लिए डॉक्टर की सलाह आवश्यक है। विशेष श्रेणियों की महिलाओं जैसे कि दुष्कर्म का शिकार बनी लड़कियां, नाबालिग, विधवाओं, दिव्यांगों या गंभीर बीमारी से पीड़ित महिलाओं के लिए यह सीमा 24 सप्ताह तक निर्धारित है और इसके लिए दो डाक्टरों की इजाजत अनिवार्य है। यदि गर्भ में पल रहे भ्रूण को गंभीर बीमारी है, तो राज्य स्तरीय मेडिकल बोर्ड की अनुमति के बाद 24 सप्ताह के बाद भी गर्भपात कराया जा सकता है।

शीर्ष अदालत ने 'प्रजनन स्वायत्तता' को दी प्राथमिकता

दल-बदल मामला: तेलंगाना विधानसभा अध्यक्ष को दी अवमानना की चेतावनी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने तेलंगाना विधानसभा अध्यक्ष को अंतिम चेतावनी देते हुए निर्देश दिया है कि वे भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के विधायकों के कांग्रेस में शामिल होने संबंधी शेष अयोग्यता याचिकाओं पर तीन सप्ताह के भीतर 'सकारात्मक' रूप से निर्णय लें। न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि अगर इस समय सीमा का पालन नहीं किया गया, तो उनके विरुद्ध अवमानना की कार्यवाही शुरू की जाएगी। न्यायमूर्ति संजय करोल और न्यायमूर्ति एजी मसीह की पीठ शुक्रवार को 31 जुलाई 2025 के अपने उस आदेश के अनुपालन की समीक्षा कर रही थी, जिसके तहत अध्यक्ष को कांग्रेस में शामिल होने वाले बीआरएस के 10 विधायकों की अयोग्यता पर निर्णय लेने के लिए तीन महीने का समय दिया गया था।

रेपो रेट में बदलाव नहीं, लोन महंगा नहीं होगा

मुंबई,वार्ता

आरबीआई ने इस बार रेपो रेट में बदलाव नहीं किया है। इसे 5.25 फीसदी पर बरकरार रखा है। यानी लोन महंगे नहीं होंगे और आपकी ईएमआई भी नहीं बढ़ेगी।

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने 6 फरवरी को मॉनीटरी पॉलिसी कमेटी की मीटिंग में लिए फैसलों की जानकारी दी। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया यानी, आरबीआई ने दिसम्बर में ब्याज दर 0.25 फीसदी घटाकर 5.25 फीसदी की थीं। आरबीआई जिस रेट पर बैंकों को लोन देता है उसे रेपो रेट कहते हैं। जब आरबीआई रेपो रेट घटाता है, तो बैंकों को सस्ता कर्ज मिलता है और वो इस फायदे को ग्राहकों तक पहुंचाते हैं। 2025 में चार बार में 1.25 फीसदी की कटौती की गई थी। रिजर्व बैंक ने एक नया फ्रेमवर्क लाने का प्रस्ताव रखा है, जिसके तहत छोटे अमाउंट वाले फ्रॉड ट्रांजैक्शन में नुकसान झेलने वाले ग्राहकों को 25 हजार तक का मुआवजा दिया जाएगा। गवर्नर मल्होत्रा ने कहा कि आप सभी जानते हैं कि हाल के दिनों में कई धोखाधड़ी वाले ट्रांजैक्शन हुए हैं, जिन्हें रोकने के लिए रिजर्व बैंक ने कई कदम उठाए हैं। इसी सिलसिले में हम डिजिटल पेमेंट की सुरक्षा बढ़ाने के उपायों पर एक डिस्कशन पेपर भी जारी करने वाले हैं।

- ईएमआई भी नहीं बढ़ेगी
- आरबीआई ने ब्याज दर 5.25 प्रतिशत पर बरकरार रखी

लोन-रिकवरी एजेंट अब ग्राहकों को परेशान नहीं कर सकेंगे

मुंबई। बैंक से लोन लेने वाले और डिजिटल ट्रांजैक्शन करने वाले करोड़ों ग्राहकों के लिए राहत की खबर है। आरबीआई ने लोन रिकवरी एजेंटों की मनमानी और बैंकों द्वारा की जा रही मिस-सेलिंग पर लगाम लगाने के लिए सख्त गाइडलाइंस लाने का फैसला किया है। शुक्रवार को एमपीसी)0 की बैठक के बाद आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने बताया कि केंद्रीय बैंक तीन नए ड्राफ्ट रेगुलेशन जारी करने जा रहा है। इनका मकसद ग्राहकों की सुरक्षा को मजबूत करना और बैंकों की जवाबदेही तय करना है। इन नियमों के लागू होने के बाद रिकवरी एजेंट ग्राहकों को डरा-धमका नहीं पाएंगे और न ही बैंक आपको ऐसा इंश्योरेंस या लोन दे पाएंगे, जिसकी आपको जरूरत नहीं है।

इस्लामाबाद की शिया मस्जिद में धमाका, 31 मरे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद की एक मस्जिद में आत्मघाती हमला किया गया। शुक्रवार को जुमे की नमाज के दौरान तरलाई इलाके की इमाम बारगाह खदीजत-उल-कुबरा में जोरदार धमाका हुआ। इस विस्फोट में कई लोगों के हताहत होने की खबर है। ब्लास्ट के बाद पूरे शहर में इमरजेंसी लगा दी गई है।

पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फितना अल-ख्वारिज से जुड़े हमलावर ने गेट पर रोके जाने के बाद खुद को उड़ा लिया था। जहां यह धमाका हुआ है वो शिया मस्जिद है। इस धमाके में 31 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 169 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। घटना के बाद पूरे इलाके को सुरक्षा बलों ने घेर लिया है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक यह धमाका एक सुसाइड बॉम्बिंग यानी आत्मघाती हमला था। यह हमला ऐसे वक्त हुआ है, जब उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शौकत मिर्जियोयेव पाक की दो दिन की आधिकारिक यात्रा पर हैं। इस्लामाबाद कैपिटल टेरिटरी पुलिस के -शेष पृष्ठ दो पर

- जुमे की नमाज के दौरान हुआ हमला
- फितना अल-ख्वारिज से जुड़े हमलावर ने गेट पर रोके जाने के बाद खुद को उड़ाया

उत्तराखंड-नेपाल बॉर्डर पर बारात की बस गहरी खाई में गिरी,13 की मौत

शाह टाइम्स ब्यूरो

पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)। जनपद पिथौरागढ़ के झूलाघाट कस्बे में भारतीय सीमा से लगे नेपाल के बैतड़ी में गुरुवार (5 फरवरी) को देर रात्रि भीषण सड़क हादसा हुआ। हादसे में 13 बारातियों की मौत हो गई, जबकि 34 गंभीर घायल हो गए ।

घायलों में कई की हालत नाजुक बताई जा रही है। मौत का आंकड़ा बढ़ने की आशंका है। बताया जा रहा है कि बस बारात को लेकर बैतड़ी से बजांग जा रही थी। गुरुवार देर रात्रि बैतड़ी के पुरचूंणी नगरपालिका भवने गांव से दुल्हन लेकर बजांग के सुनकुडा जा रही बस पुरचूंणी के बड़गांव मोड़ पर अनियंत्रित होकर करीब 150 मीटर गहरी खाई में जा गिरी। हादसे में 13 लोगों की मौत हो गई। 34 लोग गंभीर घायल बताए जा रहे हैं। घायलों को स्थानीय लोगों ने आनन-फानन में रेस्क्यू कर नजदीकी हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां उनका उपचार चल रहा है। कई घायलों की हालत नाजुक बताई जा रही है। जिला प्रहरी कार्यालय बैतड़ी के प्रहरी, प्रवक्ता निरीक्षक बलदेव बडू ने बताया कि गुरुवार रात के समय नेपाल एपीएफ, प्रहरी व स्थानीय जनता द्वारा यात्रियों का रेस्क्यू किया गया। प्रहरी प्रवक्ता निरीक्षक बलदेव बडू ने बताया कि बस दुर्घटना में 6 बारातियों की घटनास्थल में ही मौत हो गई थी।5 बारातियों की डडेलधुरा अस्पताल में और 2 बारातियों की कोटिला अस्पताल में मौत हो गई। साथ ही घायलों में कुछ और बारातियों की हालत गंभीर बताई जा रही है। हादसे में बस चालक सामान्य घायल बताया जा रहा है। घायल बस चालक कंचनपुर के भीमदत्त नगरपालिका 7 निवासी विरेंद्र बुढ़ा को प्रहरी ने अपने नियंत्रण में ले लिया है। प्रथमदृष्ट्या में बस दुर्घटना का मुख्य कारण ओवरलोडिंग वर बस ओवरलोडिंग के कारण चढ़ाई में नहीं चढ़ पाना बताया जा रहा है। घायल बारातियों का डडेलधुरा अस्पताल में इलाज दिया जा रहा है, जबकि गंभीर घायलों को बेहतर इलाज के लिए धनगढ़ी भेजा गया है।

- 34 लोग घायल, कई की हालत गंभीर, गुरुवार देर रात हुआ हादसा

दुर्घटना में मरने वालों के नाम

केशव राज जोशी (40), अशोक राज जोशी (13), बसंत राज जोशी, बिष्णु दत्त जोशी (41), नरेश राज जोशी (42), बिशन दत्त जोशी (17), दीपक जोशी (28), किशन जोशी (46), (ये सभी बजांग बित्थड चीर गांव पालिका 7 निवासी), मोहन देव भट्ट (60), बजांग केदारस्यु गांव पालिका निवासी, केशव भट्ट (27), बजांग केदारस्यु गांव पालिका निवासी, बसंत राज रतला (40), निवासी बजांग जय पृथ्वी नगर पालिका 7. पुष्पा अवस्थी (40), निवासी बैतड़ी पुरचूंणी नगरपालिका 7. सुशील जोशी, बैतड़ी पुरचूंणी नगरपालिका 7 निवासी

संक्षिप्त समाचार

युवराज मौत मामला : हाईकोर्ट ने दिया बिल्डर अभय कुमार की रिहाई का आदेश

प्रयागराज। उप्र के नोएडा में सॉफ्टवेयर इंजीनियर युवराज मेहता की गडढे में गिरने से हुई मौत के मामले में गिरफ्तार बिल्डर अभय कुमार को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने तत्काल रिहा करने का आदेश दिया है। न्यायाधीश सिद्धार्थ और न्यायाधीश जय कृष्ण उपाध्याय की खंडपीठ ने हैबियस कॉर्पस याचिका पर सुनवाई करते हुए यह निर्देश जारी किया। याचिकाकर्ता अभय कुमार ने अपनी गिरफ्तारी, हिरासत और रिमांड को अवैध घोषित किए जाने तथा अवैध हिरासत से मुक्त करने की मांग की थी।

आंतरिक रिक्ति के लिए आईपीएस मीणा का दावा खारिज

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को तमिलनाडु कैडर के 2004 बैच के आईपीएस अधिकारी की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने उसी चयन वर्ष के लिए राजस्थान कैडर में एक आंतरिक रिक्ति के आवंटन की मांग की थी। अदालत ने कहा कि इस तरह के विलंबित दावों पर विचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे कैडर आवंटन की व्यवस्था को अस्थिर कर देंगे।

जन सुराज पार्टी की याचिका पर सुनवाई से सुप्रीम इन्कार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को प्रशांत किशोर के नेतृत्व वाली जन सुराज पार्टी द्वारा बिहार विधानसभा चुनाव, 2025 को चुनौती देने वाली रिट याचिका पर सुनवाई करने से इन्कार कर दिया, जिसमें उन्होंने राज्य में नए सिरे से चुनाव कराने का निर्देश देने की मांग की थी।

जब पीठ ने मामले पर सुनवाई करने में अनिच्छा व्यक्त की, तो याचिकाकर्ता ने याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी और उच्च न्यायालय में अपील करने की स्वतंत्रता मांगी। उन्हें यह स्वतंत्रता प्रदान करते हुए, मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने याचिका को वापस लिया हुआ मानकर खारिज कर दिया। इस रिट याचिका को संविधान के अनुच्छेद 32 के अंतर्गत दायर किया गया था।

- बिहार में नए सिरे से चुनाव कराने की थी मांग

भारत ने छठी बार जीता अंडर-19 विश्वकप

इंग्लैंड को फाइनल में 100 रनों से हराया

नई दिल्ली। भारतीय अंडर-19 टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ फाइनल में शानदार प्रदर्शन किया और छठी बार विश्व कप का खिताब जीत लिया। भारत ने इंग्लैंड को फाइनल में 100 रनों से हराया। भारत ने इंग्लैंड के सामने 412 रन का लक्ष्य रखा था। जवाब में इंग्लिश टीम 40.2 ओवर में 311 रन पर सिमट गई।

टीम इंडिया के लिए वैभव सूर्यवंशी फाइनल के सुपरस्टार रहे। उन्होंने 80 गेंद में 175 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। वहीं, इंग्लैंड की ओर से कैलब फाल्कनर ने शतक जड़ा, लेकिन टीम को नहीं जिता पाए। फाल्कनर ने 67 गेंद पर 115 रन की पारी खेली। भारत पूरे टूर्नामेंट के दौरान अजेय रहा और ग्रुप चरण से लेकर फाइनल मुकाबले तक कोई टीम आयुष म्हात्रे की अगुआई वाली टीम को हरा नहीं सकी। भारत के लिए वैभव सूर्यवंशी, आयुष म्हात्रे और अभिज्ञान कुंडू ने पूरे टूर्नामेंट के दौरान -शेष पृष्ठ दो पर

छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र बॉर्डर पर मुठभेड़, तीन नक्सली ढेर

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिले में सुरक्षाबल के जवानों और नक्सलियों के बीच एक बार फिर से मुठभेड़ हुई है। इस मुठभेड़ में तीन नक्सलियों के मारे जाने की पुष्टि की गई है। मुठभेड़ बीजापुर और महाराष्ट्र के बॉर्डर में हुई है।

इस ऑपरेशन में छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के सुरक्षाबलों की टीम संयुक्त रूप से शामिल हैं। छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र बॉर्डर पर नक्सलियों की मौजूदगी के बाद ऑपरेशन शुरू किया गया था। महाराष्ट्र पुलिस के अनुसार, जवानों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में 3 नक्सली ढेर हुए। वहीं महाराष्ट्र का एक जवान शहीद हो गया। 6 फरवरी की सुबह अबूझमाड़ के जंगल में दोनों ओर से गोलीबारी शुरू हुई। जिसमें 3 नक्सली मारे गए हैं।

- महाराष्ट्र का एक जवान शहीद

धामपुर में फर्जी आईबी डिप्टी कमिश्नर गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

धामपुर। खुद को इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) का डिप्टी कमिश्नर बताकर बिजनौर जनपद के पुलिस अधिकारियों, प्रशासनिक सरकारी अधिकारियों के अमले पर रौब गांठने वाले शातिर व्यक्ति को मेरठ एसटीएफ ने धामपुर से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान मनोज कुमार पुत्र नरेंद्र कुमार निवासी ग्राम त्रिलोकवाला, थाना नगीना के रूप में हुई है। वह नगीना मार्ग स्थित गुलमोहर रेस्टोरेंट के पास बीते करीब पांच वर्षों से किराए के मकान में रह रहा था।

शासन स्तर पर शिकायत पहुंचने के बाद मामले की गोपनीय जांच कराई गई। जांच में सामने आया कि आरोपी लगातार खुद को आईबी का बड़ा अधिकारी बताकर अधिकारियों पर अपने पक्ष में कार्रवाई कराने का दबाव बनाता रहा। इसके बाद मेरठ एसटीएफ की टीम ने इंस्पेक्टर रविंद्र कुमार के नेतृत्व में धामपुर पहुंचकर उसे हिरासत में लिया। फिलहाल आरोपी से कोतवाली में पूछताछ जारी है और उसके संपर्कों की भी जांच की जा रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, बीते 24 दिसम्बर को मनोज की पत्नी अपर्णा का ईदगाह के सामने एक्सीडेंट हो गया था। गंभीर हालत में उसे मुरादाबाद ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। इस घटना के बाद मनोज ने खुद को आईबी का डिप्टी कमिश्नर बताते हुए बिजनौर के आला पुलिस अधिकारियों समेत अन्य अधिकारियों -शेष पृष्ठ दो पर

- एसटीएफ मेरठ ने किया खुलासा, पुलिस अफसरों और नेताओं पर रौब गांठ कर वर्षों से बनाता रहा दबाव, नेटवर्क खंगाल रही एसटीएफ

दवाइयों का होलसेल कारोबार, डाक्टरों से भी जान-पहचान

बताया जा रहा है कि मनोज गुलमोहर रेस्टोरेंट के पास गली में स्थित रिटायर्ड कानूनगो के मकान मे किराए पर रहता था। दवाइयों का होलसेल कारोबार करता था। धामपुर के कई निजी चिकित्सकों और मेडिकल स्टोर संचालकों से उसके संपर्क थे। चिकित्सकों से भी वह खुद को आईबी अधिकारी बताकर जान-पहचान बनाता था, जिससे उसका रौब और प्रभाव बना रहता था।

खुफिया तंत्र पर उठे सवाल

पिछले पांच वर्षों से धामपुर में रह रहे मनोज की पत्नी स्थानीय एक निजी अस्पताल में कार्यरत थी और उसका मायका भी धामपुर क्षेत्र के एक गांव में बताया जा रहा है। इसके बावजूद स्थानीय पुलिस और जिले का खुफिया विभाग उसकी गतिविधियों को समय रहते पकड़ नहीं सका। गैर जनपद मेरठ से आई एसटीएफ टीम द्वारा की गई कार्रवाई के बाद ही पूरे मामले का पर्दाफाश हो सका। एसटीएफ आरोपी के नेटवर्क, लेन-देन और संपर्कों की जांच कर रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी ने किन-किन मामलों में फर्जी अधिकारी बनकर दबाव बनाया, इसकी जानकारी जुटाई जा रही है।

दिल्ली: सड़क पर खुदे गड्ढे में गिरकर बाइक सवार की मौत

नई दिल्ली। वेस्ट दिल्ली के जनकपुरी इलाके में दिल्ली जल बोर्ड की कंस्ट्रक्शन साइट पर खोदे गए 15 फीट गहरे गड्ढे में गिरने से एक मोटरसाइकिल सवार की मौत हो गई। हादसा गुरुवार देर रात को हुआ। मृतक की पहचान कैलाशपुरी निवासी कमल भयानी (25) के रूप में हुई है, जो एक प्राइवेट बैंक के कॉल सेंटर में काम करता था। सुबह करीब 8 बजे पीसीआर कॉल मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस के मुताबिक गड्ढा डीजेबी ने कंस्ट्रक्शन के लिए खोदा था और सड़क कुछ दिनों से बंद थी। पुलिस घटना के सभी पहलुओं की जांच कर रही है। कैबिनेट मंत्री परवेश साहिब सिंह वर्मा ने कहा कि दिल्ली जल बोर्ड के तीन अधिकारियों को सस्पेंड किया गया है। इनमें एग्जीक्यूटिव इंजीनियर, असिस्टेंट इंजीनियर और जूनियर इंजीनियर शामिल हैं। साथ ही प्रोजेक्ट कंपनी पर कार्रवाई होगी और डीजेबी पीड़ित परिवार को मुआवजा देगा।

संक्षिप्त समाचार

पीडीए पाठशाला को जनआंदोलन में बदलने का आह्वान

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि 'पीडीए पाठशाला' के सांकेतिक आंदोलन को अब वास्तविक और जमीनी जनआंदोलन में बदलना होगा। तभी शोषित-वंचित समाज की आने वाली पीढ़ियां पढ़-लिखकर आगे बढ़ सकेंगी। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा की शिक्षा-विरोधी सोच के कारण प्रदेश में सरकारी स्कूलों को बंद कराया जा रहा है। अखिलेश यादव ने अपने बयान में कहा है कि भाजपा जानती है कि शिक्षा से लोगों में जागरूकता और वैज्ञानिक चेतना आती है, जो उसकी दक़ियानूसी, रूढ़िवादी और संकीर्ण सोच के लिए खतरा है। इसी वजह से भाजपा शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान के खिलाफ रहती है और उसके संगी-साथी बच्चों को एकरंगी नकारात्मक विचारधारा में ढालना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों से शिक्षा और तालीम का अधिकार छीनना एक गंभीर सामाजिक अपराध है, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान पीडीए समाज को ही उठाना पड़ेगा।

योगी ने लता को पुण्यतिथि पर दी विनम्र श्रद्धांजलि

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय संगीत को अपनी दिव्य स्वर-साधना से विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने वाली स्वर कोकिला, 'भारत रत्न' लता मंगेशकर की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने कहा कि लता मंगेशकर का अद्वितीय गायन और संगीत के प्रति उनका आजीवन समर्पण कला जगत के लिए एक अमूल्य धरोहर है। उनकी मधुर वाणी और संगीत साधना सदैव हमारे हृदयों में जीवंत रहेगी तथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

प्रधानमंत्री पद पर बैठा व्यक्ति मनोबल टूटने पर ही बोलेगा अपशब्द

नई दिल्ली, वार्ता

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सीधा हमला करते हुए कहा है कि इस पद पर बैठा व्यक्ति यदि अपशब्द और असत्य बोलने लगता है, तो इसका सीधा मतलब यही होता है कि उनमें कोई हताशा है, जिसके कारण उनका मनोबल टूट गया है।

खड़गे ने प्रधानमंत्री के राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर गुरुवार को दिए गए जवाब पर एक वीडियो पोस्ट में शुक्रवार को कहा कि मोदी ने 97 मिनट पर अपना भाषण दिया और इसमें वह सब असत्य ही दोहराते रहे हैं। जब हमने अभिभाषण पर अपनी बातें रखी उनका भी प्रधानमंत्री ने जवाब नहीं दिया। वह सिर्फ 100 साल, 75 साल, 50 साल की बात करते रहे। इसका मतलब यही है कि मोदी के पास हमारे पूछे गए सवालों का जवाब देने की शक्ति ही नहीं है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि मोदी कांग्रेस पर सिखों का अपमान करने का आरोप लगा रहे हैं,

■ हमारे पूछे गए सवालों का जवाब देने की ताकत नहीं: खड़गे

जबकि सच यह है कि उन्होंने खुद सिखों का अपमान किया है। मोदी ने खुद पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह का अपमान किया था। दरअसल सिखों का अपमान तो प्रधानमंत्री ने किया है। मोदी ने कहा कि हमने सिखों का अपमान किया। मतलब सदन के बाहर दो लोगों की बातचीत हुई, उसे सिखों का अपमान कह दिया गया। उनका कहना था कि कांग्रेस सिखों का बहुत आदर करती है, कांग्रेस सरकार में डा. मनमोहन सिंह वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री बने थे, लेकिन श्री मोदी न सिखों का आदर करते हैं, न दलितों का और न ही आदिवासियों का। खड़गे ने ये बातें दिखाती हैं कि श्री मोदी का मनोबल टूट चुका है, उनकी रौनक कम हो गई है। वे कहते हैं मुझे गालियां देते हैं, दो किलो गालियां दीं, एक कुंतल गालियां दीं तो क्या गालियां तोलते हैं। उन्होंने मुझे तो बहुत गालियां दी हैं। और खुद के लिए कहते हैं दो-दो किलो, एक-एक कुंतल गालियां मुझे देते हैं और ये क्या है। प्रधानमंत्री पद पर बैठा इंसान अगर लोकतंत्र और देश के लिए अपशब्द कहे, तो ये अच्छी बात नहीं है। उन्होंने लोकसभा में पूर्व सेना प्रमुख नरवणे की पुस्तक के अंश पढ़ने नहीं देने का भी जिक्र किया और कहा ष्वे कहते हैं कि किताब छपी ही नहीं है। जब नरवणे जी की किताब हमें मिल गई, तो सत्ता में बैठे लोगों को कैसे नहीं मिली। वे संसद में कह रहे हैं कि किताब अभी प्रकाशित ही नहीं हुई है। अमित शाह हो या राजनाथ सिंह सभी ने बार-बार किताब न होने की बात की, लेकिन असलियत में किताब मौजूद है। जब नरवणे जी की किताब के बारे में राहुल गांधी ने संसद में बोला, तो पूरे सत्ता पक्ष को जाने क्यों बुरा लगा।

'घूसखोर पंडत' पर लगे प्रतिबंधः मायावती

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने वेब सीरीज 'घूसखोर पंडत' में 'पंडित' शब्द को लेकर की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणी पर कड़ा ऐतराज जताया है। उन्होंने इसे बेहद दुखद और चिंताजनक बताते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश ही नहीं, अब फिल्मों के माध्यम से भी एक विशेष वर्ग का अपमान किया जा रहा है, जिससे पूरे देश में आक्रोश व्याप्त है।

मायावती ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि फिल्म में 'पंडित' को 'घुसपैठिया' बताकर पूरे ब्राह्मण समाज का अपमान और अनादर किया गया है। उन्होंने कहा कि इस तरह की जातिसूचक टिप्पणियां सामाजिक सौहार्द को

नुकसान पहुंचाने वाली हैं और इन्हें किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जा सकता। बसपा प्रमुख ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि उनकी पार्टी इस तरह की टिप्पणी की कड़ी निंदा करती है। उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की कि ऐसी जातिसूचक और समाज को बांटने वाली फिल्म पर तत्काल प्रतिबंध लगाया जाए, ताकि सामाजिक तनाव को रोका जा सके। मायावती ने कहा कि संविधान सभी वर्गों को सम्मान और समानता का अधिकार देता है, ऐसे में किसी भी माध्यम से किसी समाज को अपमानित करना न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि कानून-व्यवस्था और सामाजिक समरसता के लिए भी घातक है। उन्होंने केंद्र सरकार से इस मामले में त्वरित और कठोर कार्रवाई करने की अपील की।

पदाधिकारियों की अहम बैठक आज

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने शनिवार को पार्टी संगठन की एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई है। इस बैठक में उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ पदाधिकारियों, जिला अध्यक्षों को बुलाया गया है। पार्टी की तरफ से एक आधिकारिक बयान जारी कर इसकी जानकारी दी गई है। बैठक से पूर्व मायावती मीडिया को संबोधित करेंगी।

यूपी में दावे व आपत्तियों की तारीख एक महीने बढ़ी

लखनऊ, वार्ता

■ अब 10 अप्रैल को आएगी फाइनल वोटर लिस्टः रिणवा

यूपी में एसआईआर पर दावे और आपत्तियों की तारीख एक महीने तक बढ़ा दी गई है। अब 6 फरवरी की जगह 6 मार्च तक फॉर्म-6 और फॉर्म-7 जमा करवाया जा सकता है। नोटिस की सुनवाई की प्रक्रिया 27 मार्च तक चलेगी, इसके बाद 10 अप्रैल को इलेक्शन कमीशन की तरफ से फाइनल मतदाता सूची जारी की जाएगी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तर प्रदेश नवदीप रिणवा ने बताया कि प्रदेश में 27 अक्टूबर को एसआईआर की प्रक्रिया की शुरुआत की गई थी। घर-घर जाकर बीएलओ की तरफ से गणना का काम 4 नवंबर से शुरू किया गया था, फिर 6 जनवरी को मतदाता सूची का ड्राफ्ट जारी किया गया था। नवदीप रिणवा ने बताया कि राजनीतिक दलों और नागरिकों की अपील पर चुनाव आयोग ने समय बढ़ाने का निर्णय लिया है। हमारा लक्ष्य है कि मतदाता सूची पूरी तरह से सटीक और समावेशी बने। पहले दावा-आपत्ति की अवधि 6 फरवरी में समाप्त हो रहा था, लेकिन अब यह मार्च तक बढ़ा दिया गया है। विसंगतियों और नोटिस के जवाब का निपटारा 27 मार्च 2026 तक पूरा कर लिया जाएगा। विदेश में रह रहे नागरिक भी फॉर्म 6। भरकर मतदाता सूची में नाम जुड़वा सकते हैं। नवदीप रिणवा ने कहा कि प्रदेश में देश की सबसे बड़ी मतदाता संख्या है। यहां लगभग 15 करोड़ से अधिक वोटर हैं है। एसआईआर 2026 की प्रक्रिया पिछले साल से चल रही है। एसआईआर का उद्देश्य पुरानी सूचियों से लिंकिंग, डुप्लीकेट नाम हटाना और नई एंट्रीज को सुनिश्चित करना है।

विधानसभा चुनाव से पहले सभी दल पूरी ताकत के साथ तैयारियों में जुटे

चुनाव से पूर्व यूपी भाजपा में अंतर्विरोधों की आहट

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले सभी राजनीतिक दल पूरी ताकत के साथ तैयारियों में जुटे हैं। इसी बीच सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी के भीतर उभरते विरोधी सुरों ने पार्टी नेतृत्व की चिंता बढ़ा दी है। जनप्रतिनिधियों बनाम अधिकारियों और सरकार बनाम संगठन के बीच खिचती रेखा अब सार्वजनिक बहस का विषय बनती जा रही है। 30 जनवरी को महोबा में जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह और स्थानीय भाजपा विधायक बृजभूषण राजपूत के बीच सड़क पर हुआ तीखा विवाद इसी अंतर्विरोध का ताजा उदाहरण माना जा रहा है। हालांकि पार्टी नेतृत्व ने इसे मामूली घटना बताया, लेकिन सियासी गलियारों में इसे सत्ता और संगठन के बीच असंतुलन की एक

■ सरकार-संगठन के बीच खिंचती रेखा बनी चुनौती, विरोधी सुरों ने पार्टी नेतृत्व की चिंता बढ़ाई

कड़ी के रूप में देखा जा रहा है। महोबा में जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह और भाजपा विधायक बृजभूषण राजपूत के बीच हुई तीखी नोकझोंक को लेकर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी ने संक्षिप्त प्रतिक्रिया दी।

उन्होंने कहा कि पूरा मामला पार्टी के संज्ञान में है। इस मामले में दोनों नेताओं से बात कर ली गई है। हालांकि यह पहला मौका नहीं है जब भाजपा के भीतर अनुशासन की दीवार में दरार दिखाई दी हो। बीते कुछ वर्षों में ऐसे कई प्रसंग सामने आए हैं, जब जनप्रतिनिधियों की महत्वाकांक्षा और प्रशासनिक कार्यशैली को लेकर असंतोष खुलकर सामने आया। इससे पहले जुलाई 2022 में जलशक्ति राज्यमंत्री दिनेश खटीक द्वारा अधिकारियों पर उपेक्षा और भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए सार्वजनिक रूप से इस्तीफा देना, इसी बेचैनी का बड़ा संकेत था। हालांकि बाद में मामला संभाल लिया गया, लेकिन तब यह संदेश साफ चला गया कि अंदरखाने सब कुछ ठीक नहीं है। 2024 के लोकसभा चुनाव के दौरान भी पार्टी के भीतर कलह खुलकर सामने आई थी। मुजफ्फरनगर सीट से चुनाव लड़ रहे केंद्रीय मंत्री डा. संजीव बालियान और भाजपा के पूर्व विधायक संगीत सोम के बीच चली तीखी जुबानी जंग का असर कई सीटों पर पड़ा। चुनाव परिणाम आने के बाद सहारनपुर से भाजपा प्रत्याशी राघव लखनपाल शर्मा ने खुले तौर पर अपनी हार के लिए पार्टी के ही मंत्री और विधायक पर आरोप लगाकर सियासी तापमान और बढ़ा दिया।

खींचतान खुलकर आने लगी सामने

उत्तर प्रदेश की सियासत में सत्ताधारी भाजपा के भीतर ही नहीं, बल्कि भाजपा और उसके सहयोगी दलों के मंत्रियों के बीच भी खींचतान खुलकर सामने आने लगी है। ताजा मामला कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर और अनिल राजभर के बीच बढ़ते टकराव का है, जो अब सार्वजनिक मंचों तक पहुंच गया है। दोनों नेता न सिर्फ एक ही जाति से आते हैं, बल्कि एक ही इलाके के निवासी हैं और योगी सरकार में कैबिनेट स्तर के मंत्री भी हैं। लंबे समय से चली आ रही आपसी अदावत अब तीखी बयानबाजी में बदलती दिख रही है। कुछ दिन पहले अनिल राजभर एक कार्यक्रम में भाषण दे रहे थे, तभी पीला गमछा पहने कुछ लोगों ने नारेबाजी शुरू कर दी। इससे नाराज मंत्री अनिल राजभर ने नारेबाजी कर रहे लोगों को ओम प्रकाश राजभर का समर्थक बताते हुए कहा कि जैसा इनका नेता चोर है, वैसे ये भी चोर हैं। इस घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए ओम प्रकाश राजभर ने अनिल राजभर पर पलटवार करते हुए कहा कि उंगली उठाने वाले 23 साल पहले लोहे की दुकान चलाते थे और चोरी करते थे।

काम कोर्स
उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज़ पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

सेंसेक्स 83580.40
निफ्टी 25693.70

सोना 151489
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार | देश

चांदी रु. 241184
प्रति किलो

एफएमसीजी, निजी बैंकों में लिवाली से चढ़े प्रमुख सूचकांक

मुंबई, वार्ता

घरेलू शेयर बाजारों में शुक्रवार को शुरुआती गिरावट के बाद एफएमसीजी और निजी बैंकों के शेयरों में तेजी रही और प्रमुख सूचकांक हरे निशान में बंद हुए।

बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 266.47 अंक (0.32 प्रतिशत) ऊपर 83,580.40 अंक पर पहुंच गया। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक भी 50.90 अंक चढ़कर 25,693.70 अंक पर बंद हुआ। सुबह सेंसेक्स एक समय 388 अंक टूट गया था, लेकिन रिजर्व बैंक (आरबीआई) के मौद्रिक नीति बयान से उत्साहित निवेशकों की लिवाली से दोपहर बाद लिवाली से यह 288 अंक चढ़

गया था। केंद्रीय बैंक ने रेपो तथा दूसरी नीतिगत दरों में कोई बदलाव नहीं किया है, लेकिन आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने साफ कहा कि लंबे समय तक रेपो दर निचले स्तर पर बनी रहेगी। नीतिगत स्तर पर रिजर्व बैंक ने एमएसएमई के लिए रेहन-मुक्त ऋण की सीमा 10 लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये करने की घोषणा की। बड़ी कंपनियों के विपरीत मझौली और छोटी कंपनियों में बिकावाली हावी रही। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.36 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.27 प्रतिशत गिरकर बंद हुआ। एफएमसीजी सेक्टर का सूचकांक 2.27 प्रतिशत चढ़ा। निजी बैंक, रियलिटी, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद और तेल एवं गैस समूहों के सूचकांकों में भी तेजी रही। वहीं निफ्टी आईटी सूचकांक 1.47 प्रतिशत लुढ़क गया। फार्मा, ऑटो, सार्वजनिक बैंकों, स्वास्थ्य और रसायन समूहों में भी गिरावट रही। एनएसई में जिन 3,242 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, उनमें 1,781 के शेयर लाल निशान में और 1,340 के हरे निशान में बंद हुए। अन्य 121 कंपनियों के शेयर दिन भर के उतार.चढ़ाव के बाद अंत में अपरिवर्तित रहे। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 13 के शेयर हरे निशान में रहे।

चांदी सस्ती, सोना भी 1.51 लाख पर आया

नई दिल्ली। सोने-चांदी के दाम में 6 फरवरी को गिरावट देखी गई। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार सर्राफा बाजार में चांदी की कीमत आज 13,155 रुपए गिरकर 2,41,184 रुपए प्रति किलो पर आ गई है। इससे पहले इसकी कीमत 2,54,339 रुपए थी। दो दिन में ये 41,278 रुपए सस्ती हो चुकी है। वहीं 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव आज 1,013 रुपए कम होकर 1,51,489 रुपए पर आ गया है। इससे पहले ये 1,52,502 रुपए पर था। सोना दो दिन में 6,669 रुपए सस्ता हुआ है। सर्राफा बाजार में सोने ने 29 जनवरी को 1,76,121 और चांदी ने 3,85,933 रुपए का ऑल टाइम हाई बनाया था। सोने-चांदी की बढ़ती-घटती कीमतों पर न केवल निवेशकों की नजर है, बल्कि शादी-ब्याह के सीजन के बीच आम खरीदार भी उहापोह में हैं। चांदी की कीमतों में लगातार बदलाव हो रहे हैं। आज फिर से मुनाफावसूली देखी गई है। हालांकि निवेशकों ने खरीदारी पर भी फोकस किया है। आज लखनऊ में सोने की कीमत की बात करें तो 24 कैरेट सोने का भाव 1,52,400 रुपये/10 ग्राम चल रहा है। 22 कैरेट सोने का दाम 1,39,800 रुपये/10 ग्राम और 18 कैरेट सोने का दाम 1,14,310 रुपये/10 ग्राम चल रहा है। वहीं, भागलपुर में 24 कैरेट सोने का भाव 1,52,400 रुपये/10 ग्राम चल रहा है।

चावल, गेहूं सस्ता, दालों, खाद्य तेलों में रही घट-बढ़

नई दिल्ली, वार्ता

घरेलू थोक जिंस बाजारों में शुक्रवार को चावल के औसत भाव घट गए। चावल के साथ गेहूं में भी नरमी रही। चीनी के दाम कमोबेश गत दिवस के स्तर पर ही टिके रहे। दालों और खाद्य तेलों की कीमतों में उतार-चढ़ाव देखा गया। औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत 14 रुपये घटकर 3,851 रुपये प्रति क्विंटल रह गई। गेहूं भी 16 रुपये टूट गया और 2,854 रुपये प्रति क्विंटल बोला गया। आटा 13 रुपये सस्ता हुआ।

दाल-दलहनों में तुअर दाल की औसत कीमत 49 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गई। चना दाल सात रुपये प्रति क्विंटल महंगी हुई। मसूर दाल 16 रुपये और मूंग दाल 15 रुपये प्रति क्विंटल सस्ती हुई। उड़द दाल में आठ रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट रही। विदेशों में मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में

पाम ऑयल का अप्रैल वायदा 53 रिंगिट टूटकर 4,153 रिंगिट प्रति टन रह गया। अमेरिकी सोया तेल का मार्च वायदा भी 0.68 प्रतिशत की गिरावट में 55.27 सेंट प्रति पौंड बोला गया। स्थानीय बाजारों में सूरजमुखी तेल औसतन 28 रुपये और वनस्पति 22 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता हुआ। सरसों तेल की कीमत 51 रुपये और पाम ऑयल की 44 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गई। मूंगफली तेल 25 रुपये और सोया तेल 24 रुपये प्रति क्विंटल महंगा हुआ। मीठे के बाजार में आज गुड़ के औसत भाव 27 रुपये प्रति क्विंटल घट गए।

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना
खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काज़ीज़ादा, अमरोहा-UP
हाशमी
दवाखाना
9997161320, 8272800800

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहज़मी जॉन्डिस, फेटी लीवर, एल्कॉहलिक लिवर डिज़ीज़ आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

प्रथम पृष्ठ के शेष...

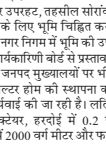

इस्लामाबाद की ...

प्रवक्ता तकी जवाद ने कहा कि धमाके की प्रकृति का पता लगाना अभी जल्दबाजी होगी और फोरेंसिक टीमों को यह तय करना होगा कि यह आत्मघाती हमला था या प्लांट किया गया बम। धमाके के बाद पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। लोग अपनी जान बचाते हुए इधर-उधर भागते दिखे। सूचना मिलते ही फौरन पुलिस और रेस्क्यू टीमें पहुंची और राहत व बचाव कार्य में जुट गए। घटना से जुड़े कई वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आई हैं, जिसमें लोग इमाम बारगाह की जमीन पर बेसुध पड़े हैं। वहीं कुछ लोग एक दूसरे की मदद करते दिखाई दिए। सुरक्षा एजेंसियों ने इमाम बारगाह और आसपास के पूरे इलाके की घेराबंदी करते हुए कड़ी निगरानी रखी जा रही है। राजधानी के पॉलीक्लिनिक, पाकिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमस), और सीडीए अस्पताल में इमरजेंसी लगा दी गई है। पीआईएमएस के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (ईडी) के निर्देश पर अस्पताल में इमरजेंसी लागू कर दी गई है। एक प्रवक्ता ने बताया कि मुख्य इमरजेंसी, आर्थोपेडिक, बर्न सेंटर और यूएसयूरोलॉजी डिपार्टमेंट को एक्टिव कर दिया गया है।

भारत ने... शानदार प्रदर्शन किया। भारत ने पहले मैच में अमेरिका को छह विकेट से हराया। इसके बाद बांग्लादेश को 18 रन से मात देकर सुपर सिक्स चरण में प्रवेश किया। ग्रुप चरण के आखिरी मैच में भारत ने न्यूजीलैंड को डीएलएस प्रणाली से सात विकेट से हराया। ग्रुप चरण में दमदार प्रदर्शन के बाद भारत ने सुपर सिक्स चरण में जिम्बाब्वे को 204 रनों के बड़े अंतर से हराया। फिर चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 58 रन से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया और पाकिस्तान को बाहर का रास्ता दिखाया। भारत ने सेमीफाइनल में अफगानिस्तान को सात विकेट से हराकर फाइनल में जगह बनाई। इसमें कोई शक नहीं है कि भारत का अंडर-19 विश्व कप में हमेशा ही दबदबा रहा है। दिलचस्प बात यह है कि भारत अंडर-19 विश्व कप के 16 सत्र में से 10 बार खिताबी मुकाबले में पहुंच चुका है जो सर्वाधिक है। भारत ने लगातार छठी बार खिताबी मुकाबले में प्रवेश किया था। टीम ने 2016, 2018, 2020, 2022, 2024 और 2026 में खिताबी मुकाबले में प्रवेश किया। यह आंकड़ा ये बताने के लिए अपने आप में काफी है कि भारतीय टीम का अंडर-19 में कोई सानी नहीं है। यहां तक कि आस्ट्रेलिया टीम भी भारत से काफी पीछे है। आस्ट्रेलिया ने छह बार अंडर-19 टीम के फाइनल में जगह बनाई है और चार बार खिताब जीता है। अंडर-19 विश्व कप का किया था सबसे बड़ा रन चेज-भारत के नाम अंडर-19 विश्व कप में सबसे बड़ा रन चेज का रिकार्ड भी है। टीम ने यह उपलब्धि अफगानिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में हासिल की थी। अफगानिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में चार विकेट पर 310 रन बनाए। जवाब में भारत के लिए आरोन जार्ज ने शतक लगाया, जबकि वैभव सूर्यवंशी और कप्तान आयुष म्हात्रे ने अर्धशतक लगाए, जिससे टीम ने 41.1 ओवर में तीन विकेट पर 311 रन बनाकर मैच अपने नाम किया था। भारत ने इस तरह अंडर-19 विश्व कप का सबसे बड़ा रन चेज बनाया था। इससे पहले ये रिकॉर्ड न्यूजीलैंड के नाम था जिन्होंने 2006 में आयरलैंड के खिलाफ 305 रनों का लक्ष्य हासिल किया था। भारत ने इस तरह 20 साल पुराना रिकार्ड तोड़ा था।

धामपुर में.... को फोन कर दबाव बनाया। मामला केंद्रीय एजेंसी से जुड़ा बताने के कारण पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। बाद में उच्च स्तर पर संदेह होने पर पूरे प्रकरण की जांच शुरू कराई गई। मेरठ एसटीएफ को इनपुट मिला था कि धामपुर में रह रहा एक व्यक्ति खुद को आईबी अधिकारी बताकर सरकारी कामों में हस्तक्षेप कर रहा है। टीम ने सर्विलांस के जरिए आरोपी की गतिविधियों की निगरानी की और शुक्रवार देर शाम उसे दबोच लिया। आरोपी के मोबाइल फोन, कॉल डिटेल और संपर्कों की बारीकी से जांच की जा रही है। सूत्र बताते हैं कि आरोपी पुलिस अधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय नेताओं को भी फोन कर खुद को आईबी का वरिष्ठ अधिकारी बताता था। इस रौब के सहारे वह कई बार अपने काम निकलवाने की कोशिश करता रहा। उसकी शातिराना कार्यप्रणाली के चलते मोहल्ले के लोग भी उसकी असल पहचान से अनजान रहे। एसटीएफ ने बताया कि मनोज कुमार एमएससी पास है और उसकी बोलने की शैली काफी प्रभावशाली है। वह लोगों के काम कराने का भरोसा दिलाकर अधिकारियों पर दबाव बनाता था। सरकारी कार्यालयों में खुद को आईबी अधिकारी बताकर वह अपने काम निकलवाने की कोशिश करता था। सर्विलांस डिटेल और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी लंबे समय से सरकारी कार्यों में हस्तक्षेप कर रहा था। पत्नी की सड़क हादसे में मृत्यु के बाद उसने अधिकारियों पर काफी दबाव बनाया था।

आवारा कुत्तों को लेकर योगी सरकार का बड़ा फैसला

हर जिले में बनेंगे शेल्टर होम व एबीसी सेंटर, जिला मुख्यालयों पर भी जमीन की जा रही चिन्हित

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। यूपी में आवारा कुत्तों के आतंक से निजात दिलाने के लिए योगी सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। अब हर जिले में शेल्टर होम और एबीसी सेंटर बनाए जाएंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए हैं कि सभी 75 जिलों के मुख्यालयों पर जल्द से जल्द ये केंद्र शुरू किए जाएं। शेल्टर होम की क्षमता, इन्फ्रास्ट्रक्चर, पशु चिकित्सा सुविधाएं, भोजन, स्वच्छता, सुरक्षा व्यवस्था और प्रशिक्षित स्टाफ की तैनाती जैसे सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया गया है।

योगी सरकार ने नगर निगमों और जनपद मुख्यालयों पर डॉग शेल्टर होम व एनिमल बर्थ कंट्रोल (एबीसी) सेंटर की स्थापना प्रक्रिया तेज कर दी है। शासन स्तर पर इसे प्राथमिकता देते हुए भूमि चिह्नीकरण, बजट निर्धारण और परियोजना स्वीकृति की कार्रवाई एक साथ आगे बढ़ाई जा रही है। इसको लेकर सुप्रीम कोर्ट ने हाल में ही गाइडलाइंस जारी की थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आवारा कुत्तों की समस्या का समाधान मानवीय, वैज्ञानिक व

स्थायी तरीके से करने का आदेश दिया था। सरकार का मानना है कि डॉग शेल्टर होम और एबीसी सेंटर की प्रभावी व्यवस्था से जहां एक ओर आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, वहीं दूसरी ओर पशु कल्याण को भी मजबूती मिलेगी। नगर निगम क्षेत्रों में पहले से संचालित अथवा प्रस्तावित एबीसी सेंटरों के साथ ही डॉग शेल्टर होम विकसित किए जाएंगे। इसके लिए प्रत्येक नगर निगम को निर्देशित किया गया है कि वह उपयुक्त भूमि उपलब्ध कराए और आवश्यक प्रशासनिक औपचारिकताओं को शीघ्र पूर्ण करे। शासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि यह पूरी प्रक्रिया सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइंस व पशु कल्याण से जुड़े मानकों के अनुरूप की जा रही है। योगी सरकार ने डॉग शेल्टर होम के लिए अलग से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के निर्देश दिए हैं। प्रति शेल्टर होम 470 लाख से 531 लाख रुपये तक लागत आएगी। डीपीआर में शेल्टर होम की क्षमता, इन्फ्रास्ट्रक्चर, पशु चिकित्सा सुविधाएं, भोजन, स्वच्छता, सुरक्षा व्यवस्था और प्रशिक्षित स्टाफ की तैनाती जैसे सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया गया है। शासन स्तर पर इन डीपीआर को सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान कर दी गई है और अब सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुरूप अगले चरण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। प्रयागराज नगर निगम क्षेत्र में ग्राम मऊर उपरहट, तहसील सोरांव में डॉग शेल्टर होम के लिए भूमि चिह्नित कर ली गई है। लखनऊ नगर निगम में भूमि की उपलब्धता को लेकर कार्यकारिणी बोर्ड से प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका है। जनपद मुख्यालयों पर भी एबीसी सेंटर एवं शेल्टर होम की स्थापना को लेकर तेजी से कार्यवाई की जा रही है। ललितपुर में 12.182 हेक्टेयर, हरदोई में 0.2 हेक्टेयर, बुलंदशहर में 2000 वर्ग मीटर और फतेहपुर में 0.769 हेक्टेयर भूमि एबीसी सेंटर एवं डॉग शेल्टर होम के लिए चिह्नित कर ली गई है।

सीमाओं के साथ संस्कृति की रक्षा भी जरूरी: राजनाथ

शाह टाइम्स ब्यूरो

हरिद्वार। तीर्थनगरी हरिद्वार के सप्तऋषि क्षेत्र स्थित भारत माता मंदिर परिसर में ब्रह्मलीन गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज की समाधि मंदिर मूर्ति स्थापना के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय भव्य समारोह का शुक्रवार को विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर समाधि मंदिर एवं प्रतिमा का विधिवत अनावरण किया गया।

समारोह के समापन अवसर पर केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक तथा जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरि महाराज सहित अनेक संत-महात्मा एवं गणमान्य अतिथियों ने गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज के समाधि स्थल पर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

तीन दिवसीय इस भव्य आयोजन में देशभर से

■ आधुनिकता और संस्कृति एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक : राजनाथ, ब्रह्मलीन गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज की समाधि मंदिर मूर्ति स्थापना
■ समारोह में शामिल हुए रक्षा मत्री, केंद्रीय मंत्री खट्टर, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरि महाराज व हरिद्वार सांसद रहे मौजूद

संत-महात्मा, धर्मगुरु, सामाजिक कार्यकर्ता एवं राजनीतिक नेतृत्व उपस्थित रहा। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्र चेतना, सनातन संस्कृति, गुरु-शिष्य परंपरा तथा मानव सेवा जैसे विषयों पर व्यापक विचार-विमर्श हुआ। केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गंगा तट पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि इस पावन अवसर पर उपस्थित होना उनके लिए सौभाग्य का विषय है। उन्होंने मां गंगा को नमन करते हुए ऋषि-मुनियों की स्मृतियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि भले ही आज हमारे बीच शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हैं, लेकिन उनकी साधना, विचार और जीवन दर्शन आज भी समाज को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा उनके जीवन मूल्यों और विचारधारा को पुनः जागृत करने का प्रतीक है। रक्षा मंत्री ने कहा कि हरिद्वार केवल एक तीर्थस्थल नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है। यहीं से भारतीय संस्कृति की अखंड धारा प्रवाहित होती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की रक्षा केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी सांस्कृतिक जड़ों की सुरक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। यदि संस्कृति कमजोर होती है तो राष्ट्र भी कमजोर हो जाता है। उन्होंने सनातन संस्कृति, अद्वैत वेदांत, भक्ति परंपरा और गुरु-शिष्य संवाद को भारत की आत्मा बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिकता और संस्कृति एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। तकनीकी ज्ञान के साथ संस्कार जुड़ जाएं तो राष्ट्र को कोई भी कमजोर नहीं कर सकता। उन्होंने युवाओं से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान करते हुए देश की अखंडता, संप्रभुता और गौरव की रक्षा के लिए सामूहिक संकल्प लेने का संदेश दिया। कार्यक्रम में जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरि महाराज, कार्ष्णि पीठाधीश्वर स्वामी गुरु शरणानंद महाराज, उप मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश बृजेश पाठक, हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत, मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूरी भूषण, कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', विधायक प्रेमचंद अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में साधु-संत, जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे।

स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज ने एक विशिष्ट जीवन दर्शन प्रस्तुत किया: धामी

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देवभूमि उत्तराखंड में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज ने आध्यात्मिक साधना को समाज सेवा से जोड़कर एक विशिष्ट जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। भारत माता मंदिर की स्थापना के माध्यम से उन्होंने राष्ट्र प्रेम और सांस्कृतिक गौरव को मूर्त रूप दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की सनातन संस्कृति और विरासत को वैश्विक पहचान मिल रही है तथा उत्तराखंड विकास और विरासत के संतुलन के साथ आगे बढ़ रहा है।

सनातन परंपरा के सशक्त ध्वजवाहक थे स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि: योगी आदित्यनाथ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि सनातन परंपरा के सशक्त ध्वजवाहक थे। करुणा, मैत्री और राष्ट्रभक्ति उनके जीवन के मूल मूल्य थे। उन्होंने भारत माता मंदिर को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताते हुए कहा कि यह मंदिर जाति, क्षेत्र और भाषा की सीमाओं से ऊपर उठकर संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधता है।

मॉल में देखी फिल्म और किए राष्ट्रपति आशियाने के 'दीदार'

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। देहरादून जिला प्रशासन की संवेदनशील पहल ने राजकीय महिला कल्याण एवं पुनर्वास केंद्र (नारी निकेतन) और बालिका निकेतन की महिलाओं व बालिकाओं के चेहरों पर मुस्कान बिखेर दी।

जिलाधिकारी सविन बंसल के मार्गदर्शन में आयोजित 'विशेष एक्सपोजर विजिट' के जरिए इन्हें न केवल मनोरंजन, बल्कि समाज की मुख्यधारा से जुड़ने का आत्मविश्वास भी मिला।नारी निकेतन की महिलाओं को क्रॉसरोड मॉल में हालिया रिलीज देशभक्ति फिल्म 'बॉर्डर-2' दिखाई गई। फिल्म के साथ-साथ उन्होंने मॉल के विभिन्न प्रतिष्ठानों का भ्रमण किया और स्थानीय रेस्टोरेंट में दोपहर के स्नेहपूर्ण भोजन का आनंद लिया।

वहीं, बालिका निकेतन की बच्चियों को सिल्वर सिटी और पैसिफिक मॉल के भ्रमण के साथ-साथ राजपुर रोड स्थित राष्ट्रपति निकेतन की ऐतिहासिक विरासत से रूबरू कराया गया।

■ जिलाधिकारी सविन बंसल की अनूठी पहल
■ नारी निकेतन व बालिका निकेतन की बालिकाओं को कराया एक्सपोजर विजिट

बालिकाओं के लिए यह दिन शैक्षिक और व्यावहारिक ज्ञान के लिहाज से बेहद खास रहा।

जिलाधिकारी सविन बंसल ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य केवल भ्रमण नहीं, बल्कि इन महिलाओं और बालिकाओं को मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से सशक्त बनाना है।

उन्होंने कहा, ष्यदि इन्हें सम्मान और स्नेह मिले, तो इनका पुनर्वास अधिक प्रभावी और स्थायी हो सकता है।

प्रशासन भविष्य में भी ऐसे प्रयास जारी रखेगा।इस दौरान जिला प्रोबेशन अधिकारी मीना बिष्ट, अधीक्षिका सोनल राणा सहित अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

धामी व योगी ने किया इंटर कॉलेज के भवन का लोकार्पण

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून /यमकेश्वर। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को राजकीय इंटर कॉलेज यमकेश्वर के नवनिर्मित दो मंजिला भवन का भव्य उद्घाटन किया। इस अवसर पर दोनों मुख्यमंत्रियों ने प्राचीन शिव मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की।मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार पाना नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनाना है। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार ने बीते 4 वर्षों में 28 हजार युवाओं को सरकारी नौकरी दी है। उन्होंने सीएम योगी को सुरक्षा और सुशासन का प्रेरणास्रोत बताते हुए कहा कि इसी मिट्टी में शिक्षा पाकर आज वे देश का नेतृत्व कर रहे हैं।कार्यक्रम के

दौरान दोनों मुख्यमंत्रियों ने विद्यालय के होनहार छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। इस दौरान जिलाधिकारी स्वाति एस. भदौरिया और एसएसपी सर्वेश पंवार सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

पलायन रोकने में शिक्षा की अहम भूमिका: योगी

सीएम योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर जोर देते हुए कहा कि भौतिक विकास मात्र एक साधन है, असली लक्ष्य संस्कारयुक्त शिक्षा है। उन्होंने कहा कि आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से गांवों का कायाकल्प होगा, जिससे पलायन पर अंकुश लगेगा। उन्होंने शिक्षकों से पठन-पाठन की गुणवत्ता को उच्चस्तरीय बनाए रखने का आह्वान किया।वही त्रिवेंद्र सिंह रावत (सांसद) ने बेहतर भविष्य के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर बल दिया। कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने विद्यालय के प्रांतीयकरण की प्रक्रिया पर कार्यवाही का आश्वासन दिया। रेनू बिष्ट (विधायक) ने विद्यालय में विज्ञान संकाय शुरू करने और प्रांतीयकरण की मांग उठाई।

स्कूली परीक्षा चुनौती नहीं, बल्कि परिपक्व होने का एक पड़ाव: सीएम

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री ने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आज पूरा देश प्रधानमंत्री के परीक्षा पे चर्चा के नौवें संस्करण से जुड़ा है। यह आयोजन अब केवल संवाद नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय आंदोलन बन चुका है। प्रधानमंत्री का संदेश हमें यह सिखाता है कि परीक्षा जीवन की एक कड़ी हो सकती है, लेकिन सम्पूर्ण जीवन नहीं।

मुख्यमंत्री ने अपने स्कूली जीवन के अनुभव साझा करते हुए कहा कि स्कूल का समय अमूल्य होता है, जो दोबारा लौटकर नहीं आता। इसलिए विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ खेल और अन्य गतिविधियों में भी निरंतर प्रतिभाग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि परीक्षा एक अवसर है, जिसमें छात्र एक योद्धा की तरह पूरे

आत्मविश्वास, धैर्य और शांति के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना ही काबिलियत नहीं, जीवन में और भी अनेक लक्ष्य होते हैं।

मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों से लक्ष्य तय कर प्राथमिकताओं के साथ आगे बढ़ने तथा परीक्षा के दबाव से मुक्त रहकर सकारात्मक सोच के साथ सफलता प्राप्त करने का आह्वान किया। साथ ही अभिभावकों से आग्रह किया कि वे बच्चों पर अनावश्यक दबाव न डालें और उनकी तुलना दूसरों से न करें।

संदर्भित है कि परीक्षा पे चर्चा

■ परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के 9वें संस्करण में शामिल हुए मुख्यमंत्री धामी, परीक्षा पर चर्चा अब राष्ट्रीय आंदोलन
■ मुख्यमंत्री ने नेशविला रोड स्थित सेंट एंग्नेस स्कूल में प्रधानमंत्री के 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में किया प्रतिभाग

2026 के अंतर्गत देशभर में चार करोड़ से अधिक विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों ने पंजीकरण किया है, जिससे पूर्व का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड भी टूटने जा रहा है।

उत्तराखंड राज्य से इस वर्ष लगभग 7 लाख विद्यार्थी, 53 हजार से अधिक शिक्षक एवं 14 हजार से अधिक अभिभावक जुड़े हैं, जबकि गत वर्ष यह संख्या 2 लाख 98 हजार विद्यार्थियों तक सीमित थी।

राज्य के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए 10 प्रेरक वीडियो में से एक वीडियो राष्ट्रीय स्तर पर चयनित हुआ है, जो राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पाला कुराली, विकासखंड जखोली, जनपद रुद्रप्रयाग के छात्र रोहन सिंह राणा द्वारा तैयार किया गया है। रोहन सिंह राणा को प्रधानमंत्री जी के कार्यक्रम में दिल्ली आमंत्रित किया गया है, जो पूरे प्रदेश के लिए गर्व की बात है।

कार्यक्रम के दौरान महानिदेशक शिक्षा दीप्ति सिंह, निदेशक माध्यमिक शिक्षा डॉ. मुकुल कुमार सती, शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में स्कूली छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

भूस्खलन पूर्वानुमान प्रणाली को सशक्त बनाने पर मंथन

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। उत्तराखण्ड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र द्वारा हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में आपदा-सक्षम विकास विषय पर आयोजित पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुक्रवार को सफलतापूर्वक समापन हुआ। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 02 से 06 फरवरी, तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण एवं वित्तीय प्रशासन अनुसंधान संस्थान, सुद्धोवाला, देहरादून में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन यूएलएमएमसी द्वारा विश्व बैंक तथा नार्वेयन जियो टेक्निकल इंस्टीट्यूट के सहयोग से किया गया।

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान देश-विदेश के विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों ने उत्तराखण्ड में भूस्खलन प्रबंधन से जुड़े विभिन्न विषयों एवं आधुनिक तकनीकों पर विचार-विमर्श किया। सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से उत्तराखण्ड एवं संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र में आपदा-सक्षम एवं जोखिम-संवेदनशील विकास को आगे बढ़ाने की दिशा में एक सशक्त आधार तैयार हुआ। समापन के अवसर पर विश्व बैंक पोषित यू-प्रिपेयर परियोजना के निदेशक श्री आनंद स्वरूप ने

■ यूएलएमएमसी द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

प्रतिभागियों को सम्मानित किया।

प्रशिक्षण में इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया गया कि उत्तराखण्ड जैसे भूस्खलन-संवेदनशील हिमालयी राज्यों में भूस्खलन पूर्वानुमान प्रणाली, प्रारंभिक चेतावनी तंत्र तथा आधुनिक भू-तकनीकी जांच प्रयोगशाला की स्थापना आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन वैज्ञानिक अवसंरचनाओं के माध्यम से भूस्खलन जोखिमों की पूर्व पहचान, समयबद्ध चेतावनी तथा साक्ष्य-आधारित निर्णय-निर्माण को सुदृढ़ किया जा सकता है। विभिन्न सत्रों के दौरान यह बताया गया कि भूस्खलन पूर्वानुमान के लिए वर्षा-आधारित थ्रेशहोल्ड मॉडल, ढाल स्थिरता विश्लेषण, भू-वैज्ञानिक एवं भू-आकृतिक मानकों तथा संख्यात्मक मॉडलिंग का प्रभावी उपयोग किया जाना आवश्यक है। दीर्घकालिक एवं रियल-टाइम डेटा के एकीकरण से भूस्खलन आशंका एवं संवेदनशीलता मानचित्रों को अधिक सटीक बनाया जा सकता है, जिससे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में समय रहते एहतियाती कदम उठाए जा सकें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन दिवस को यूएलएमएमसी दिवस के रूप में समर्पित किया गया। कार्यक्रम के अंत में यूएलएमएमसी द्वारा अपने वर्तमान दायित्वों, संगठनात्मक संरचना, प्रमुख उपलब्धियों एवं भावी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया तथा संस्थागत मजबूती, वित्तीय मॉडल एवं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग की संभावनाओं पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। समापन के अवसर पर विश्व बैंक पोषित यू-प्रिपेयर परियोजना के निदेशक श्री आनंद स्वरूप, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक डॉ. शांतनु सरकार, श्री हाकोन हेयर्डाल, डॉ. जीन-सेबास्टियन लह्यूरू, सुश्री हाइडी हेफ्रे, डॉ. माल्टे फोगे, डॉ. स्पर्शा नागुला तथा डॉ. डोमिनिक लैंग आदि देसी-विदेशी वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

बजट की बारीकियों को समझेंगे देश के युवा

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के माय भारत प्लेटफॉर्म के माध्यम से युवाओं को देश की अर्थव्यवस्था और विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए 'माय भारत बजट क्वेस्ट-2026' का आगाज हो गया है। इस राष्ट्रीय पहल का मुख्य उद्देश्य युवाओं को केंद्रीय बजट की बारीकियों से अवगत कराना और राष्ट्रीय आर्थिक विमर्श में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना है।युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की उप निदेशक मोनिका नांदल ने बताया कि इस प्रतियोगिता का पहला चरण एक ऑनलाइन क्विज होगा।

क्विज के बाद प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश से चयनित विजेताओं को 17 फरवरी से 3 मार्च के बीच निबंध लेखन प्रतियोगिता में शामिल होने का अवसर मिलेगा।12 मार्च के बाद राज्य स्तर के विजेताओं को वर्चुअल माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ सीधे संवाद करने का सुनहरा अवसर मिलेगा।

आवास और शहरी विकास विभाग में सुधार पर केंद्र से 264 करोड़ की प्रोत्साहन राशि मंजूर

■ मुख्यमंत्री धामी के नेतृत्व वाले गुड गवर्नेंस मॉडल को केंद्र सरकार ने फिर सराहा

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में शहरी विकास और आवास विभाग के स्तर से लागू किए गए विभिन्न सुधारों के लिए केंद्र सरकार ने उत्तराखंड को 264.5 करोड़ की प्रोत्साहन राशि स्वीकृत की है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इसके लिए केंद्र सरकार का आभार व्यक्त किया है।

उत्तराखंड सरकार केंद्र सरकार के सभी दिशा निर्देशों को पूरी निष्ठा के साथ अमल में लाने का प्रयास कर रही है। इसी क्रम में आवास और शहरी विकास विभाग में किए गए रिफार्म पर 264.5 करोड़ रुपए की प्रोत्साहन राशि स्वीकृत हुई है, इससे पहले खनन क्षेत्र में किए गए सुधारों के लिए भी केंद्र सरकार से 200 करोड़ रुपए की प्रोत्साहन राशि मिल चुकी है। उत्तराखंड गुड गवर्नेंस का एक आदर्श मॉडल बनकर सामने आया है।

पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री उत्तराखंड'

केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय ने राज्यों को शहरी विकास और आवास विभाग से संबंधित विभिन्न नीतिगत सुधारों को लागू करने को कहा था। इन सुधारों को लागू करने के क्रम में मंत्रालय ने उत्तराखंड को स्पेशल असिस्टेंस टू स्टेट्स फॉर कैपिटल इनवेस्टमेंट 2025-26 के क्रम में कुल 264.5 करोड़ की प्रोत्साहन राशि स्वीकृत की है। इसमें शहरी विकास विभाग को जीआईएस आधारित यूटिलिटी मैपिंग के लिए 03 करोड़, सरकारी जमीनों और भवनों की मैपिंग के लिए 6.5 करोड व निकायों के स्तर पर आय के स्रोत बढ़ाने के लिए 10 करोड़ की प्रोत्साहन राशि जारी की गई है।

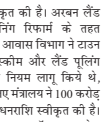

आवास विभाग के प्रयास सफल: मंत्रालय ने सबसे अधिक प्रोत्साहन राशि आवास विभाग के अधीन लागू किए गए सुधारों के लिए स्वीकृत की है। अरबन लैंड एंड प्लानिंग रिफार्म के तहत उत्तराखंड आवास विभाग ने टाउन प्लानिंग स्कीम और लैंड पूलिंग स्कीम के नियम लागू किये थे, जिसके लिए मंत्रालय ने 100 करोड़ रुपए की धनराशि स्वीकृत की है। सचिव आवास डॉ आर राजेश कुमार ने कहा कि आवास विभाग मुख्यमंत्री के नेतृत्व में, उत्तराखंड के हर नागरिक को आवास उपलबध कराने के साथ, उत्तराखंड को देश के अग्रणी राज्यों मे बनाने लिए प्रतिबद्धत है।

बांस आधारित उत्पादों को प्रदेश में किसानों से जोड़ा जाएगा: जोशी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। प्रदेश के कृषि मंत्री गणेश जोशी से आज उनके शासकीय आवास पर हाउस ऑफ स्वाशा ब्रांड (निजी संस्था) की सह-संस्थापक स्वाति खंडूरी डिमरी ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर स्वाति खंडूरी डिमरी ने कृषि मंत्री गणेश जोशी को हाउस ऑफ स्वाशा ब्रांड के अंतर्गत बांस से निर्मित परिधान भेंट किए।

भेंट के दौरान स्वाति खंडूरी डिमरी ने हाउस ऑफ स्वाशा द्वारा किए जा रहे सस्टेनेबल एवं इको-फ्रेंडली फैशन के प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ब्रांड 100 प्रतिशत प्राकृतिक एवं पर्यावरण अनुकूल सामग्री का उपयोग करते हुए नैतिक उत्पादन और स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहन देने के लिए कार्य कर रहा है। ब्रांड की नई पेशकशों में बांस रेंज के क्लासिक फिट टॉप्स और बांस से बने मोजे, साथ ही प्रीमियम ऑर्गेनिक कॉटन पुरुष कलेक्शन शामिल हैं। ये सभी परिधान 100 फीसदी ऑर्गेनिक और प्राकृतिक सामग्री से तैयार किए गए हैं, जो अधिकतम आराम के साथ पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव सुनिश्चित करते हैं।

कृषि मंत्री जोशी ने हाउस ऑफ स्वाशा की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि बांस आधारित उत्पादों को प्रदेश में किसानों से जोड़ा जाएगा, ताकि उनकी आय में वृद्धि हो सके। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भी बांस से बने उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए

■ कृषि मंत्री जोशी से हाउस ऑफ स्वाशा की सह-संस्थापक ने की भेंट, बांस से निर्मित परिधान किए भेंट

विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि बांस उत्पादन, उसके बहुउपयोगी लाभों तथा सस्टेनेबल उद्योगों को प्रोत्साहित एवं बढ़ावा देने के लिए भी बांस आधारित उत्पादों का प्रयोग राज्य में भी किया जाएगा, जिससे किसानों को प्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलेगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

उत्तराखंड में भी शुरू होगी सहकारिता आधारित भारत टैक्सी सेवा: डॉ. रावत

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। उत्तराखंड में सहकारिता आंदोलन को एक नई और सशक्त दिशा देते हुए राज्य में शीघ्र ही सहकारिता आधारित टैक्सी सेवा की शुरुआत की जाएगी। यह जानकारी उत्तराखंड के सहकारिता मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने दी। उन्होंने बताया कि यह पहल केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय की 'भारत टैक्सी' सेवा से प्रेरित है, जिसका शुभारंभ गुरुवार को नई दिल्ली में केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा किया गया।

केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सहकारिता के तहत नई पहल करते हुये 'भारत टैक्सी' योजना का शुभारंभ किया, जिसमें टैक्सी चालकों को केवल चालक नहीं बल्कि वाहन और सेवा का वास्तविक स्वामी बनाया गया है। इस सहकारी मॉडल का उद्देश्य बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों की तरह कमीशन आधारित पूंजी निर्माण नहीं, बल्कि

■ ड्राइवर को मिलेगा पूर्ण स्वामित्व, सुरक्षा और सम्मान

सारथियों को उनके मुनाफे का अधिकार देकर उनकी आय, सुरक्षा और आत्मसम्मान को सुदृढ़ करना है।

उत्तराखंड में सहकार टैक्सी की अपार संभावनाएं: सूबे के सहकारिता मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कहा कि उत्तराखंड देवभूमि होने के साथ-साथ अब तेजी से पर्यटन, तीर्थाटन और वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में भी उभर रहा है। राज्य की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक आस्था और शांत वातावरण के कारण देश-विदेश से बड़ी संख्या में लोग यहां पहुंच रहे हैं। उन्होंने बताया किचारधाम यात्रा में प्रतिवर्ष 30 लाख से अधिक श्रद्धालु उत्तराखंड आते हैं, जबकि पिछले वर्ष एक आंकड़े के अनुसार 4 करोड़ से अधिक श्रद्धालु और पर्यटक राज्य में पहुंचे, जो अब तक का रिकॉर्ड माना जा रहा है।

इन पर्यटकों में बड़ी संख्या में विदेशी नागरिक भी शामिल रहे। डॉ. रावत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उत्तराखंड के धार्मिक, पर्यटन और सांस्कृतिक स्थलों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच पर लगातार प्रमोट किया जा रहा है, जिससे राज्य में तीर्थाटन, पर्यटन और डेस्टिनेशन वेडिंग के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हो रही है। ऐसे परिदृश्य में सहकारिता आधारित टैक्सी सेवा उत्तराखंड के लिए आर्थिक, सामाजिक और रोजगार सृजन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगी।

शीघ्र ही विस्तृत रोडमैप तैयार कर सहकार टैक्सी योजना को धरातल पर उतारा जाएगा

सहकारिता मंत्री ने स्पष्ट किया कि प्रस्तावित सहकार टैक्सी योजना के अंतर्गत सारथी भाई-बहनों के लिए स्वामित्व, सुरक्षा, सामाजिक कवच और सम्मान को केंद्र में रखकर कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि "सहकारिता आधारित टैक्सी योजना को लेकर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए जा चुके हैं। शीघ्र ही इसका विस्तृत रोडमैप तैयार कर उत्तराखंड में सहकार टैक्सी योजना को धरातल पर उतारा जाएगा।" डॉ. रावत ने यह भी बताया कि इस योजना को चार पहिया, तीन पहिया और दो पहिया टैक्सी वाहनों के साथ जोड़ा जाएगा, जिससे शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ पर्वतीय और ग्रामीण इलाकों में भी स्थानीय युवाओं और चालकों को सीधा लाभ मिलेगा। सहकारिता आधारित टैक्सी सेवा से न केवल टैक्सी चालकों को आर्थिक सशक्तिकरण मिलेगा, बल्कि यह योजना उत्तराखंड में बढ़ते पर्यटन, चारधाम यात्रा व वेडिंग डेस्टिनेशन गतिविधियों को भी संगठित व आत्मनिर्भर सहकारी ढांचे से जोड़ने में अहम भूमिका निभाएगी।

जखोली ब्लॉक में गुलदारों का तांडव

कुनियाली में एक साथ तीन गुलदार, सड़क किनारे बैल का शिकार, दहशत में गांव

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जिले में मानव-वन्यजीव संघर्ष अब खतरनाक और जानलेवा मोड़ पर पहुंच चुका है। जखोली ब्लॉक के कुनियाली, पांजना गांव में गुरूवार रात एक साथ तीन गुलदारों की मौजूदगी ने पूरे क्षेत्र को दहशत में डाल दिया। ग्रामीणों के अनुसार गुलदारों ने एक निराश्रित बैल का शिकार किया और सड़क किनारे उसे खाते हुए देखे गए।

रात के समय गुजर रहे वाहनों में बैठे लोगों ने इस खौफनाक मंजर के वीडियो और तस्वीरें कैद की, जो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं। घटना के बाद कुनियाली, पांजना समेत आसपास के कई गांवों में लोग रात में घरों से बाहर निकलने से डर रहे हैं।

■ मानव वन्य जीव संघर्ष क्षेत्र बना जखोली ब्लॉक

जखोली ब्लॉक इन दिनों किसी युद्ध क्षेत्र से कम नहीं दिख रहा, जहां ग्रामीण और गुलदारों के बीच संघर्ष लगातार गहराता जा रहा है। कुनियाली, पांजना में एक साथ तीन गुलदारों का दिखना सिर्फ ग्रामीणों के लिए ही नहीं, बल्कि वन्यजीव विशेषज्ञों के लिए भी खतरे की घंटी है। विशेषज्ञ बताते हैं कि एक नर गुलदार को औसतन 20 से 30 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र की आवश्यकता होती है। लेकिन जखोली की दक्षिणी रेंज में हालात इसके ठीक उलट हैं। खरियाल, देवल, मयाली, लम्बवाड़ और कुनियाली जैसे गांव महज 1-2 किलोमीटर की दूरी पर बसे हैं, जबकि इसी क्षेत्र में गुलदारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

इकोलॉजिकल कैरिंग कैपेसिटी पूरी तरह ध्वस्त

वर्ष 2024-25 के दौरान इसी क्षेत्र में मानव पर हमलों की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। जब किसी क्षेत्र में गुलदारों की संख्या उसकी प्राकृतिक इकोलॉजिकल कैरिंग कैपेसिटी से अधिक हो जाती है, तो गुलदारों के बीच आपसी संघर्ष बढ़ता है और कमजोर या युवा गुलदार आबादी वाले इलाकों की ओर रुख करने लगते हैं। कुनियाली में तीन गुलदारों का एक साथ दिखना इस बात का सीधा संकेत है कि जंगलों में उनके लिए जगह कम पड़ रही है और अब गांव उनकी शिकार स्थली बनते जा रहे हैं।

डांडा गांव की घटना ने बढ़ाया खौफ: कुनियाली गांव से महज दो किलोमीटर दूर डांडा गांव में बीते वर्ष 30 मई को गुलदार ने रूपा देवी को मौत के घाट उतार दिया था। यह घटना आज भी ग्रामीणों के जेहन में ताजा है। ऐसे में कुनियाली में तीन गुलदारों की मौजूदगी ने लोगों के भीतर पुराने जख्म फिर हरे कर दिए हैं।

सवालों के घेरे में वन विभाग: ग्रामीणों का कहना है कि बार-बार चेतावनी के बावजूद स्थायी समाधान नहीं निकाला जा रहा। न तो गुलदारों की सही गणना हो रही है और न ही प्रभावित क्षेत्रों में ठोस सुरक्षा व्यवस्था। अब सवाल यह है कि क्या प्रशासन किसी और बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है? क्या जखोली ब्लॉक अगला "हाई रिस्क जोन" घोषित होगा?

वन विभाग की टीमें क्षेत्र में दे रही गश्त: प्रभागीय वनाधिकारी रजत सुमन ने कहा कि जखोली क्षेत्र में दो से तीन गुलदार एक जगह पर देखे जाने की तस्वीरें सामने आई हैं। घटना के बाद से लगातार क्षेत्र में गश्त बढ़ा दी गई हैं और गुलदार को पकड़ने को लेकर टीमें जुटी हुई हैं।

प्लेसमेंट ड्राइव के लिए 202 अभ्यर्थी शॉर्टलिस्ट

श्रीनगर। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि के विश्व. विद्यालय प्लेसमेंट एवं काउंसलिंग सेल द्वारा आयोजित अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की दो दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव सम्पन्न हुआ। प्लेसमेंट ड्राइव में 350 छात्र-छात्राओं के पंजीकरण में से 202 अभ्यर्थियों को शॉर्टलिस्ट किया गया।

प्लेसमेंट ड्राइव के तहत एमसीए विभाग में आयोजित ऑनलाइन परीक्षा में 92 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस मौके पर गढ़वाल विवि के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश सिंह ने छात्र-छात्राओं से प्लेसमेंट के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। उन्होने छात्र-छात्राएँ से लेसमेंट सेल द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे अवसरों का लाभ उठाने का कहा। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की ओर से पहुंचे सुरेन्द्र रावत, गौरव गुसाईं ने बताया कि परीक्षा के परिणाम 4 से 5 दिनों में घोषित किया जाएगा।

ट्रेंचिंग ग्राउंड में बना वेस्ट टू वंडर पार्क का लोकार्पण आज

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर। नगर निगम श्रीनगर क्षेत्रांर्गत नर्सरी रोड़ में स्थित अस्थायी ट्रेंचिंग ग्राउंड में रजत जयंती पार्क (वेस्ट टू वंडर पार्क) और आधुनिक पार्किंग विकसित कि गई है। जिसका उद्घाटन शनिवार को किया जायेगा।

इस मौके पर कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत मौजूद रहेंगे। बताते चले कि महापौर आरती भंडारी ने पदभार ग्रहण करते ही वर्षों से शहरवासियों के लिए परेशानी बने इस कूड़े के ढेर को हटाने और बदबू से निजात दिलाने का संकल्प लिया था। जिसके चलते आज यह कार्य पूर्ण हो चुका है। महापौर भंडारी ने कहा कि श्रीनगर शहर को स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ बनाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। कहा कि दशकों से कूड़े के ढेर और बदबू से जूझ रहे क्षेत्र को आज एक सुंदर पार्क और उपयोगी पार्किंग के रूप

■ नगर निगम के विभिन्न विकास कार्यों का होगा लोकार्पण व शिलान्यास

में विकसित किया गया है। यह केवल एक पार्क नहीं, बल्कि शहर के लिए सकारात्मक बदलाव और विकास की सोच का प्रतीक है। पार्क के उद्घाटन समारोह में सुप्रसिद्ध लोकगायक रोहित चौहान कि सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से कार्यक्रम को विशेष बनाएंगे। इस अवसर पर महादेव पार्किंग एवं रजत जयंती पार्किंग का लोकार्पण, वाल्मीकि चौक का भूमि पूजन, इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन का शिलान्यास, माँ धारी देवी ग्लो-साइन बोर्ड का उद्घाटन, श्वान पशु बंध्याकरण हेतु एबीसी कैंपस का लोकार्पण तथा डांग सिन्द्रिगाड से ऐठाना एवं ग्लास हाउस रोड तक विद्युत स्तंभों का लोकार्पण किया जायेगा।

डीएम ने दिए योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने के निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

पौड़ी। स्वरोजगार परक योजनाओं के तहत गठित जिला प्राधिकृत समिति, जिला स्तरीय समीक्षा समिति तथा जिला स्वरोजगार प्रोत्साहन एवं अनुश्रवण समिति की संयुक्त बैठक जिलाधिकारी स्वाति एस. भदौरिया की अध्यक्षता में कलक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई।

बैठक में जिलाधिकारी ने सभी विभागों को योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने और समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

जिलाधिकारी ने जिला स्तरीय समीक्षा समिति के अंतर्गत सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिये कि लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति की अद्यतन सूचना प्रस्तुत की जाए तथा विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों का फॉलोअप करते हुए एक

■ जिलाधिकारी की अध्यक्षता में संयुक्त बैठक सम्पन्न

पखवाड़े के भीतर निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। डेयरी विभाग को गंगा गाय महिला डेयरी विकास योजना के अंतर्गत बैंक स्तर पर लंबित आवेदनों को एक सप्ताह में निस्तारित कराने तथा दुग्ध मूल्य प्रोत्साहन योजना के लक्ष्यों को समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिये गये। कृषि विभाग को कृषि यंत्रीकरण के 40 लक्ष्यों को माह के अंत तक पूरा करने के निर्देश दिये गये।

जिला प्राधिकृत समिति की बैठक में उत्तराखण्ड उद्यम एकल खिड़की सुगमता एवं अनुज्ञापन के तहत प्राप्त 10 आवेदनों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा उनके शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिये गये।

केदारनाथ यात्रा: हाईवे पर युद्धस्तर का कार्य जारी

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। आगामी केदारनाथ धाम यात्रा को सुरक्षित, निर्बाध और सुगम बनाने के लिए जिला प्रशासन और राष्ट्रीय राजमार्ग विभाग युद्धस्तर पर जुट गया है। जिलाधिकारी प्रतीक जैन के मार्गदर्शन में एनएच 107 और एनएच सात पर भूस्खलन और सिंकिंग जोन और अस्थिर ढलानों से प्रभावित स्थलों का वैज्ञानिक उपचार किया जा रहा है, ताकि यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 107 पर मेदनपुर एवं कुण्ड बैराज में लैंडस्लाइड ट्रीटमेंट का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। वहीं बांसवाड़ा के समीप भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में सुधारात्मक कार्य भी तीव्र गति से प्रगति पर है। कुण्ड-गुप्तकाशी मार्ग पर विगत वर्ष की भारी वर्षा से क्षतिग्रस्त लगभग 500 मीटर सड़क

■ यात्रियों की सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक तकनीक से संवर रहे मार्ग

को ठेकेदार ने अपने व्यय पर पुन: एंकरिंग एवं आरसीसी पेवमेंट के माध्यम से दुरुस्त कर दिया है।

विद्याधाम एवं देवीधार सिंकिंग जोन में कार्य यात्रा से पूर्व पूर्ण किए जाने हैं। खाट, कालाढूंगी-1 एवं कालाढूंगी-2 में पेवमेंट सहित सभी कार्य पूरे कर लिए गए हैं। रामपुर स्थल पर करीब 40 प्रतिशत से अधिक कार्य पूर्ण हो चुका है, जिसे यात्रा से पहले पूरा कर लिया जाएगा। मुनकुटिया में भूस्खलन उपचार कार्य भी निरंतर प्रगति पर है।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 107 के कोरखी 1 एवं खुमेरा स्थलों पर उपचार कार्य जारी है जिन्हें आगामी यात्रा से पूर्व ही पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। एनएच 107 के कुण्ड-चमोली मार्ग पर चुन्नी 2 एवं मस्तुरा 2 में भी सुधारात्मक कार्य तेजी से चल रहे हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 107 पर ताला के समीप बीते वर्ष हुई सिंकिंग का उपचार गैबियन एवं अन्य संरचनाओं से करते हुए डीबीएम बीसी के माध्यम से मार्ग को पूरी तरह यातायात योग्य बना दिया गया है। वहीं, जवाड़ी बाईपास में 5-6 स्थलों पर भारी सिंकिंग के उपचार के लिए संपूर्ण लंबाई में गैबियन वॉल का निर्माण कर जीएसबी के माध्यम से यातायात संचालित किया जा रहा है, जिस पर यात्रा से पूर्व 2 सेमी पीसी कर मार्ग को और अधिक राइडेबल बनाया जाएगा। सेतु के दोनों ओर अप्रोच वॉल भी पूर्ण कर ली गई हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 107 पर 9 अन्य लोकेशनों तथा एनएच 7 के सिरोबगड़ में एक लोकेशन पर निविदा प्रक्रिया जारी है, जिन पर कार्य यात्रा उपरांत कराए जाने की योजना है।

एनएच के अधिशासी अभियंता ओमकार पांडेय ने बताया कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर नालियों के निर्माण एवं उनकी नियमित सफाई का कार्य तीव्र गति से कराया जा रहा है। साथ ही सोल्डर फिलिंग का कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया है, जिसे फरवरी माह के अंत तक पूर्ण कर लिया जाएगा। इसके अतिरिक्त जिन स्थलों पर सड़क क्षतिग्रस्त हुई है, वहां पैच मरम्मत का कार्य प्रस्तावित है, जिसे 20 फरवरी से प्रारंभ कर 20 मार्च तक पूर्ण किया जाएगा।

एक नजर .....

छात्र-छात्राओं को दी किशोर न्याय अधिनियम पॉक्सो अधिनियम, बाल अधिकारों की जानकारी

कोटद्वार/पौडी । सेंट थॉमस स्कूल, पौड़ी में बाल अधिकारों, संरक्षण एवं विधिक प्रावधानों को लेकर जनजागरुकता अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को किशोर न्याय अधिनियम, पॉक्सो अधिनियम, बाल अधिकारों तथा चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की उपयोगिता के प्रति जागरुक किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए निखिल डेविड ने किशोर न्याय अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी विद्यार्थियों को दी। वहीं प्रज्ञा नैथानी ने चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की जानकारी देते हुए कहा कि किसी भी आपात स्थिति में यह सेवा बच्चों के लिए मददगार है और तुरंत सहायता उपलब्ध कराती है। बाल कल्याण समिति की सदस्य सुनीता भट्ट ने पॉक्सो अधिनियम एवं बाल अधिकारों से जुड़ी अहम जानकारियां साझा की। उन्होंने बच्चों को सुरक्षित रहने, सतर्क रहने और किसी भी प्रकार की परेशानी की स्थिति में बिना झिझक सहायता लेने के लिए प्रेरित किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से असिस्टेंट लीगल काउंसिल विनोद कुमार ने बच्चों को उनके विधिक अधिकारों तथा कानूनी सहायता से संबंधित जानकारी दी। इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका सिस्टर सूमिनी सहित सूरज कुमार, ओम प्रकाश थपलियाल, पूजा नेगी सहित छात्रदृछात्राएं उपस्थिति रहे।

उत्तराखंड के उपभोक्ताओं को अंतर्राष्ट्रीय बीयर ब्रांड्स के लिए करना होगा और इंतजार

देहरादून। बडवाइजर, बडवाइजर मैग्नम, कोरोना और होएगार्डन जैसी लोकप्रिय अंतरराष्ट्रीय बीयर ब्रांड्स इस समय उत्तराखंड राज्य में कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। इनमें रिटेल दुकानों, बार, रेस्टोरेंट्स और हॉस्पिटैलिटी आउटलेट्स सभी शामिल हैं। वर्तमान में इन ब्रांड्स की राज्य में कोई सक्रिय बिक्री या वितरण नहीं हो रहा है। इन प्रीमियम वैश्विक ब्रांड्स की अनुपलब्धता के कारण राज्य को एक्साइज (आबकारी) राजस्व में संभावित नुकसान होने की संभावना है। यह जानकारी ऐसे समय सामने आई है जब कई उपभोक्ताओं और पर्यटकों ने विशेष रूप से पर्यटन और सामाजिक गतिविधियों के पीक सीजन के दौरान इन लोक. प्रिय ब्रांड्स को खोजने में कठिनाई की शिकायत की है। यह स्थिति राज्य-विशेष उपलब्धता से जुड़ी हुई प्रतीत होती है, जो पूर्व के व्यावसायिक समझौतों से संबंधित है और इसका किसी भी प्रकार से उत्पाद की गुणवत्ता, सुरक्षा या उपभोक्ता मांग से कोई संबंध नहीं है। राज्य के उपभोक्ता उम्मीद कर रहे हैं कि उनकी पसंदीदा अंतरराष्ट्रीय बीयर ब्रांड्स जल्द ही उत्तराखंड में फिर से उपलब्ध होंगी।

दो युवकों की संदिग्ध अवस्था में मौत

कोटद्वार । नगरनिगम कोटद्वार में दो अलग-अलग घटनाओं में दो युवकों की संदिग्धावस्था में मौत हो गई । दोनों मामलों में पुलिस ने पंचनामे की कार्रवाई के बाद पोस्टमार्टम कराकर युवकों के शव परिजनों के सुपुर्द कर दिए। चिकित्सालय कोटद्वार से प्राप्त जानकारी के अनुसार लालपुर निवासी दीपांशु रावत उम्र 19 वर्ष को गुरुवार सुबह परिजन गंभीर हालत में बेस हॉस्पिटल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूत्रों के अनुसार परीक्षा में अच्छे अंक न आने के कारण दीपांशु ने ये कदम उठाया। गुरुवार सुबह जब दीपांशु काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं आया तो परिजन कमरे में पहुंचे। दीपांशु उन्हें एक कपड़े के सहारे खिड़की पर लटका मिला। जिसके तुरंत बाद ही परिवार वाले उसे अस्पताल लेकर पहुंचे जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। वहीं दूसरे मामले में दिनेश कुमार उम्र 19 वर्ष निवासी बिजनौर, जो वर्तमान में कौड़िया में अपने भाई के साथ किराये के कमरे में रहता था, वह कमरे में पंखे के हुक पर लटका मिला।

डीएम ने ली परिवार रजिस्टरों की जांच सम्बंधी समीक्षा बैठक

चमोली। जिलाधिकारी गौरव कुमार की अध्यक्षता में शुक्रवार को जिला सभागार गोपेश्वर में परिवार रजिस्टरों की जाँच सम्बन्धी समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, बैठक में जिलाधिकारी ने बताया कि राज्य सरकार के आदेशों के अनुपालन में 2003 के पश्चात परिवार रजिस्टरों में की गयी प्रविष्टियों की जाँच वर्तमान में पूरे प्रदेश में की जा रही है। जिसके तहत जनपद चमोली के 615 ग्राम पंचायतों में भी जांच गठित समिति के द्वारा की जा रही है। जिलाधिकारी गौरव कुमार ने बताया कि परिवार रजिस्टरों की प्रविष्टियों की जांच के लिए जिला स्तर एवं विकास खण्ड स्तर पर समितियों का गठन किया गया है। जिला स्तरीय जांच कमेटी का अध्यक्ष मुख्य विकास अधिकारी को नियुक्त किया गया है जबकि विकासखण्ड स्तर की समितियों हेतु सम्बन्धित उपजिलाधिकारियों को नियुक्त किया गया है। उन्होंने बताया कि समितियों को आदेश दिये है कि 2003 के पश्चात परिवार रजिस्टर में की गयी प्रविष्टियों की जल्द जांच कर रिकॉर्ड जिलाधिकारी कार्यालय को उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करें। साथ ही उन्होंने कहा कि परिवार रजिस्टरों की जांच में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध कार्रवाई अमल में लायी जायेगी। इस दौरान बैठक में पुलिस अधीक्षक सुरजीत सिंह पंवार, मुख्य विकास अधिकारी, डा0 अभिषेक त्रिपाठी, जिला पंचायतीराज अधिकारी, रमेश चंद्र त्रिपाठी एवं ऑनलाइन के माध्यम से सभी उपजिलाधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी जुड़े रहे।

दो स्थानों पर विधिक जागरूकता शिविर होंगे आयोजित

चमोली। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जनपद में 2 बहुउद्देशीय विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, चमोली द्वारा बताया गया कि पहला शिविर 14 फरवरी, 2026 को शिव मंदिर प्रांगण, डुंग्री , तहसील थराली में प्रात: 10बजे से और दूसरा शिविर 16 फरवरी, 2026 को बस स्टेशन तहसील नन्दानगर में प्रात: 10 बजे से आयोजित किया जाएगा ।

मल्टी लेवल पार्किंग से खत्म होगा जाम का झाम

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जनपद प्रभारी सचिव आर. राजेश कुमार ने जनपद भ्रमण के दौरान मुख्यालय के मुख्य बाजार (पुनाड गदेरे) के समीप निर्माणाधीन मल्टी लेवल पार्किंग का स्थलीय निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने कार्य की भौतिक प्रगति, गुणवत्ता तथा निर्धारित मानकों के अनुरूप हो रहे निर्माण कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। प्रभारी सचिव ने कार्यदायी संस्था को निर्माण कार्य समयबद्ध रूप से पूर्ण करने तथा गुणवत्ता से किसी प्रकार का समझौता न करने तथा कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए।

■ प्रभारी सचिव ने किया निमार्णाधीन पार्किंग का स्थलीय निरीक्षण

■ सिंचाई खंड को कार्य में तेजी लाने के निर्देश

प्रभारी सचिव आर. राजेश कुमार ने कहा कि इस पार्किंग के निर्माण से न केवल स्थानीय नागरिकों को जाम की समस्या से राहत मिलेगी, बल्कि केदारनाथ धाम सहित चारधाम यात्रा पर आने वाले यात्रियों को भी सुगम यातायात सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। उन्होंने कहा कि पार्किंग निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद मुख्य बाजार क्षेत्र में यातायात व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि जनपद चारधाम यात्रा का प्रमुख पड़ाव होने के कारण यहां प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में यात्री पहुंचते हैं। पार्किंग की समुचित व्यवस्था न होने से मुख्य बाजार क्षेत्र में अक्सर जाम की स्थिति बनी रहती है, जिससे स्थानीय नागरिकों एवं यात्रियों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। इसी समस्या के समाधान को लेकर जिला प्रशासन की मांग पर शासन ने मुख्य बाजार के निकट मल्टी लेवल पार्किंग निर्माण की स्वीकृति प्रदान की।

मल्टी लेवल पार्किंग निर्माण को लेकर शासन से सात करोड़ नो लाख 74 हजार की स्वीकृति प्रदान की गई है, जिसमें से 2.84 करोड़ की धनराशि जारी की जा चुकी है। इस निर्माण कार्य की जिम्मेदारी सिंचाई खंड को सौंपी गई है। इस दौरान अधिशासी अभियंता सिंचाई खुशवंत सिंह, तहसीलदार प्रणव पांडे सहित अन्य मौजूद थे।

हेट स्पीच मामले में आरोपी दीपक बजरंगी गिरफ्तार

कोटद्वार । पिछले कुछ दिनों से जारी तनाव के बीच पुलिस ने नफरती भाषण देने में एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। घटना के दिन एक वीडियो में आपत्तिजनक टिप्पणी करते दिख रहे आरोपी दीपक बजरंगी को उसके आवास से गिरफ्तार किया है। इंस्पेक्टर प्रदीप नेगी के मुताबिक सोशल मीडिया पर एक वीडियो क प्रसा. रित हो रहा था। जिसमें दीपक बजरंगी (46) निवासी गाड़ीघाट, कोटद्वार आपत्तिजनक और भड़काऊ बयानबाजी दे रहा। वीडियो का संज्ञान लेते हुए पुलिस ने मामले की जांच शुरू।

पुलिस ने छात्राओं को सुरक्षा के प्रति किया जागरूक

श्रीनगर(शाह टाइम्स संवाददाता)। चौरास में संचालित एनएसएस कैंप में कोतवाली कीर्तिनगर पुलिस द्वारा छात्राओं को साइबर अपराध, यातायात नियमों एवं महिला सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम के दौरान पुलिस टीम ने आनलाइन ठगी, फर्जी काल और ओटीपी साझा करने से होने वाले साइबर अपराधों से बचाव के उपाय बताए। साथ ही किसी भी साइबर अपराध की स्थिति में हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करने या नजदीकी थाने में शिकायत दर्ज कराने की जानकारी दी गई। यातायात नियमों के पालन को लेकर हेलमेट पहनने, गति सीमा का पालन करने और वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने पर विशेष जोर दिया गया। इसके अलावा महिला सुरक्षा से जुड़े अपराधों, छेड़छाड़, घरेलू हिंसा एवं साइबर उत्पीड़नकी जानकारी देते हुए छात्राओं को निर्भीक होकर शिकायत करने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के अंत में आयोजित प्रश्नोत्तर सत्र में छात्राओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए।

एनआईटी उत्तराखंड में अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के भौतिकी विभाग एवं गणित विभाग के संयुक्त तत्वाधान में रिसेंट एंडवान्समेंट इन फिजिकल सांइस विषय पर तीन दिवसीय प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ हुआ। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि वीर माधो सिंह भंडारी उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. त्रिप्ता ठाकुर ने कहा कि समकालीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी चुनौतियों के समाधान में भौतिक विज्ञान की महत्वपूर्ण

■ तकनीकी चुनौतियों के समाधान में भौतिक विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका: प्रो. ठाकुर

भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल के निद. शक प्रो. करुणेश कुमार शुक्ला ने कहा कि भौतिक विज्ञान में हालिया प्रगति ने क्वांटम कंप्यूटिंग, अंतरिक्ष अन्वेषण और पदार्थ के नए चरणों की खोज में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। कहा कि 2025 में अतिच. लिक विद्युत प्रणालियों में क्वांटम टनलिंग की खोज (नोबेल पुरस्कार 2025), ग्राफीन में अद्वितीय क्वांटम चरण की खोज, और इसरो का आदित्य एल1 सौर मिशन मुख्य उपलब्धियां हैं। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय देवप्रयाग के निद. शक प्रो. पीवीबी सुब्रह्मण्यम, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलसचिव प्रो. पवन कुमार शर्मा ने आधुनिक शोध एवं नवाचार में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगि. कता और वैज्ञानिक महत्त्व को रेखांकित किया। सम्मेलन का संयोजन डॉ. धर्मेन्द्र त्रिपाठी एवं डॉ. जागृति सहारिया द्वारा किया जा रहा है। मौके पर प्लेनरी वक्ता प्रो. जियाकोमिन (यूएसए) प्रो. डॉ. नताली जर्मन, प्रो. जितेश गज्जर, स्टेलनबोश यूनिवर्सिटी, दक्षिण अफ्रीका के प्रो. ओडी माकिंदे, प्रो. सिद्धार्थ दास, प्रो. संजय कुमार पांडे, प्रो. अनिमेष, प्रो. हेमवती नंदन, प्रो. रमा भार्गव, प्रो. मुकेश कुमार शर्मा, डॉ. डीपी उनियाल, डॉ. अजीत कुमार, प्रो. कट्टा रमेश, एनआईटी के कुलसचिव हरि मौल आजाद, डॉ. जयवर्धन सहित आदि मौजूद थे।

मुंबई में काम कर रहे खजान सिंह के आकस्मिक निधन से बच्चों के भविष्य पर छाए संकट के बादल

परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़, आर्थिक मदद की दरकार

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। विकासखंड जखोली अंतर्गत ग्राम पंचायत बांसी (भरदार) निवासी 40 वर्षीय खजान सिंह रावत के आकस्मिक निधन से पूरा परिवार गहरे शोक में डूब गया है। खजान सिंह मुंबई में एक रेस्टोरेंट में काम कर परिवार का भरण-पोषण कर रहे थे। उनके निधन से घर की सारी जिम्मेदारी अचानक टूट गई है।

घर पर 75 वर्षीय वृद्ध मां कुंव. री देवी का रो-रो कर बुरा हाल है। उन्होंने बताया कि लगभग 5 वर्ष पूर्व बड़े बेटे नागेंद्र सिंह रावत (45 वर्ष) की मृत्यु और पति के निधन के बाद परिवार की पूरी जिम्मेदारी खजान सिंह पर ही थी, जो किसी

तरह परिवार को संभाले हुए थे।बड़े बेटे नागेंद्र सिंह की मृत्यु के बाद उनकी विधवा पत्नी और तीन बच्चे पहले से ही परिवार पर निर्भर थे। अब छोटे बेटे खजान सिंह के अचानक निधन से उनकी पत्नी पूजा देवी (36 वर्ष) और तीन मासूम बच्चे आरुषि (14 वर्ष), रुचि (10 वर्ष) और शौर्य (6 वर्ष) भी बेसहारा हो गए हैं। इस प्रकार एक ही परिवार में कुल सात बच्चे अपने भविष्य को लेकर असुरक्षा के साये में आ गए हैं। खजान सिंह का घर कच्चा मकान है। वे अपने तीनों बच्चों को गांव के ही सरकारी स्कूल में पढ़ा रहे थे। पत्नी पूजा देवी घर पर वृद्ध सास की सेवा के साथ-साथ खेती-बाड़ी और ध्याड़ी मजदूरी कर किसी तरह घर चला रही थीं, लेकिन अब हालात बेहद गंभीर हो चुके हैं। पूजा देवी का भी रो-रोकर बुरा हाल है।

क्षेत्र पंचायत सदस्य बांसी बिपेंद्र सिंह बिष्ट ने बताया कि परिवार की अत्यंत दयनीय आर्थिक स्थिति को देखते हुए ग्राम पंचायतवासियों, क्षेत्रवासियों और सामाजिक संगठनों से आर्थिक सहायता की अपील की जा रही है। उन्होंने कहा कि "बांसी भरदार सहायता समूह" व्हाट्सएप ग्रुप और सोशल मीडिया के माध्यम से लोग सहयोग कर रहे हैं, लेकिन परिवार को अभी और सहायता की सख्त जरूरत है। उन्होने बताया कि विधायक रुद्रप्रयाग भरत सिंह चौधरी से शासन स्तर पर पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की मांग की है।ग्रामीणों का कहना है कि यदि समय रहते सरकारी और सामाजिक सहयोग नहीं मिला, तो इस परिवार के लिए जीवन यापन और बच्चों की पढ़ाई बेहद कठिन हो जाएगी।

भटवाड़ी प्रधान संघ के अध्यक्ष रमेश नेगी व अभिषेक सचिव

भटवाड़ी / उत्तरकाशी(शाह टाइम्स संवाददता)। विकास खंड सभागार भटवाड़ी में समस्त ग्राम प्रधानों की उपस्थिति में प्रधान संगठन की नवीन कार्यकारणी का गठन किया गया श प्रधान संगठन के चुनाव पर लम्बे समय से मंथन चल रहा था इसी परिप्रेक्ष्य में शुक्रवार को विकास खंड सभागार भटवाड़ी में एक बैठक आयोजित की गयी जिसमें सर्वसम्मति से हुर्री ग्राम प्रधान रमेश नेगी को सर्व सहमति से प्रधान संगठन के अध्यक्ष चुना जबकि राकेश सेमवाल प्रधान नेताला, जयवेन्द्र सिंह राणा प्रधान सुक्की, राम नरेश प्रधान भंकोली, श्रीमती प्रिती देवी को सर्व सहमति से उपाध्यक्ष चुना गया, सतिश रावत प्रधान ओंगी, अभिषेक रौतेला प्रधान झाला सचिव, श्रीमती साधना राणा प्रधान जखोल, बुद्धि लाल ग्राम रैथल, श्रीमती मिनाक्षी प्रधान तिहार, जलमा प्रधान मल्ला महामंत्री, सैलेन्द्री चौहान प्रधान पाटा कार्यालय मंत्री, सन्दीप सिंह ग्राम प्रधान भंगेली को मिडिया संयोजक, श्रीमती सुमित्रा को सहसंयोजक चुना गया, पूरी कार्यकारिणी का गठन सर्व सहमति से किया गया। जिसको लेकर सभी ग्राम प्रधानों में नवीन कार्यकारणी को लेकर उत्साह देखने को मिला वहीं नवनियुक्त अध्यक्ष रमेश नेगी ने सर्व प्रथम सभी सम्मानित प्रधानगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया उन्होंने कहा की क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास किया जायेगा, क्षेत्र के विकास के लिये तत्पर रहेंगे, प्रधान संगठन को हर मंच पर मजबूत करने का काम करेंगे।

निविदा सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उड़ान स्वायत्त सहकारिता मनसूना में सामुदायिक उद्यम स्थापना मधुमक्खी पालन हेतु निविदाएँ आमन्त्रित की जाती है।

निविदा प्राप्त करने का स्थान एवं अन्तिम तिथि उड़ान स्वायत्त सहकारिता मनसूना विकासखण्ड-ऊखीमठ,

अन्तिम तिथि 10.02.2026

अध्यक्ष / कोषाध्यक्ष / सचिव

उड़ान स्वायत्त सहकारिता (REAP)

ग्राम - मनसूना,ऊखीमठ जनपद- रूद्रप्रयाग

परीक्षा बोझ नहीं, ज्ञान व क्षमताओं को परखने का अवसर : राज्यपाल

■ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ''परीक्षा पे चर्चा-2026'' कार्यक्रम में शामिल हुए राज्यपाल

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने शुक्रवार को ओएसिस स्कूल, रायपुर, देहरादून में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ''परीक्षा पे चर्चा-2026'' कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ''परीक्षा पे चर्चा'' न केवल छात्रों की शंकाओं का समाधान करता है, बल्कि अभिभावकों और शिक्षकों को भी सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि परीक्षा को बोझ न समझें, बल्कि इसे अपने ज्ञान और क्षमताओं को परखने का अवसर मानें। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि दूसरों से नहीं, बल्कि स्वयं से बेहतर बनने की प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए।

राज्यपाल ने विद्यार्थियों से कहा कि किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति केवल सपने देखने से नहीं होती, बल्कि स्पष्ट उद्देश्य, दृढ़ संकल्प, अनुशासन और निरंतर प्रयास से संभव होती है। इच्छाशक्ति को निरंतर कर्म से जोड़ना ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने कहा कि परीक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करने का अवसर है। प्रश्न को ठीक से समझना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जब प्रश्न स्पष्ट होता है, तभी उत्तर भी सही और सार्थक होता है।

राज्यपाल ने विद्यार्थियों से अपने कंफर्ट जोन से बाहर निकलकर चुनौतियों को स्वीकार करने का आह्वान किया और कहा कि कठिन परिश्रम से ही आत्मविश्वास का निर्माण होता है।

उन्होंने कर्म और कर्तव्य को जीवन का मूल आधार बताते हुए कहा कि प्रत्येक कर्म उसका परिणाम अवश्य देता है। उन्होंने कहा कि जीवन की वास्तविक प्रतिस्पर्धा दूसरों से नहीं, बल्कि स्वयं को हर दिन बेहतर बनाने से होती है। यही सोच व्यक्ति को जिम्मेदार नागरिक बनाती है और राष्ट्र निर्माण में उसकी भागीदारी सुनिश्चित करती है।

इस कार्यक्रम में सचिव राज्यपाल रविनाथ रामन, निदेशक एससीईआरटी वंदना गर्ब्याल, स्कूल के चेयरमैन राकेश ओबेरॉय, निदेशक राघव ओबेरॉय, प्रधानाचार्य संजीव बाटला तथा स्कूल के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पुलिस ने निकाली 'सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा' रैली

शाह टाइम्स संवाददाता

उत्तरकाशी : उत्तरकाशी पुलिस ने जिला मुख्यालय में 36वें सड़क सुरक्षा माह 2026श के अंतर्गत शुक्रवार को सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा रैली निकालकर आम जनमानस को यातायात नियमों व सडक सुरक्षा के प्रति जागरुक किया।

इस जन जागरुकता रैली को लीड करने के लिए स्वयं पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय ने ग्राउंड जीरो पर उतारकर किया है। पुलिस लाईन ज्ञानसू में पुलिस अधीक्षक ने पुलिस जवानों को सड़क सुरक्षा व यातायात नियमों का पालन करने तथा समाज में यातायात नियमों के प्रति जागरुकता बढाने की शपथ दिलाने के पश्चात रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। पुलिस लाइन ज्ञानसू प्रारम्भ हुयी यह रैली उत्तरकाशी जनपद मुख्यालय के जोशियाडा, इन्द्रवती, तिलोथ, भटवाडी टैक्सी स्टैण्ड, मुख्य बाजार, सब्जी मण्डी, बस अड्डा, ताम्बाखानी, गैसगोदाम, ज्ञानसू होते हुये वापस पुलिस लाईन में समाप्त हुयी, रैली के दौरान पुलिस अधिकारी व कर्मियों द्वारा आमजन को सडक सुरक्षा व यातायात नियमों नाबलिक द्वारा वाहन न चलाने, शराब पीकर वाहन न चलाने, ओवर लोडिंग न करने, बिना हेलमेट दोपहिया वाहन न चलाने, ओवरस्पीड, तीन सवारी, सीट बेल्ट आदि के प्रति जागरुक करते हुये सडक दुर्घटनाओं के दौरान घयलों की मदद हेतु 'गुड सेमेरिटन योजना' की जानकारी दी।

कांग्रेस ने देशभक्त सिखों के प्रति 1984 वाली अपनी घृणा का इजहार किया : भट्ट

■ केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू को गद्दार कहने को शर्मनाक और निंदनीय करार दिया

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। भाजपा ने राहुल गांधी की तरफ से केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू को गद्दार कहने को शर्मनाक और निंदनीय करार दिया है।

प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद श्री महेंद्र भट्ट ने कहा कि एक बार फिर कांग्रेसी गांधी परिवार ने देशभक्त सिख कौम के प्रति अपनी 1984 वाली घृणा का इजहार किया है। राहुल नेता प्रतिपक्ष और संसदीय पद की गरिमा लायक नहीं है, लिहाजा उन्हें तत्काल नैतिक तौर पर इस्तीफा देना चाहिए।

संसद परिसर में हुए इस घटनाक्रम को लेकर मीडिया द्वारा पूछे सवालों के जबाब में उन्होंने कहा कि यह केंद्रीय मंत्री का नहीं बल्कि एक शहीद बेअंत सिंह के परिवार और समूची सिख समाज का अपमान है। रवनीत सिंह बिट्टू एक सिख परिवार से आते हैं जिसने देश की सेवा की है। उनके दादा पूर्व मुख्यमंत्री थे और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में जान देने वाले थे। ऐसे में नेता प्रतिपक्ष की गद्दार वाली टिप्पणी कतई स्वीकार्य नहीं है, जो उनके स्वयं के पद की गरिमा के अनुरूप नहीं है। एक सिख को गद्दार यानि देश के साथ विश्वासघात करने वाला कहने जैसा है। यह समस्त सिख समुदाय के लिए एक गंभीर मुद्दा है और वे सभी राहुल गांधी के इस बयान से बेहद आहत हैं।

उन्होंने कहा, संसद के अंदर और बाहर दोनों जगह संसदीय चर्चा शालीनता और सभ्य भाषा पर आधारित होनी चाहिए। लेकिन अफसोस नियम तोड़ने और असंवैधानिक कार्यों में राहुल गांधी हमेशा संसद में विपक्ष का नेतृत्व करते नजर आते हैं। शर्मनाक है कि जिनके परिवार ने देश के लिए जान कुर्बान कर दी, वे उन्हें उसे देशद्रोही बता रहे हैं, जबकि जो लोग देश को टुकड़ों में तोड़ने की बात करते हैं, उनके साथ वो हमेशा खड़े रहते हैं। उन्होंने तंज कसा कि लगता है कांग्रेसी युवराज अभी भी सामंती, शाही मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाए हैं। उन्होंने राहुल गांधी से इस्तीफा मांगते हुए कहा, उनके ऐसे शर्मनाक और घृणित व्यवहार के बाद राहुल को नेता प्रतिपक्ष ही नहीं, संसद सदस्य कहलाने का भी कोई नैतिक हक नहीं है। कांग्रेस के नकली गांधी परिवार की मानसिकता है कि देश की सेवा करने वाला हर व्यक्ति गद्दार है और उनके चरणों में गिरने वाला वफादार है। उन्होंने 1984 के सिख दंगों की याद दिलाते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेताओं की सिख-विरोधी मानसिकता एक बार फिर उजागर हुई है। क्योंकि देश नहीं भूला है जब 1984 में, राजीव गांधी की कांग्रेस सरकार के शासनकाल में हजारों सिखों की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। जिसमें कांग्रेस के बड़े बड़े नेताओं की स्पष्ट भूमिका थी और उन्हें बाद में कांग्रेस ने केंद्रीय मंत्री तक बनाया। लाखों सिख परिवार तबाह हो गए और दशकों तक उन्हें न्याय नहीं मिला। आज लाखों सिख भारतीय सशस्त्र बलों में सम्मान के साथ सेवा करते हैं। ऐसे में एक सिख को ष्देशद्रोहीष कहना हर सिख सैनिक, हर शहीद, हर उस परिवार का अपमान है जिसने इस राष्ट्र के लिए बलिदान दिया है।

राज्य गीत अस्तित्व में, न भुलाया, न भूलने की वजह: चौहान

■ कहा - इस गीत को दबाने का आरोप लगाने वाली कांग्रेस बिना तथ्यों के दोषारोपण कर रही

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने कहा कि राज्य गीत अस्तित्व मे है और इसे न भुलाया जा सकता है और न कोई भूलने की वजह है।

चौहान ने कहा कि राज्य गीत सरकारी कार्यक्रमों का हिस्सा पहले से ही रहा है और इसमें कोई द्वेष भाव या श्रेय लेने की मानसिकता किसी भी सरकार की नही हो सकती, क्योंकि यह राज्य की धरोहर है। लेकिन इस पर दोषारोपण अनुचित और अस्वीकार्य है।चौहान ने कहा कि इस गीत को दबाने का आरोप लगाने वाली कांग्रेस बिना तथ्यों के दोषारोपण कर रही है। सरकारी आयोजनों मे यह गीत अपनी उपस्थिति दर्ज कराता रहता है। बेशक गढ़ रत्न नरेंद्र सिंह नेगी के सुरों से सराबोर इस गीत को देश और उत्तराखंड के लाखों लोग पसंद करते आये हैं और नेगी दा के उदगार जायज हैं। लेकिन ऐसा नही कि इसे ठन्डे बस्ते मे डाल दिया गया हो। इस गीत को उपेक्षित करने का आरोप लगा रही कांग्रेस ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नही कर सकती। उन्होंने कहा कि संस्कृति के सरंक्षण की दिशा मे कांग्रेस को ज्ञान देने की जरूरत नही।चौहान ने कहा कि राज्य के सांस्कृतिक सरंक्षण की दिशा मे सही मायने मे मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी सरकार ने ही अधिक उत्साह दिखाया है। राज्य की संस्कृति, डेमोग्राफी की चिंता और धार्मिक स्वरूप के लिए सरकार जितने कानून लायी उसका सबसे पहले विरोध कांग्रेस से ही देखने को मिला।

जोशी ने किया यूपी के उप मुख्यमंत्री का उत्तराखण्ड आगमन पर स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने शुक्रवार को हरिद्वार में उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के उत्तराखण्ड आगमन पर उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक को शॉल तथा हाउस ऑफ हिमालयास ब्रांड के उत्पादों की किट भेंट की। मुलाकात के दौरान आपसी सहयोग, विकास कार्यों एवं अन्य समसामयिक विषयों पर सार्थक चर्चा भी हुई।

जोशी ने हरिद्वार में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम महाराज से की शिष्टाचार भेंट

हरिद्वार। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने शुक्रवार को हरिद्वार के कनखल स्थित आश्रम पहुंचकर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम महाराज से शिष्टाचार भेंट कर उनका आशीर्वाद भी लिया।

कार्यालय: जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बड़कोट, उत्तरकाशी

पत्रांक / डायट /300/होटल-आवास/2025-26 दिनांक : 06.02.2026

खण्ड- 'क'
आवासीय निविदा

वित्तीय वर्ष 2026-27 की अवधि में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बड़कोट, उत्तरकाशी में होने वाले प्रशिक्षण/ सेमीनार/ कार्यशाला एवं अन्य आयोजनों में आवासीय व्यवस्था हेतु जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बड़कोट, उत्तरकाशी परिसर के 01 किलोमीटर की परिधि के अन्तर्गत होटल स्वामियों से खुली निविदा के माध्यम से पंजीकृत डाक से तकनीकी एवं वित्तीय बिड निम्न कार्यक्रम अनुसार आमंत्रित की जाती है :-

क्र. सं.	सामग्री	निविदा जमा करने की अन्तिम तिथि	तकनीकी बिड खोलने की तिथि एवं समय	वित्तीय बिड खोलने की तिथि एवं समय	कार्य की अनुमानित लागत	निविदा प्रतिभूति (अर्नेस्ट मनी)	निविदा पत्र का शुल्क समस्त कर सहित
1	होटल (आवास)	05.03.2026 सायं 05.00 बजे	09.03.2026 दोपहर 12:30 बजे	09.03.2026 दोपहर 01:00 बजे	5,00,000.00 (रू0 पांच लाख)	10,000.00 (दस हजार रू0 मात्र)	590-00 (पांच सौ नब्बे रू0 मात्र

1. निविदायें केवल पंजीकृत डाक से ही स्वीकार की जायेगी। डाक द्वारा विलम्ब से प्राप्त निविदाओं पर विचार नहीं किया जायेगा।
2. निविदा हेतु आवेदन पत्र व निविदा के नियम / शर्ते दिनांक 11 फरवरी, 2026 से दिनांक 28 फरवरी 2026 तक किसी भी कार्य दिवस पर डायट बड़कोट उत्तरकाशी से प्राप्त की जा सकती है।

प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बडकोट उत्तरकाशी

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपने पुत्र विषाल अहमद व पुत्रवधू रोषन जहाँ व पौत्र इनाम अहमद, कैफ उर्फ बोटू व अमन मेरे कहने सुनने में नहीं हैं जिस कारण मैं उन्हे अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखलकर सम्बन्ध विच्छेद कर रहा हूँ आज के बाद भविश्य में इनके द्वारा किये गये किसी भी तरह का लेनदेन व कृत्य के लिये वह स्वयं जिम्मेदार होंगें

फुरकान अहमद पुत्र अब्दुल हकीम निवासी 35/19 मुस्लिम कालोनी लक्खीबाग देहरादून आधार नं. 7357 5553 9186.

छायाकारी पर मोबाइल फोटोग्राफी का प्रहार

अफजल हुसैन फौजी

नैनीताल। छायाकारी पर मोबाइल फोटोग्राफी का प्रहार भारी पढ़ने लगा है। छायाकारी के दम पर आजीविका कमाने वाले छायाकारों के भविष्य पर संकट मडराने लगा है। नैनीताल के फोटोग्राफर्स का धंधा फोटोग्राफी से परे लोक परिधानों पर निर्भर हो चला है।

छायाकारी का वह भी एक दौर था, जब नगर में दर्जनों फोटोग्राफर विभिन्न पर्यटन स्थलों में सैलानियों की फोटोग्राफी करते नजर आते थे। तब नगर में स्वरोजगार का बड़ा पेशा छायाकारी हुआ था। मगर मोबाइल फोन का प्रचलन बढ़ने के साथ फोटोग्राफरों की रोजी रोटी कुमाऊंनी व कश्मीरी परिधानो में निर्भर रह गई है। सैलानी छायाकारों से ये लोक परिधान किराए में लेते हैं और अपने मोबाइल कैमरे से फोटो खींचकर चले जाते है। छायाकारों का कहना है कि बीते कुछ वर्षों में स्मार्ट मोबाइल का प्रचलन बढ़ने से फोटोग्राफर्स का रोजगार प्रभावित हो रहा है।

स्थानीय छायाकार अकरम खान के अनुसार पहले एक दिन में सौ से ज्यादा पर्यटक फोटोग्राफर्स से फोटो खींचाने पहुंचते थे। लेकिन अब लोग अपने मोबाइल से ही फोटो खींचना पसंद करते हैं। अब आलम यह है कि एक फोटोग्राफर्स का एक फोटो खींचना मुश्किल हो रहा है। ऐसे में कई लोगों ने फोटोग्राफी का काम छोड़ दिया है। वहीं कुछ फोटोग्राफर अब मल्लीताल झील किनारे कुमाऊंनी व कश्मीरी परिधानों को किराए पर देकर अपना रोजगार चला रहे हैं।

लेकिन यह रोजगार फोटोग्राफर्स के घर चलाने के लिए नाकाफी नजर आ रहे हैं। जिसके चलते अब गिने चुने फोटोग्राफर ही यहां फोटोग्राफी कर रहे हैं। अब पर्यटक परिधानों को किराए पर लेकर सैल्फी लेना ही पसंद कर रहे हैं। दिन में दो या चार पर्यटक फोटो खिंचवाने आ जाते हैं। अब परिधानों को किराए पर देकर ही रोजगार कर रहे हैं। नरेश भारती कहते हैं कि रील वाले कैमरों के दौर में फोटोग्राफरों का काम बहुत अच्छा था। लोग अब मोबाइलों से फोटो खींचना पसंद कर रहे हैं। अब ड्रेस किराए पर देकर ही किसी तरह गुजारा कर रहे हैं।

कार्यालय सहायक अभियन्ता, सिंचाई उपखण्ड गैरसैंण

पत्रांक : 48 / सिं.उ.ख.गै. / निविदा / गैरसैंण दिनांक : 04.02.2026

निविदा सूचना संख्या:-10 / स०अ०-तृतीय / 2025-26

अधोहस्ताक्षरी द्वारा महामहिम राज्यपाल उत्तराखण्ड की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु अलग-अलग मुहरबन्द निविदायें सिंचाई विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से दिनांक 18.02.2026 को 3:00 बजे तक आमंत्रित किये जाते हैं, जो उसी दिन अपरान्ह 3:30 बजे अधोहस्ताक्षरी अथवा अधिकृत प्रतिनिधि द्वारा उपस्थित निविदादाताओं / प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगीं निविदा प्रपत्र निविदा खोलने की तिथि से पूर्व किसी भी कार्यदिवस में निर्धारित मूल्य देकर प्राप्त किये जा सकते हैं

क्र. सं.	कार्य का नाम	धरोहर धनराशि (रू०)	कार्य की अवधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू०)	ठेकेदार की श्रेणी
दैवीय आपदा मद के अन्तर्गत					
1	रा० उ०मा०वि० घण्डियाल के विद्यालय की सुरक्षा दीवार एवं प्रार्थना स्थल मरम्मत कार्य	21000.00	4 माह	1000+ 18%GST	ई एवं उच्चतर
2	रा०प्रा०वि० जखेट में जीर्ण-शीर्ण भवन का मरम्मत कार्य	30000.00	4 माह	1000+ 18%GST	ई एवं उच्चतर
3	रा०प्रा०वि० छिमटा में जीर्ण-शीर्ण भवन का मरम्मत कार्य	30000.00	4 माह	1000+ 18%GST	ई एवं उच्चतर
4	रा०प्रा०वि० बडेथ में भवन की छत का मरम्मत कार्य	25500.00	4 माह	1000+ 18%GST	ई एवं उच्चतर
5	आदिबद्री फीडर-3 (रीच 0.100 किमी0 से 0.130 किमी० का मरम्मत कार्य	6000.00	3 माह	500+ 18%GST	ई एवं उच्चतर

निविदा से सम्बन्धित समस्त नियम एवं शर्तों का विवरण निविदा प्रपत्र के साथ किसी भी कार्य दिवस को अधोहस्ताक्षरी कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता हैं

सहायक अभियन्ता
सिंचाई उपखण्ड गैरसैंण

विधान सभा सचिवालय, उत्तराखण्ड
(व्यवस्था अनुभाग)

संख्या : 558 / वि0स0 / 35 / व्यव0 / 2025-26 देहरादून, दिनांक: 06 फरवरी, 2026

ई-निविदा सूचना

विधान सभा सचिवालय स्थित जलपान गृह के संचालन हेतु प्रतिष्ठित योग्य फर्मों से ई-निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। ई-निविदा जमा करने की अन्तिम तिथि 23 फरवरी, 2026 (सांय 05:00 बजे) तक है।

विस्तृत विवरण एवं अन्य जानकारी हेतु वैबसाईट https://www.uktenders.gov.in पर जायें।

(हरीश कुमार), अनु सचिव

उत्तराखण्ड पॉवर कारपोरेशन लि0
(उत्तराखण्ड सरकार का उपक्रम) कार्यालय अधिशासी अभियन्ता,
विद्युत वितरण खण्ड, मोहनपुर, 56-स्पेशल विंग, प्रेमनगर, देहरादून।
कारपोरेट आईडेन्टीटी संख्या : U40109UR2001SGC025867 दूरभाष : 0135-2978072

No :-109/EE(CM)/UPCL/A-2 **विद्युत बाधित सूचना** Date :-06/02/2026

विद्युत वितरण खण्ड, मोहनपुर, देहरादून के अधीनस्थ विद्युत वितरण उपखण्ड, सेलाकुई के अन्तर्गत सभी सम्मानित विद्युत उपभोक्ताओं को अवगत कराना है कि 33/11 के0वी0 उपसंस्थान, फार्मासिटी के 11 के०वी० **फीडर नं0-04** एवं 33/11 के0वी0 उपसंस्थान, **सेलाकुई - 1 के 11 केवी0 सेलाकुई इडस्ट्री फीडर** पर अनुरक्षण सम्बन्धी महत्वपूर्ण कार्य प्रस्तावित किये जाने के कारण निम्नांकित फीडरों पर विद्युत आपूर्ति निम्नांकित अंकित तिथियों में पूर्ण या आंशिक रूप से बाधित रहेगी:-

दिनांक	समय	33/11 के०वी० उपसंस्थान का नाम	11 के०वी० फीडर का नाम	प्रभावित क्षेत्र
08.02.2026 (रविवार)	प्रातः11:00 से दोपहर 02:00 बजे तक	33/11 के०वी० उपसंस्थान, फार्मासिटी	11 के०वी० फीडर नं0-04	फीडर नं0-04 से पोषित समस्त औद्योगिक इकाईयां एवं क्षेत्र।
	दोपहर 02:00 से शांय 5:00 बजे तक	33/11 के०वी० उपसंस्थान, सेलाकुई-1	11 के०वी० सेलाकुई इडस्ट्री	सम्बन्धित फीडर से पोषित समस्त औद्योगिक इकाईयां।

अतः समस्त उपभोक्ताओं से निवेदन है कि इस कार्य हेतु अपनी वैकल्पिक व्यवस्था बनायें रखें एवं कार्य में विद्युत विभाग को सहयोग करने की कृपा करें।

अधिशासी अभियन्ता

राष्ट्र हित में बिजली बचायें, बिजली बचाने हेतु एल०ई०डी० बल्ब का प्रयोग करें (टोल फ्री न० 1912)
विद्युत बिलों के 24x7 ऑनलाईन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जाएँ
(विद्युत चोरी की सूचना टोल फ्री न० 1800 180 4185 / फैक्स संख्या - 0135-2760911 पर दें)

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि०
विद्युत वितरण खण्ड, बड़कोट
CAN- UA 40109 UP 2001 SGC 025867

निविदा सूचना

अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड, बड़कोट के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यों को कराने हेतु उत्तराखण्ड शासन द्वारा प्रदत्त 'ए' क्लास लाईसेन्सधारी ठेकेदारों/ आपूर्तिकर्ता जो आयकर, ई०पी०एफ०, जी०एस०टी० विभाग में पंजीकृत हों, एच०टी०/एल०टी० लाईन से सम्बन्धित कार्यों को संतोषजनक पूर्ण करने का अनुभव रखते हों जो 03 वर्ष से पुराना ना हो, से मुहरबन्द निविदायें दो भागों में निर्धारित प्रपत्र में (प्रथम भाग में धरोहर धनराशि किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक में सी०डी०आर०/ एफ०डी०आर०, 'ए' क्लास लाईसेन्सधारी ठेकेदार, जी०एस०टी० पंजीकरण, ई०पी०एफ० पंजीकरण, पिछले तीन वर्षों के आयकर रिर्टन, न्यूनतम वार्षिक औसत टर्नओवर (एमएटी) (वित्तीय वर्ष 2021-22, 2022-23 एवं 2023-24 में कार्य की लागत का 300 प्रतिशत, ऑडिटेड बैलेंस शीट या सी०ए० द्वारा प्रमाणित बैलेंस शीट की एक प्रति देनी होगी, सम्बन्धित प्रपत्र नियम शर्तें एवं द्वितीय भाग में निर्धारित प्रपत्र में दरें) आमन्त्रित की जाती हैं, जो कि **दिनांक 23/02/2026 को 14.00 बजे** तक निविदा प्रपत्र विक्रय की जायेगी एवं **24/02/2026 को अपरान्ह 16.00 बजे** उपस्थित निविदादाताओं के सम्मुख खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र निविदा खुलने की तिथि से एक दिन पूर्व तक (निविदा शुल्क + जी०एस०टी० सहित), नकद जमा करने पर प्राप्त किये जा सकते हैं। धरोहर राशि सी०डी०आर०/एफ०डी०आर०/राष्ट्रीय बचत पत्र, जो कि निविदा प्रकाशन होने के पश्चात की तिथि होनी अनिवार्य है, जिसकी वैधता कम से कम छः माह तक हो एवं अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड, बड़कोट के नाम देय हो। निविदा का प्रथम भाग अपूर्ण होने पर द्वितीय भाग नहीं खोला जायेगा। अधोहस्ताक्षरकर्ता को किसी एक अथवा समस्त निविदाओं को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित है। यदि निविदा खुलने की तिथि को राजकीय अवकाश घोषित होता है, तो निविदायें अगले कार्य दिवस को खोली जायेंगी।

निविदा सं० 22/2025-26 : विकासखण्ड नौगावं के अन्तर्गत ओ० एण्ड एम० मद में विद्युत वितरण उपखण्ड बडकोट के अन्तर्गत 33/11 के०वी० उपसंस्थान राजस्तर से पोषित खरादी फीडर पर नन्दगांव बैण्ड के निकट रॉडी टॉप पर स्थापित बी०एस०एन०एल० टॉवर के लिए 11 के०वी० लाइन का मरम्मत कार्य एवं कार्य में प्रयुक्त होने वाली विकेन्द्रीयकृत सामग्री की आपूर्ति का कार्य।
धरोहर धनराशि रू० 44000.00 (निविदा शुल्क 1000 +जी०एस०टी०)

निविदा सं० 23/2025-26 : विकासखण्ड नौगांव अन्तर्गत प्रणाली सुधार मद में मा० मुख्यमंत्री सौर स्वरोज़गार योजना के अन्तर्गत 200 कि०वा० सोलर प्लांट से उत्पादित ऊर्जा निकासी हेतु 11 के०वी० फीडर से जोड़ने के लिए ग्राम दियाडी एवं कंडारी में 11 के०वी० लाइन का निर्माण कार्य एवं कार्य में प्रयुक्त होने वाली विकेन्द्रीयकृत सामग्री की आपूर्ति का कार्य।
धरोहर धनराशि रू० 18000.00 (निविदा शुल्क 1000 +जी०एस०टी०)

निविदा सं० 24/2025-26 : विद्युत वितरण खण्ड बडकोट के अन्तर्गत ओ० एण्ड एम० मद् में वाणिज्य प्रपत्रों एवं विद्युत उपकेन्द्रों से संबंधित पूर्व मुद्रित सामग्री क्रय एवं छपाई का कार्य।
धरोहर धनराशि रू० 10000.00 (निविदा शुल्क 500 +जी०एस०टी०)

निविदा सं० 25/2025-26 : जमा योजना मद में विद्युत वितरण उपखण्ड पुरोला के अन्तर्गत 33/11 के०वी० उपसंस्थान पुरोला में एच०टी०/एल०टी०, 11/0.4 के०वी० उपसंस्थानों लाइनों को शिफ्ट किये जाने एवं कार्य मे प्रयुक्त होने वाली विकेन्द्रीयकृत सामग्री की आपूर्ति का कार्य।
धरोहर धनराशि रू० 45000.00 (निविदा शुल्क 1000 +जी०एस०टी०)

निविदा सं० 26/2025-26 : जमा योजना मद में विद्युत वितरण उपखण्ड पुरोला के अन्तर्गत 33/11 के०वी० उपसंस्थान मोरी में एच०टी०/एल०टी०, 11/0.4 के०वी० उपसंस्थानों लाइनों को शिफ्ट किये जाने एवं कार्य मे प्रयुक्त होने वाली विकेन्द्रीयकृत सामग्री की आपूर्ति का कार्य।
धरोहर धनराशि रू० 39000.00 (निविदा शुल्क 1000 +जी०एस०टी०)

निविदा सं० 27/2025-26 : जमा योजना मद में विद्युत वितरण उपखण्ड पुरोला के अन्तर्गत 33/11 के०वी० उपसंस्थान मोरी में एच०टी०/एल०टी०, 11/0.4 के०वी० उपसंस्थानों लाइनों को शिफ्ट किये जाने एवं कार्य मे प्रयुक्त होने वाली विकेन्द्रीयकृत सामग्री की आपूर्ति का कार्य।
धरोहर धनराशि रू० 30000.00 (निविदा शुल्क 1000 +जी०एस०टी०)

पत्रांक : 521/वि०वि०ख०ब०/टी-7 दिनांक : 06.02.2026 **अधिशासी अभियंता**

''राष्ट्र हित में बिजली बचायें'' ''टोल-फ्री नं0 -1912''

उत्तराखंड-यूपी संबंधों को नई मजबूती, हरिद्वार में ब्रजेश पाठक का स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के उत्तराखण्ड आगमन पर हरिद्वार में उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर उत्तराखण्ड सरकार के कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए उन्हें पारंपरिक शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। साथ ही कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने उत्तराखण्ड की संस्कृति और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'हाउस ऑफ हिमालयास' ब्रांड के उत्पादों की किट भी भेंट की।

मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं के बीच आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण में बातचीत हुई। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड के बीच आपसी सहयोग, विकास कार्यों की प्रगति तथा भविष्य की योजनाओं को लेकर विचार-विमर्श किया गया। दोनों राज्यों के हित में समन्वय बढ़ाने और जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने पर भी चर्चा हुई।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश का आपसी संबंध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से मजबूत रहा है और दोनों राज्यों के बीच निरंतर सहयोग से विकास को नई गति मिलेगी। वहीं उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भी उत्तराखण्ड सरकार के प्रयासों की सराहना करते हुए दोनों राज्यों के बीच सहयोग और समन्वय को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रेस क्लब में सड़क सुरक्षा पर संगोष्ठी आयोजित

यातायात नियमों के पालन से ही रोकी जा सकती है सड़क दुर्घटनाएं : निखिल शर्मा

संतोष कुमार / शाह टाइम्स

हरिद्वार। सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाने और आमजन को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत परिवहन विभाग हरिद्वार द्वारा प्रेस क्लब में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में परिवहन विभाग के अधिकारी, प्रेस क्लब पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एआरटीओ प्रशासन निखिल शर्मा तथा विशिष्ट अतिथि एआरटीओ प्रवर्तन नेहा झा रहे। अतिथियों ने वाहन चलाते समय यातायात नियमों के पालन, सीट बेल्ट लगाने एवं दोपहिया वाहन चालकों को हेलमेट पहनने की अनिवार्यता पर जोर दिया। इस अवसर पर सभागार में उपस्थित सभी पत्रकारों को यातायात नियमों के पालन की शपथ दिलाई गई तथा परिवहन विभाग की ओर से हेलमेट भी वितरित किए गए। प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी, महामंत्री दीपक मिश्रा एवं कार्यक्रम संयोजक आशीष मिश्रा ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। गोष्ठी का संचालन प्रेस क्लब महामंत्री दीपक मिश्रा ने किया। प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी ने कहा कि देश में सड़क दुर्घटनाएं एक गंभीर समस्या बन चुकी हैं। उन्होंने विशेष रूप से श्यामपुर हाईवे का उल्लेख करते हुए कहा कि इस मार्ग पर दुर्घटनाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। उन्होंने दोपहिया वाहन चालकों से अनिवार्य रूप से हेलमेट पहनकर वाहन चलाने की अपील की। एआरटीओ प्रशासन निखिल शर्मा ने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं बल्कि सभी नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि देश में प्रतिमाह लगभग डेढ़ लाख और वर्षभर में करीब पांच लाख सड़क दुर्घटनाएं होती हैं, जिनमें एक लाख से अधिक लोगों की मौत हो जाती है। नियमों के पालन से दुर्घटनाओं एवं मृत्यु दर में कमी लाई जा सकती है। एआरटीओ प्रवर्तन नेहा झा ने कहा कि सभी वाहनों पर मानक के अनुरूप आगे-पीछे नंबर प्लेट लगाना अनिवार्य है। उन्होंने हेलमेट, सीट बेल्ट, मोबाइल फोन के प्रयोग से बचने तथा ट्रैफिक सिग्नलों के पालन की सख्त अपील की। नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध प्रवर्तन कार्रवाई भी की जा रही है। उन्होंने सड़क दुर्घटना में घायल लोगों की तत्काल मदद करने पर जोर देते हुए कहा कि समय पर सहायता से कई बहुमूल्य जिंदगियां बचाई जा सकती हैं।

वरिष्ठ पत्रकार कौशल सिखौला, आशीष मिश्रा, आदेश त्यागी, रामचंद्र कन्नौजिया, दीपक मिश्रा, अविक्षित रमन, रजनीकांत शुक्ल, गोपाल रावत, संजय आर्य, राहुल वर्मा, प्रतिभा वर्मा, सुदेश आर्या ने एआरटीओ प्रशासन निखिल शर्मा एवं एआरटीओ प्रवर्तन नेहा झा को स्मृति चिन्ह भेंट किए। इस अवसर पर रूपेश वालिया, बालकृष्ण शास्त्री, हिमांशु द्विवेदी, तनवीर अली, गुलशन नैय्यर, कुमार दुष्यंत, जोगेंद्र मावी, सुभाष कपिल, विकास झा, श्रवण झा, मुकेश वर्मा, महताब आलम, प्रशांत शर्मा, संजय चौहान, काशीराम सैनी, महेश पारीख, शिवा अग्रवाल, विकास चौहान, नवीन चौहान, सूर्यकांत बेलवाल, सुरेंद्र बोकाड़िया, दयाशंकर वर्मा, अमित गुप्ता, रविंद्र सिंह, अरुण कश्यप, वैभव भाटिया सहित बड़ी संख्या में पत्रकार एवं गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

इलाज के दौरान मासूम की मौत, परिजनों का भारी हंगामा

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कनखल क्षेत्र में एक निजी क्लीनिक में उपचार के दौरान डेढ़ वर्षीय मासूम की मौत का दर्दनाक मामला सामने आया है। बच्चे की मौत से गुस्साए परिजनों ने डॉक्टर पर गलत दवा देने और लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए क्लीनिक के बाहर जमकर हंगामा किया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आक्रोशित लोगों को समझा-बुझाकर शांत कराया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

मिली जानकारी के अनुसार, बिहार से हाल ही में हरिद्वार आई किरण के डेढ़ वर्षीय बेटे रुद्रा की तबीयत अचानक खराब हो गई थी। परिजन उसे लेकर कनखल थाने के पास स्थित एक निजी क्लीनिक पहुंचे। आरोप है कि डॉक्टर द्वारा दी गई दवा पिलाते ही बच्चे को खून की उल्टियां होने लगीं और देखते ही देखते उसने दम तोड़ दिया। घटना के बाद डॉक्टर क्लीनिक छोड़कर चला गया, जिससे परिजन और भड़क गए।

बच्चे की मां पहले पोस्टमार्टम के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन पुलिस के समझाने के बाद सहमति बनी। दूसरी ओर, डॉक्टर का दावा है कि परिजनों ने बच्चे को दवा की तय मात्रा से अधिक खुराक दे दी थी, जिससे उसकी स्थिति बिगड़ी। थाना प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र सिंह रावत ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। रिपोर्ट आने के बाद मौत के सही कारणों का पता चलेगा, जिसके आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी

शराब के ठेके बाहर से बाइक की चोरी, केस दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। ज्वालापुर कोतवाली क्षेत्र में हरिलोक तिराहा स्थित अंग्रेजी शराब के ठेके के पास से एक मोटरसाइकिल चोरी कर फरार हो गए हैं। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कांत सैनी पुत्र रामपाल, निवासी ग्राम व पोस्ट मिस्सरपुर, कनखल, हरिद्वार ने पुलिस को लिखित शिकायत देकर बताया कि 4 मार्च को वह किसी कार्य से हरिलोक तिराहा स्थित अंग्रेजी शराब के ठेके पर गया था। इस दौरान उसने अपनी मोटरसाइकिल बाहर खड़ी की थी।जब कैंटीन से बाहर निकला तो उसकी मोटरसाइकिल मौके से गायब मिली। आसपास काफी तलाश करने के बाद भी बाइक का कुछ पता नहीं चल पाया है।जो अज्ञात चोर द्वारा मोटरसाइकिल चोरी कर ली गई। ज्वालापुर कोतवाली प्रभारी कुंदन सिंह राणा ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी गई है। घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी कैमरे चौक कर चोरों की पहचान की है रही है।

शांति भंग में दो युवक गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। थाना कनखल पुलिस ने क्षेत्र में शांति व्यवस्था भंग करने के आरोप में दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। कनखल थाना प्रभारी देवेन्द्र सिंह रावत ने बताया कि 5 फरवरी सूचना मिली कि जगजीतपुर इलाके के पास दो व्यक्ति गाली-गलौच करते हुए उपद्रव मचा रहे हैं तथा राहगीरों के साथ फसाद पर आमादा हैं, जिससे यातायात भी बाधित हो रहा है। सूचना पर पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और दोनों व्यक्तियों को समझाने का प्रयास किया गया, लेकिन वे नहीं माने। स्थिति को देखते हुए पुलिस ने दोनों को धारा 170 बीएनएसएस के अंतर्गत हिरासत में ले लिया। गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान प्रिन्स सागर (30 वर्ष) पुत्र स्व. जय सिंह सागर निवासी मित्र विहार कॉलोनी, जमालपुर रोड, थाना कनखल तथा नीरज कुमार यादव (37 वर्ष) पुत्र दाताराम यादव निवासी संगम विहार कॉलोनी, जमालपुर रोड, जगजीतपुर, थाना कनखल, हरिद्वार के रूप में हुई है।

ज्वालापुर में बिजली बिजली चोरी के खिलाफ अभियान, बकायेदारों के काटे कनेक्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। बिजली चोरी पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से ज्वालापुर क्षेत्र में विद्युत विभाग ने बिजली चोरी के विरुद्ध सख्त रुख अपनाया है। अधिशासी अभियंता ज्वालापुर रवि कुमार के निर्देश पर एसडीओ अर्चना के नेतृत्व में तड़के सुबह उपखंड (द्वितीय) क्षेत्र के विभिन्न मोहल्लों में व्यापक जांच अभियान चलाया गया, जिसमें कई स्थानों पर विद्युत चोरी के मामले पकड़े गए। विभाग की कार्रवाई से क्षेत्र में हड़कंप मच गया।

शुक्रवार तड़के विद्युत विभाग ने ज्वालापुर के मौहल्ला अहबाबनगर, मैदानियान व घोसियान आदि इलाकों में एसडीओ अर्चना नेतृत्व में विशेष कार्रवाई अभियान चलाया गया। अभियान में जेई मुकेश रवि, राव शाहबाज, मयंक चौहान, राम कुमार व मनोज टॉक भी शामिल रहे। टीम ने इस दौरान कई घरों में अवैध रूप से बिजली चोरी होते हुए पकड़ा। जिसके बाद सभी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करते हुए आवश्यक विधिक प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इसके साथ ही लंबे समय से विद्युत बिल जमा न करने वाले बकायदार उपभोक्ताओं के कनेक्शन भी काटे गए, जिससे बकाया वसूली को लेकर विभाग की सख्ती साफ दिखाई दी। वहीं, अधिशासी अभियंता ज्वालापुर रवि कुमार ने स्पष्ट किया कि बिजली चोरी न केवल कानूनन अपराध है, बल्कि इससे ईमानदार उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी पड़ता है। विभाग का यह अभियान इसी असंतुलन को दूर करने और सभी उपभोक्ताओं को समान व निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने की दिशा में एक अहम कदम है। उन्होंने आम जनता से अपील की कि वें समय पर विद्युत बिल जमा करें और किसी भी प्रकार की अनियमितता से बचें। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि आगे भी ऐसे औचक निरीक्षण अभियान लगातार जारी रहेंगे, ताकि विद्युत चोरी पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके। इस दौरान लाइनमेन श्रवण गिरी, मोबिन हसन, फरमान राव, संजय चौहान, सुशील कुमार, वीरेंद्र, अजहर आदि मौजूद रहे।

ज्वालापुर में सीमित इलाकों तक सिमटी बिजली चोरी के खिलाफ कार्रवाई

हरिद्वार। ज्वालापुर क्षेत्र में बिजली चोरी के विरुद्ध ऊर्जा विभाग द्वारा चलाया जा रहा अभियान कुछ गिने-चुने मोहल्लों तक ही सीमित दिखाई दे रहा है। जिस कारण यह प्रतीत होता है कि विभाग द्वारा केवल इन्हीं मोहल्लों को चिन्हित किया गया है बाकि इलाकों में चल रही बिजली चोरी को छूट दे दी गई है। वहीं, विभाग की कार्रवाई केवल चुनिंदा इलाकों में होने से व्यापक स्तर पर बिजली चोरी पर भी प्रभावी अंकुश नहीं लग पा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि एकतरफा कार्रवाई के कारण अन्य क्षेत्रों में चोरी का सिलसिला जारी है। शहरवासियों ने विभाग से मांग की है कि कार्रवाई को सभी मोहल्लों में समान रूप से चलाया जाए, ताकि बिजली चोरी पर पूरी तरह रोक लग सके।

डा. सीपी रतूड़ी बने ईएमए की देहरादून शाखा के अध्यक्ष, 12 को शपथ ग्रहण

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। इएमए देहरादून के चिकित्सकों की प्रदेश कार्यालय शिमला बाईपास मेहूवाला माफी देहरादून में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से जिला कार्यकारिणी का पुनर्गठन करते हुए डा.सीपी रतूड़ी जिलाध्यक्ष, डा.एमएस कश्यप उपाध्यक्ष, डा.आदर्श शर्मा महामंत्री, डा.कैलाश बडथवाल कोषाध्यक्ष, डा.अब्दुल गफफूर सचिव, डा.कमलेश खंडूड़ी को जनपद प्रभारी नियुक्त किया गया। प्रदेश अध्यक्ष डा.मुकेश चौहान ने नवनिर्वाचित जिला पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए बताया कि आगामी 12 फरवरी को शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जायेगा। शपथ ग्रहण समारोह में इएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.केपीएस चौहान मुख्य अथिती तथा राष्ट्रीय महासचिव डा.एनएस टाकुली विशिष्ट अतिथी होंगे।

बैठक में डा. डीसी चमोला, डा. एसके द्विवेदी, डा. वीके सैनी,

डा. श्रवण कुमार, डा.नेपाल सिंह, डा.अनिल भारद्वाज, डा.बिवस अधिकारी, डा.रामकुमार, शाहिद खान, डा. ज्ञानेशवर शर्मा, डा.मनवर जहां, डा. अर्चना शर्मा, डा.एनएस नेगी, डा. डीसी आर्य, डा.सुल्तान फैज, डा. आईएच अंसारी, डा.नीरज शर्मा आदि चिकित्सक मौजूद रहे।

घर के बाहर खड़ी स्कूटी ले उड़े चोर

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। सिडकुल थाना क्षेत्र में नेहरू कॉलोनी से घर के बाहर खड़ी स्कूटी चोरी पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया है पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पवन कुमार सिंह पुत्र सुरेश सिंह, मूल निवासी ग्राम इन्दरपुर, थाना उमरीबेगमगंज, जिला गोंडा उत्तर प्रदेश हाल पता नेहरू कॉलोनी ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि दिनांक 13 जनवरी की घर के बाहर खड़ी स्कूटी अज्ञात व्यक्ति द्वारा चोरी कर ली गई है।आसपास काफी तलाश करने के बाद भी स्कूटी का कोई सुराग नहीं लग सका। सिडकुल थानअध्यक्ष नितेश शर्मा ने बताया कि पीड़ित की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी गई है।

7 को मेगा स्वच्छता अभियान, 50 प्रचार वाहनों को हरी झंडी, जनभागीदारी से स्वच्छ-सुंदर जनपद का संकल्प

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। तीर्थ नगरी हरिद्वार को साफ, स्वच्छ एवं सुंदर जनपद बनाए जाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री के निर्देशन में बीते नवंबर 2025 से निरंतर चल रहे स्वच्छता अभियान को और अधिक व्यापक स्वरूप देने के लिए 7 फरवरी को जनपद भर में मेगा स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशन में जिला प्रशासन, पंचायती राज विभाग, विकास विभाग और विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों द्वारा व्यापक तैयारियां की गई हैं।

मेगा स्वच्छता अभियान में जनपदवासियों की अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मुख्य विकास अधिकारी ललित नारायण मिश्रा ने शुक्रवार को विकास भवन परिसर से 50 प्रचार वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये प्रचार वाहन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में भ्रमण कर स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाएंगे तथा आमजन को 7 फरवरी को होने वाले अभियान में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करेंगे।

मुख्य विकास अधिकारी ललित नारायण मिश्रा ने बताया कि जनपद हरिद्वार में स्वच्छता को जन आंदोलन का रूप दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। इसी सोच के तहत 7 फरवरी को जनपद की सभी ग्राम पंचायतों, कस्बों, बाजारों और शहरी क्षेत्रों में एक साथ वृहद स्वच्छता अभियान संचालित किया जाएगा।

इस मेगा अभियान के अंतर्गत जनपद की सभी ग्राम पंचायतों में ग्राम प्रधान के नेतृत्व में जनसमुदाय के सहयोग से सफाई अभियान चलाया जाएगा। प्रत्येक ग्राम पंचायत के लिए एक-एक कार्मिक को नोडल अधिकारी के रूप में तैनात किया गया है, जिन्हें मुख्य विकास अधिकारी के आदेश से नामित किया गया है। ये नोडल अधिकारी ग्राम पंचायतों में विशेष रूप से गांव के प्रवेश व निकास द्वार, पंचायत भवन, सामुदायिक भवन, विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र, स्वास्थ्य उपकेंद्र सहित सार्वजनिक स्थलों की सफाई सुनिश्चित कराएंगे। अभियान को प्रभावी बनाने के लिए ग्राम पंचायतों में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं, महिला मंगल दल, युवक मंगल दल, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों, आशा कार्यकर्ताओं और विभिन्न सामाजिक संगठनों की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की गई है। प्रशासन का उद्देश्य है कि हर वर्ग की सहभागिता से स्वच्छता का संदेश घर-घर तक पहुंचे और लोगों में स्वच्छता के प्रति स्थायी जागरूकता विकसित हो। नोडल अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे ग्राम पंचायतों में कराए गए स्वच्छता कार्यों के गुणवत्तापूर्ण जियोटैग फोटोग्राफ उपलब्ध कराएं। इसके साथ ही न्याय पंचायत स्तर पर नामित प्रभारी अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में चल रहे स्वच्छता महाअभियान का अनुश्रवण करेंगे और जियोटैग फोटोग्राफ संबंधित ब्लॉक कार्यालय को उपलब्ध कराएंगे, जिससे अभियान की सतत निगरानी की जा सके।

मेगा स्वच्छता अभियान के अंतर्गत दुकानदारों और व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को भी सक्रिय रूप से शामिल किया जाएगा। उन्हें अपने प्रतिष्ठानों पर अनिवार्य रूप से डस्टबिन रखने तथा कूड़ा खुले में न फेंकने के लिए प्रेरित किया जाएगा। ग्रामीण कस्बों, हाट बाजारों और पीठ बाजारों में जिला पंचायत के माध्यम से विशेष सफाई अभियान चलाया जाएगा, ताकि सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता सुनिश्चित हो सके। अभियान के दौरान एकत्रित प्लास्टिक कचरे को संबंधित ब्लॉक में जिला पंचायत द्वारा संचालित कंपेक्टर तक भेजा जाएगा, जिससे प्लास्टिक अपशिष्ट का वैज्ञानिक एवं पर्यावरण अनुकूल निस्तारण किया जा सके। प्रशासन का विशेष जोर प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने और स्वच्छ पर्यावरण के निर्माण पर है। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने कहा कि स्वच्छता अभियान का उद्देश्य केवल एक दिन की सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगों में स्वच्छता के प्रति स्थायी आदत विकसित करना है। उन्होंने जनपदवासियों से अपील की कि वे 7 फरवरी को अपने आसपास, गली-मोहल्लों, गांवों और बाजारों में स्वच्छता अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और हरिद्वार को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने में सहयोग करें।

प्रचार वाहनों को रवाना करने के अवसर पर जिला पंचायत राज अधिकारी अतुल प्रताप सिंह, नोडल स्वजल चंद्रकांत त्रिपाठी, सहायक जिला पंचायत राज अधिकारी हेम चंद्र, सहायक विकास अधिकारी (पं.) बहादराबाद बिजेंद्र सैनी, सचिव एवं ग्राम पंचायत विकास अधिकारी कुलदीप सिंह चौहान, अजय चौहान, अमरीश सैनी, अमित सैनी, हिमांशु शर्मा, शांतनु चौहान, मनोज कुमार, मनोज पोसवाल, श्रीमती इंदूबाला, सुंदरलाल सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

10 व 11 फरवरी को जनपद स्तरीय अंडर-19 व अंडर-14 एथलेटिक्स प्रतियोगिता आयोजित

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। जनपद स्तरीय अंडर-19 व अंडर-14 एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन 10 व 11 फरवरी को योगस्थली खेल परिसर रोशनाबाद में किया जाएगा। जिला क्रीड़ा अधिकारी हरिद्वार शबाली गुरुंग ने जानकारी देते हुए बताया कि 10 फरवरी को अंडर-19 बालक एवं बालिका वर्ग के अंतर्गत 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 800 मीटर, 1500 मीटर एवं 3000 मीटर दौड़ के साथ-साथ लंबी कूद, गोला फेंक एवं चक्का फेंक की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। 11 फरवरी को अंडर-14 बालक एवं बालिका वर्ग के अंतर्गत 60 मीटर दौड़, 600 मीटर दौड़, लंबी कूद (5 मीटर एप्रोच), बैक थ्रो शॉटपुट एवं जैवलिन थ्रो (भाला फेंक) की खेल स्पर्धाएं आयोजित होंगी। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों के लिए आधार कार्ड, जन्म प्रमाण-पत्र अथवा संबंधित विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा निर्गत बोनाफाइड प्रमाण-पत्र साथ लाना अनिवार्य होगा। उन्होंने जनपद के सभी विद्यालयों, खेल प्रशिक्षकों एवं खिलाड़ियों से अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग कर प्रतियोगिता को सफल बनाने की अपील की।

दादूपुर-गोविंदपुर में स्क्रैप गोदाम में लगी भीषण आग

7 फायर यूनिटों ने घंटों की मशक्कत के बाद पाया काबू

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। रानीपुर कोतवाली क्षेत्र के दादूपुर-गोविंदपुर में गुरुवार तड़के उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक स्क्रैप के गोदाम में भीषण आग भड़क उठी। सूचना मिलते ही फायर स्टेशन मायापुर व आसपास की फायर यूनिट तत्काल मौके के पर पहुंची और आग पर काबू पाने के लिए जुट गईं। दमकल विभाग की त्वरित कार्रवाई और सतर्कता से एक बड़ा हादसा टल गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आग इतनी विकराल थी कि उसकी लपटें आसपास स्थित मकानों तक पहुंचने लगीं, जिससे क्षेत्र में दहशत का माहौल बन गया। रात्रि में अचानक लगी आग से आसपास रहने वाले लोग घरों से बाहर निकल आए। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जनपद के विभिन्न फायर स्टेशनों से कुल सात फायर यूनिटों को मौके पर लगाया गया। अग्निशमन विभाग ने कड़ी मेहनत, लगन और पूरी सावधानी के साथ राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। फायर स्टेशन मायापुर से दो, बहादराबाद से एक, सिडकुल से दो, भगवानपुर से एक तथा रुड़की से एक फायर टेंडर मौके पर पहुंचे। दमकल कर्मियों ने लगातार करीब नौ घंटे तक संघर्ष करते हुए आग पर पूरी तरह काबू पाया।इस दौरान आसपास स्थित मकानों से लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। फायर यूनिटों की तत्परता से 20 से 25 लोगों को आग की चपेट में आने से सकुशल बचा लिया गया। राहत की बात यह रही कि इस भीषण अग्निकांड में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। जानकारी के अनुसार आग की चपेट में आया स्क्रैप का गोदाम वसीम पुत्र खलीफ, निवासी दादूपुर गोविंदपुर (निकट बालकुंज) का बताया जा रहा है। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

मार्शल आर्ट प्रतियोगिता में आशिहारा के खिलाड़ियों ने जीते 2 सिल्वर व 3 ब्रांज मेडल

सफलता के लिए कड़ी मेहनत, लगन और एकाग्रता जरूरी : अमित कुमार

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। खेल महाकुंभ में मुख्यमंत्री चौंपियनशिप ट्रॉफी में स्टेट पंचक स्लॉट मार्शल आर्ट प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए आशिहारा कराटे मिक्स मार्शल आर्ट के पांच खिलाड़ियों ने दो सिल्वर और तीन ब्रांज मेडल जीतकर हरिद्वार का नाम रोशन किया है। आशिहारा के स्टेट चीफ अमित कुमार चौधरी ने बताया कि प्रतियोगिता में कुलश्रेष्ठ और सृष्टि सागर ने सिल्वर और निहाल शर्मा, अभिराज एवं सवि पंत ने ब्रांज मेडल हासिल किया। अमित कुमार चौधरी ने पदक विजेता सभी खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि आशिहारा के खिलाड़ी प्रतियोगिताओं में लगातार शानदार खेल का प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए कड़ी मेहनत, लगन और एकाग्रता बेहद जरूरी है। आशिहारा के खिलाड़ी निरंतर अपने खेल पर फोकस करते हुए मेडल जीत रहे हैं।

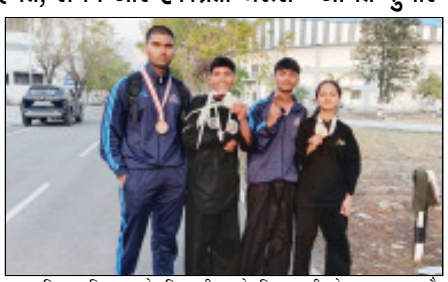

हरिद्वार में समाचार व विज्ञापन के लिये सम्पर्क करें।
सैफ सलमानी
ब्यूरो चीफ
शाह टाइम्स हरिद्वार
कार्यालय : रामनगर, तहसील के पीछे, ज्वालापुर, हरिद्वार
मो.: 9639554327, ई-मेल : shahtimeshr2026@gmail.com

सिन्द्रवाणी में पिंजरे में कैद हुआ गुलदार

मासूम के कातिल की पुष्टि के लिए 'फॉरेंसिक जांच' का इंतजार
तीन फरवरी का 5 वर्षीय दक्ष को बनाया था निवाला, ग्रामीणों में राहत के साथ डर बरकरार

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जिले के सिन्द्रवाणी क्षेत्र में देर रात्रि वन विभाग की ओर से लगाए गए पिंजरे में एक गुलदार के कैद होने से ग्रामीणों ने जरूर राहत की सांस ली है, लेकिन इलाके में पसरा खौफ अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। बताया जा रहा है कि गुलदार गुरूवार देर रात्रि लगभग 10 हुआ। वन विभाग की टीम ने उक्त गुलदार की पहचान सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सैंपल लेकर फॉरेंसिक जांच के लिए वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया देहरादून तथा पशुलोक ऋषिकेश भेजा दिया। जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि सिन्द्रवाणी की घटना में यही गुलदार शामिल था या नहीं।

गौरतलब है कि इसी सिन्द्रवाणी गांव में 3 फरवरी को एक दिल दहला देने वाली घटना में पांच वर्षीय मासूम को गुलदार ने अपना निवाला बना लिया था। उस घटना ने पूरे क्षेत्र को हिला कर रख दिया और तब से ग्रामीण डर के साए में जीने को मजबूर हैं। घटना के बाद प्रशासन और वन विभाग की नींद टूटी और जिलाधिकारी प्रतीक जैन के निर्देशन में जिला प्रशासन एवं वन विभाग की विभिन्न टीमों की ओर से क्षेत्र में गुलदार की धरपकड़ के लिए व्यापक स्तर पर सर्च अभियान चलाया जा रहा है। क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर पिंजरे लगाए, ट्रैप कैमरे लगाए गए तथा लगातार सर्च ऑपरेशन चलाया गया। कैमरा ट्रैप इसी अभियान के तहत गुरूवार को देर रात एक गुलदार पिंजरे में कैद हुआ।

उप वनाधिकारी अगस्त्यमुनि रेंज देवेंद्र सिंह पुण्डीर ने बताया कि पिंजरे में एक मादा गुलदार कैद हुआ, लेकिन यह स्पष्ट करना अभी जल्दबाजी होगी कि यही वही आदमखोर गुलदार है या नहीं। उन्होंने साफ कहा कि फॉरेंसिक जांच के बाद ही सच्चाई सामने आएगी। पकड़े गए गुलदार सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा गया है। उन्होने बताया कि सिन्द्रवाणी क्षेत्र में अन्य स्थानों पर लगाए गए पिंजरे यथावत रखे गए हैं। साथ ही आधुनिक उपकरणों की सहायता से क्षेत्र में गुलदारों की सतत मॉनिटरिंग की जा रही है। वन विभाग के कर्मियों की गश्त एवं सर्च अभियान निरंतर जारी है, ताकि क्षेत्रवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। जिला प्रशासन एवं वन विभाग ने क्षेत्रवासियों से सतर्क रहने, अनावश्यक रूप से रात्रि में बाहर न निकलने तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल वन विभाग या स्थानीय प्रशासन देने की अपील की।

वही दूसरी जिला पंचायत सदस्य जयवर्धन काण्डपाल ने प्रशासन को कड़े शब्दों में चेताया। कहा कि गुलदार के पकड़े जाने से राहत जरूर है, लेकिन जब तक फॉरेंसिक जांच से यह साबित नहीं हो जाता कि यही मासूम का कातिल है, तब तक खतरा टला नहीं माना जा सकता। एक बच्चे की जान गई है, अब किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। प्रशासन को सुरक्षा और निगरानी और सख्त करनी होगी।" प्रशासन ने क्षेत्रवासियों से सतर्क रहने और सावधानी बरतने की अपील की है, लेकिन ग्रामीणों का साफ कहना है। जब तक असली गुनहगार की पुष्टि नहीं होती, तब तक चौन की सांस नहीं ली जा सकती।

टिहरी में 12 फरवरी को गूंजेगी मजदूरों की आवाज चार लेबर कोड के विरोध में हड़ताल का ऐलान

नई टिहरी, प्रतापनगर और घनसाली में प्रदर्शन की तैयारी, राष्ट्रपति को भेजा जाएगा ज्ञापन
श्रमिक हितों की अनदेखी पर भड़का सीटू, कहा 'काले कानूनों की वापसी तक जारी रहेगा संघर्ष'

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। केंद्र सरकार की श्रमिक नीतियों और चार नए लेबर कोड के विरोध में मजदूर वर्ग अब आर-पार की लड़ाई के मूड में आ गया है। सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) ने आगामी 12 फरवरी 2026 को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया है, जिसका व्यापक असर पहाड़ पर भी देखने को मिलेगा। श्रमिक संगठनों ने निर्णय लिया है कि वे इस दिन सड़कों पर उतरकर अपना विरोध दर्ज कराएंगे और प्रशासन के माध्यम से महाम. हिम राष्ट्रपति को अपनी मांगों का ज्ञापन प्रेषित करेंगे। इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए जिला स्तर पर रणनीतियां तैयार कर ली गई हैं।

इस संबंध में सीटू की जिला कमेटी के सचिव चिंतामणि थपलियाल ने जिलाधिकारी नितिका खंडेलवाल को एक पत्र भेजकर प्रस्तावित कार्यक्रम की आधिकारिक जानकारी दी है। पत्र में स्पष्ट किया गया है कि केंद्र सरकार द्वारा लागू किए गए चार लेबर कोड पूरी तरह से मजदूर विरोधी हैं और यह श्रमिक वर्ग के अधिकारों पर सीधा कुठाराघात हैं। इन कानूनों की वापसी की मांग को लेकर ही ट्रेड यूनियनों ने एक साथ मिलकर राष्ट्रव्यापी हड़ताल का कठोर निर्णय लिया है। संगठन का मानना है कि यदि समय रहते इन नीतियों को वापस नहीं लिया गया, तो मजदूर वर्ग का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।

जनपद टिहरी में इस हड़ताल को प्रभावी बनाने के लिए तीन प्रमुख स्थानों का चयन किया गया है। 12 फरवरी को जिला मुख्यालय नई टिहरी के साथ-साथ उपजिलाधिकारी कार्यालय प्रताप. नगर और उपजिलाधिकारी कार्यालय घनसाली में विशाल रैलियां और प्रदर्शन आयोजित किए जाएंगे।

इन तीनों स्थानों पर जिले भर से श्रमिक एकत्रित होंगे और अपनी एकजुटता का परिचय देंगे। संगठन के पदाधिकारियों ने बताया कि यह प्रदर्शन पूरी तरह से शांतिपूर्ण रहेगा और मजदूर वर्ग लोकतांत्रिक तरीके से अपनी जायज मांगें सरकार के समक्ष रखेगा। इस दौरान होने वाले प्रदर्शनों के माध्यम से सरकार तक यह संदेश पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा कि श्रमिक विरोधी नीतियों को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

विधायक ने हिंदू सम्मेलन में अधिक संख्या में सहभागिता करने का किया आग्रह

इंटरलॉकिंग टाइल्स मार्ग निर्माण का भी किया शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

सहसपुर। ग्राम पंचायत कंडोली के अंतर्गत दुर्गा मंदिर अपर कंडोली के समीप से कृष्ण कुमार तिवारी, सदर सिंह भंडारी सहित अन्य ग्रामीणों के घरों की ओर इंटरलॉकिंग टाइल्स मार्ग निर्माण कार्य का शुभारंभ विधायक सहदेव सिंह पुंडीर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर स्थानीय लोगों ने लंबे समय से चली आ रही मांग के पूर्ण होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। विधायक सहदेव सिंह पुंडीर ने कहा कि क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं का विकास उनकी प्राथमिकता है और सड़क, मार्ग एवं आवागमन से जुड़ी समस्याओं का समाधान चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह मार्ग निर्माण स्थानीय नागरिकों के लिए आवागमन को सुगम बनाएगा और क्षेत्र के समग्र विकास में सहायक सिद्ध होगा। इस दौरान झाझरा में आयोजित होने वाले विराट हिंदू सम्मेलन को लेकर भी चर्चा की गई। विधायक सहदेव सिंह पुंडीर ने जनसमूह से आग्रह किया कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस कार्यक्रम में सहभागिता करें और सामाजिक व सांस्कृतिक एकता को मजबूत करें। उन्होंने कहा कि विराट हिंदू सम्मेलन सनातन संस्कृति, हिंदू समाज की एकता, आपसी सद्भाव तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए आयोजित किया जा रहा है। कहा ऐसे आयोजनों से समाज में सकारात्मक चेतना का संचार होता है और सामाजिक समरसता को मजबूती मिलती है। इस दौरान मेघ सिंह, जिला पंचायत सदस्य कुमारी कंचन, अनूप सेमवाल, धीरज गुले. रिया सहित अन्य क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

टिहरी में बुजुर्गों को मिलेगा अपना घर, बंद पड़े एएनएम सेंटर में खुलेगा आधुनिक वृद्धाश्रम

कांडा सुरसिंगधार के भवन को समाज कल्याण विभाग को सौंपने की तैयारी, जिलाधिकारी ने दिए प्रस्ताव भेजने के निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। जनपद में बुजुर्गों के सम्मान और उनकी देखभाल सुनिश्चित करने की दिशा में जिला प्रशासन ने एक संवेदनशील पहल की है। समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित किए जाने वाले वृद्धाश्रम के लिए जमीन और भवन की तलाश की प्रक्रिया अब अंतिम चरण में पहुंचती दिखाई दे रही है।

इसी क्रम में जिलाधिकारी नितिका खण्डेलवाल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में एक महत्वपूर्ण बैठक आहूत की गई, जिसमें जिले में उपलब्ध अनुपयोगी सरकारी भवनों के सदुपयोग और उनके हस्तांतरण को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। प्रशासन का प्रयास है कि खाली पड़े सरकारी ढांचों का उपयोग जनहित के कार्यों में किया जाए।

बैठक के दौरान मुख्य रूप से ग्राम कांडा, सुरसिंगधार स्थित एएनएम सेंटर के भवन पर विचार-विमर्श किया गया। यह भवन वर्तमान में संचालित नहीं है और खाली पड़ा हुआ है। प्रशासन ने निर्णय लिया है कि इस भवन का उपयोग अब वृद्धाश्रम की स्थापना के लिए किया जाएगा। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों से उक्त भवन की वर्तमान स्थिति, उसकी उपयोगिता और कानूनी औपचारिकताओं के बारे में विस्तृत जानकारी ली। इस पहल से जहां एक ओर सरकारी संपत्ति का सही रखरखाव और उपयोग सुनिश्चित होगा, वहीं दूसरी ओर बेसहारा बुजुर्गों को एक सुरक्षित छत मिल सकेगी।

इस योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए जिलाधिकारी नितिका खण्डेलवाल ने जिला समाज कल्याण अधिकारी श्रेष्ठा भाकुनी को कड़े निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि भवन के हस्तांतरण के लिए शासन और निद. शालय स्तर पर जो भी पत्राचार आवश्यक है, उसे प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूरा किया जाए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया कि वृद्धाश्रम की स्थापना एक महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य हइस समीक्षा बैठक में प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। चर्चा में उपजिलाधिकारी टिहरी स्नेहिल कुंवर, क्षय रोग अधिकारी जितेन्द्र भण्डारी और जिला समाज कल्याण अधिकारी श्रेष्ठा भाकुनी ने अपने विचार रखे और भवन हस्तांतरण की तकनीकी पहलुओं पर राय दी।

एक नजर ...

सहसपुर विधायक ने निर्धन परिवारों को आर्थिक सहायता के चेक वितरित किए

सहसपुर। विधानसभा सहसपुर के अंतर्गत आने वाले ग्राम शुक्लापुर, अम्बीवाला, सेलाकुई एवं सिंहनीवाला के निर्धन परिवारों को राहत पहुंच. ाने की दिशा में विधायक सहदेव सिंह पुंडीर द्वारा एक और मानवीय पहल की गई। कैंप कार्यालय सुद्धोवाला में आयोजित कार्यक्रम के दौरान जरूरतमंद परिवारों को मुख्यमंत्री राहत कोष के माध्यम से आर्थिक सहायता के चेक वितरित किए गए। इस अवसर पर पुत्रियों के विवाह, गंभीर बीमारी के उपचार एवं विधवा महिलाओं के परिवार पालन-पोषण हेतु सहायता प्रदान की गई। विधायक सहदेव सिंह पुंडीर ने कहा कि समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सरकार की सहायता पहुंचाना उनकी प्राथमिकता है और भविष्य में भी जरूरतमंदों के सहयोग के लिए वे निरंतर प्रयासरत रहेंगे। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जनसेवा ही उनका मूल उद्देश्य है और विधानसभा सहसपुर के प्रत्येक नागरिक की समस्याओं के समाधान के लिए वे सदैव तत्पर रहेंगे। इस दौरान सुरेंद्र सिंह नेगी, भगत सिंह राठौर, बीर सिंह रावत आदि लोग उपस्थित रहे।

लोनिवि प्रमुख अभियंता राजेश चंद्र शर्मा ने जौनसार बाबर क्षेत्र का दौरा किया

सहिया। जौनसार के क्यावा गांव निवासी प्रमुख अभियंता लोक निर्माण विभाग देहरादून राजेश चंद्र शर्मा अपनी टीम के साथ जौनसार बावर क्षेत्र के मुख्य सड़क का निरीक्षण किया है। इससे पूर्व उन्होंने कालसी चकराता मोटर मार्ग जजरेड के समीप भूस्खलन जोन की स्थिति को देखा। उन्होंने अधिकारी को एसडीआरएफ फंड के तहत निर्देश किया कि खस्ताहाल मार्ग का स्टीमेंट तैयार किया जाए। हरिपुर कोटी ईच्छाड़ी क्वानू मीनस मोटर मार्ग जगह जगह डामरीकरण उखड चुका है और सुरक्षा दीवारे भी क्षतिग्रस्त है और जगह जगह पैरापिट व क्रैश बैरियर भी नही है। इस दौरान लोक निर्माण विभाग साहिया की अधिशासी अभियंता रचना थपलियाल, सहायक अभियंता राधिका शर्मा, भव्य कम्पोज भी मौजूद रहे।

बिड़ला परिसर इकाई का एनएसएस शिविर समापन, सेवा भाव से करें कार्य

श्रीनगर। गढ़वाल विवि के बिड़ला परिसर के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने बालिका वर्ग का आयोजित सात-दिवसीय विशेष शिविर का समापन ग्राम पंचायत सांकरो में सम्पन्न हुआ है। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि चौरास एवं एनएसएस के समन्वयक प्रो. आरएस नेगी एवं विशिष्ट अतिथि ग्राम उप प्रधान सांक्रो अरुणा चौहान ने कहा कि स्वयं सेवियों को सेवा भाव से कार्य करना चाहिए। शिविर में बेहतर प्रदर्शन करने पर अंशिका मेहता को सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी तथा आध्या पुरोहित को सर्वश्रेष्ठ दलनायक से पुरस्कृत किया गया। साथ ही सुचेता पुष्प, स्नेहा, प्रज्ञा एवं सृष्टि को श्रेष्ठ स्वयंसेवी के रूप में सम्मानित किया गया। मौके पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रजनी नौटियाल, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. ओपी गुसाई, डॉ. हेमलता भट्ट, डॉ. अनूप सेमवाल, डॉ अनुराही, डॉ बालकृष्ण बधानी सहित आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का सफल मंच संच. ालन डॉ. अनूप सेमवाल ने किया।

डीएम ने राजनीतिक दलों के साथ परखी वेयरहाउस की सुरक्षा व्यवस्था

नई टिहरी। निष्पक्ष और पारदर्शी लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के उद्देश्य से जिला प्रशासन लगातार सक्रिय है। इसी क्रम में गुरुवार को जिलाधिकारी नितिका खण्डेलवाल ने जिला मुख्यालय स्थित वेयरहाउस का मासिक निरीक्षण किया। खास बात यह रही कि यह निरीक्षण केवल प्रशासनिक अधिकारियों तक सीमित नहीं था, बल्कि विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में पूरी पारदर्शिता के साथ संपन्न कराया गया। इस दौरान जिलाधिकारी ने वेयरहाउस की सुरक्षा व्यवस्थाओं को बारीकी से परखा और संबंधित अधिकारियों को व्यवस्थाएं चाक-चौबंद रखने के निर्देश दिए।

तैयारियों को परखने आज केदारपुरी पहुंचेगी अधिकारियों की फौज

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। आगामी केदारनाथ धाम यात्रा के सफल संचालन तथा यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते आज से दो दिनों तक केदारपुरी में विभिन्न व्यवस्थाओं एवं कार्यों का संयुक्त स्थलीय निरीक्षण किया जाएगा। इस संबंध में जिलाधिकारी प्रतीक जैन ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान यात्रा मार्ग, केदारपुरी एवं गौरीकुण्ड से केदारनाथ तक की समस्त व्यवस्थाओं का विस्तृत परीक्षण किया जाएगा, ताकि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व सभी आवश्यक कार्य समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण कर लिए जाएं।

जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी ऊखीमठ अनिल रावत एवं तहस. ैलदार ऊखीमठ को यात्रा मार्ग पर स्थित समस्त दुकानों का निरीक्षण एवं चिन्हीकरण करने, अधिशासी अभियंता निर्माण खण्ड गुप्तकाशी को पैदल यात्रा मार्ग की मरम्मत, बेंच, कूड़ादान, डण्डी-कण्डी काउंटर, तप्तकुण्ड आदि कार्यों के लिए आंगणन गठित कर स्वीकृति को लेकर प्रस्तुत करने, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी को यात्रा रूट की सुरक्षा, आपदा पूर्व तैयारी तथा संवेदनशील वृक्षों के कटान की कार्यवाही करने, अधिशासी अभियंता राष्ट्रीय राजमार्ग, लोनिवि रुद्रप्रयाग को रुद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड तक सड़क मार्ग का निरीक्षण करने, विद्युत वितरण खण्ड को विद्युत व्यवस्थाओं का निरीक्षण, जल संस्थान को जल, प्याऊ, चरियां एवं स्टैंड पोस्ट की व्यवस्थाएं करने, तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीकेटीसी को डंडी-कंडी काउंटर (गौरीकुण्ड) एवं यात्रा व्यवस्थाओं के निरीक्षण के निर्देश दिए।

महिला आईटीआई से संचालित होंगी एकलव्य आदर्श विद्यालय मयरावना की कक्षाएं

शाह टाइम्स संवाददाता

चकराता। देहरादून जनपद में संचा. लित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय मयरावना (चकराता) की कक्षाओं को अस्थायी रूप से राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (महिला), ढकरानी से संचालित किए जाने की मांग पर कार्यवाही की प्रक्रिया तेज हो गई है।

इस संबंध में उत्तराखंड जनजाति सलाहकार परिषद के उपाध्यक्ष गीताराम गौड़ ने सचिव, कौशल विकास विभाग उत्तराखंड को पत्र भेजकर शीघ्र निर्णय लेने का आग्रह किया था।

पत्र में गीताराम गौड़ ने बताया कि उनकी मांग पर पूर्व में निदेशक, जनजाति कल्याण विभाग द्वारा भी अपनी संस्तुति दी जा चुकी है। उन्होंने अवगत कराया कि वर्तमान में एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय मयरावना का संचालन अस्थायी रूप से जनजातीय शोध संस्थान उत्तराखंड, देहरादून के भवन में किया जा रहा है, जहां केवल 180 छात्र-छात्राओं के आवास की व्यवस्था उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2025-26 में कक्षा छह में 60 नए विद्यार्थियों के प्रवेश के बाद विद्यालय में छात्र-छात्राओं की संख्या बढ़कर 240 हो गई है। स्थानाभाव के कारण विद्यार्थियों के आवास की व्यवस्था भाऊवाला, प्रेमनगर स्थित किराये के भवन में की गई है, जिससे शैक्षणिक गतिविधियां प्रभावित हो रही हैं।

गीताराम गौड़ ने कहा कि वर्तमान में संचालित किराये के हॉस्टल में न तो मानकों के अनुरूप भवन उपलब्ध है और न ही खेल मैदान एवं पर्याप्त कक्षाएं। इस कारण 9 जनवरी 2026 से त्रैमासिक परीक्षाएं भी आयोजित नहीं हो सकी हैं, जिससे अभिभावकों में रोष व्याप्त है। उन्होंने बताया कि एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय मयरावना के लिए नए भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिसे पूर्ण होने में लगभग एक वर्ष का समय लगेगा। तब तक विद्यालय को अस्थायी रूप से ढकरानी स्थित महिला आईटीआई के खाली पड़े भवन में संचालित किए जाने की मांग अभिभावकों द्वारा भी की जा रही है, ताकि बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो।

गीताराम गौड़ ने बताया कि निदेशक, जनजाति कल्याण विभाग ने इस प्रस्ताव पर सहमति दे दी है और प्रयास किए जा रहे हैं कि शीघ्र ही विद्यालय की कक्षाएं ढकरानी से संचालित हों। उन्होंने इस दिशा में कार्यवाही किए जाने पर मुख्यमंत्री एवं निदेशक, जनजाति कल्याण का आभार व्यक्त किया है।

मानव-वन्यजीव संघर्ष को लेकर कांग्रेस का धरना

शाह टाइम्स संवाददाता

रूद्रप्रयाग। उत्तराखण्ड के पर्वतीय जिलों में मानव और वन्यजीवों के बीच बढ़ता संघर्ष गंभीर संकट का रूप ले चुका है। इस वर्ष अब तक कई स्थानीय लोग, जिनमें महिलाएं और बच्चे शामिल हैं, वन्यजीव हमलों में जान गंवा चुके हैं या गंभीर रूप से घायल हुए हैं। रुद्रप्रयाग जनपद के सिन्द्रवाणी गांव में 3 फरवरी 2026 को शाम के समय एक गुलदार द्वारा मां की गोद से अबोध बालक को उठा ले जाने की घटना ने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया। बाद में देर रात बालक का अधखाया शव गांव से कुछ दूरी पर मिला। गुलदार के साथ-साथ इस वर्ष पर्वतीय क्षेत्रों में भालुओं का आतंक भी बढ़ा है। वहीं बंदर, जंगली सुअर एवं अन्य वन्यजीवों के कारण खेती बुरी तरह प्रभावित हुई है, जिससे पहाड़ की बड़ी मात्रा में कृषि भूमि बंजर होती जा रही है।

इन हालातों को लेकर शुक्रवार को जिला कांग्रेस कमेटी ने प्रभागीय

वनाधिकारी कार्यालय में धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान जिला अधिकारी एवं प्रभागीय वनाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड को एक ज्ञापन प्रेषित किया गया। ज्ञापन में मांग की गई कि आगामी विधानसभा बजट सत्र में मानव-वन्यजीव संघर्ष पर एक दिन विशेष चर्चा कराई जाए। पर्वतीय क्षेत्रों में गुलदार, भालू, बंदर एवं जंगली सुअरों की वैज्ञानिक गणना कराई जाए और यदि इनकी संख्या मानक से अधिक हो तो उन्हें पकड़कर सुरक्षित स्थानों पर रखा जाए। वन्यजीव हमलों में मृतक व घायलों के लिए मुआवजा राशि बढ़ाई जाए तथा मृतकों के परिजनों को वन विभाग में क्षतिपूर्ति के रूप में रोजगार दिया जाए। साथ ही जंगली जानवरों द्वारा नष्ट की गई या प्रभावित खेती का मुआवजा भी दिए जाने की मांग की गई।

धरना प्रदर्शन में जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष कुलदीप सिंह कण्डारी, जिला प्रवक्ता नरेंद्र बिष्ट, पूर्व विधायक केदारनाथ मनोज रावत, पूर्व प्रमुख जखोली प्रदीप थपलियाल, ब्लॉक अध्यक्ष अगस्त्यमुनि हरीश गुसाई, पूर्व जिला अध्यक्ष ईश्वर सिंह बिष्ट, ब्लॉक अध्यक्ष जखोली महावीर पंवार, ब्लॉक अध्यक्ष ऊखीमठ अवतार सिंह सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि यदि मानव-वन्यजीव संघर्ष पर शीघ्र प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

एग्रीस्टैक और नक्शा प्रोजेक्ट को लेकर डीएम सख्त

नई टिहरी। कृषि क्षेत्र में डिजिटल क्रांति लाने और किसानों को सरक. ारी योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से पहुंचाने के उद्देश्य से जिला प्रशासन ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। इसी क्रम में कलेक्ट्रेट स्थित वीसी कक्ष में जिलाधिकारी नितिका खण्डेलवाल की अध्यक्षता में एग्रीस्टैक योजना और नक्शा प्रोजेक्ट को लेकर एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में राजस्व, कृषि और उद्यान विभाग के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने और लंबित कार्यों को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने पर जोर दिया गया। बैठक में जनपद की सभी तहसीलों के तहसीलदार और नायब तहसीलदार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े, जबकि अन्य विभागीय अधिकारी प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहे।

पहाड़ियों व जंगलों के बीच फंसे युवकों के लिए मददगार बनी सहसपुर पुलिस

शाह टाइम्स संवाददाता

सहसपुर। थाना सहसपुर क्षेत्रान्तर्गत ट्रेकिंग रूट पर पहाड़ियों एवं जंगलों के बीच फंसे युवको के लिये मददगार बनी पुलिस। युवक ट्रेनिंग के दौरान रात्रि में रास्ता भटककर फंस गए थे जंगल में। सहसपुर पुलिस ने युवकों का सकुशल रेस्क्यू कर बाहर निकाला। देर रात्रि पुलिस से मिली तत्काल सहायता पर युवको ने सहसपुर का आभार जताया।

पुलिस से मिली जानकारी के मुता. बिक बीती 5 तारीख को देर रात्रि पुलिस कंट्रोल रुम 112 के माध्यम से थाना सहसपुर को सूचना प्राप्त हुई कि करीब 10 व्यक्ति, जो भदराज ट्रेकिंग पर गये थे, रात में अधेरा होने के कारण अपने ट्रेकिंग रुट से भटक कर जंगल में चले गये है और उन्हें रास्ते का कुछ भी पता नहीं चल पा रहा है।

सूचना पर प्रभारी निरीक्षक सहसपुर द्वारा तत्काल कोतवाली मे रेस्क्यू टीम

गठित कर उक्त व्यक्तियों की तलाश हेतु मय राहत एवं बचाव उपकरणों के भदराज ट्रेकिंग रुट हेतु रवाना किया गया। पुलिस टीम द्वारा कोटी में पहुँचकर वन विभाग के वीट अधिकारी व गाँव के व्यक्तियों का सहयोग लेते हुए रेस्क्यू/सर्च अभियान चलाया गया व देर रात्रि काफी ढूंढ खोज व सकारात्मक प्रयास से भदराज जंगल ट्रेक से 10 व्यक्तियों क्रमशः अभिषेक चौहान पुत्र शिवराम निवासी विकासनगर, हेमन्त पुत्र मदन गोपाल निवासी श्यामपुर प्रेमनगर, देहरादून, प्रिन्स पुत्र घनश्याम वर्मा व शिवम पुत्र सुनील प्रसाद दोनो निवासी मिठ्ठी बेरी, प्रेमनगर, अर्चित पुत्र राजेश निवासी स्पेशल विंग, प्रेमनगर, देहरादून, सक्षम घई पुत्र हरीश घई निवासी प्रेमनगर, देहरादून, मंयक राय पुत्र मनोज राय व शिवाशु पुत्र संतोष दोनो निवासी मिठ्ठी बैरी, प्रेमनगर, देहरादून, उज्जवल पुत्र प्रवेश निवासी प्रेमनगर देहरादून को देर रात्रि में काफी कठिनाई व परिश्रम के द्वारा कोटी गाँव से लगभग 3 किलोमीटर ऊपर जंगल में सर्च अभियान के दौरान सकुशल रेस्क्यू करते हुये निकाला गया तथा सभी युवको को उनके गनत्वय को भिजवाया गया।

पुलिस ठीम में एसआई नीरज त्यागी, सिपाही ललित कुमार, अमोल राठी, प्रदीप विष्ट, रविंद्र आर्या, होमगार्ड निशान्त जवाडी शामिल रहे।

क्रिकेट लीगः धोखाधड़ी करने वाला विकास ढाका गिरफ्तार

दो टीम मालिकों से 32 लाख की ठगी का आरोप, पुलिस ने विकास के बैंक अकाउंट किए फ्रीज़

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम गौलापार में आयोजित की जाने वाली बहुचर्चित ईवीसीएल (एपिक विक्ट्री क्रिकेट लीग) के नाम पर बड़े पैमाने पर दो टीम मालिकों से 32 लाख रुपये की धोखाधड़ी करने वाले आरोपी विकास ढाका को गिरफ्तार कर किया, इसके साथ ही पुलिस ने पुलिस ने पकड़े गए आरा. ेपी विकास ढाका के लेन-देन से जुड़े दो बैंक खाते को भी फ्रीज कर दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। शुक्रवार को एसएसपी डा. मंजुनाथ टीसी ने इस फर्जीवाड़े का खुलासा करते हुए बताया कि बीते 5 फरवरी गुरूवार को हरियाणा निवासी हेमंत शर्मा पुत्र रमेश चंद्र शर्मा और पूर्व विधायक सितारगंज नारायण पाल निवासी अंबिका विहार हल्द्वानी ने थाना काठगोदाम में तहरीर सौंपते हुए आरोप लगाया था कि गौलापार स्थित इंदिरा गांधी अंतरर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित होने वाली ईवीसीएल क्रिकेट लीग के नाम पर आयोजक विकास ढाका ने उनसे लाखों रुपये की ठगी की। मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्काल पुलिस टीम गठित कर शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश दिए गए। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी विकास ढाका ने टीम मालिकों को यह बताया था कि क्रिकेट लीग में पूर्व भारतीय क्रिकेटर हरभजन सिंह, इरफान पठान, प्रवीण कुमार, मनप्रीत गोनी समेत कई अंतरर्राष्ट्रीय और रणजी स्तर के खिलाड़ी भाग लेंगे। इसी दावे के आधार पर टीम मालिकों को फ्रेंचाइजी खरीदने के लिए प्रेरित किया। हेमंत शर्मा ने ईवीसीएल क्रिकेट लीग में यूपी वॉरियर्स नामक टीम खरीदी थी। आरोपी ने टीम की फ्रेंचाइजी फीस 50 लाख रुपये बताई, लेकिन छूट का लालच देकर 30 लाख रुपये में सौदा तय किया। सौदे के अनुसार हेमंत शर्मा ने नगद और अन्य माध्यमों से कुल 23 लाख रुपये आरोपी को भुगतान किए। वहीं पूर्व विधायक नारायण पाल ने उत्तराखंड सोल्जर्स नामक टीम खरीदी गई। आरोपी ने इस टीम की फ्रेंचाइजी फीस भी 50 लाख रुपये बताई थी, जिसे बाद में 10 लाख रुपये की छूट देकर तय किया गया। इस सौदे के तहत नारायण पाल ने 3 लाख रुपये नकद तथा हल्द्वानी में प्रचार-प्रसार के लिए लगाए गए होर्डिंग्स सहित कुल 9 लाख रुपये खर्च किए। टूर्नामेंट की शुरुआत की तिथि 1 फरवरी निर्धारित की गई थी, लेकिन निर्धारित तिथि बीत जाने के बाद भी टूर्नामेंट शुरू नहीं हुआ। जब टीम मालिकों ने आयोजक से संपर्क किया तो आरोपी टाल-मटोल करता रहा। बाद में अंतरर्राष्ट्रीय खिलाडियों से संपर्क करने पर पता चला कि उन्हें इस प्रकार के किसी भी आयोजन की कोई जानकारी नहीं थी। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि आयोजक ने न तो किसी तरह की टीम ड्रेस, लोगो या होर्डिंग्स तैयार कराई थी और न ही आयोजन से जुड़ी कोई ठोस तैयारी की थी। इससे स्पष्ट हुआ कि आरा. ेपी ने पूर्व नियोजित तरीके से क्रिकेट लीग के नाम पर धोखाधड़ी कर मोटी रकम हड़प ली। जिसके बाद काठगोदाम थानाध्यक्ष विमल मिश्रा के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने मल्ला काठगोदाम क्षेत्र से आरोपी विकास ढाका पुत्र यशवीर सिंह ढाका निवासी 162 सैक्टर नोएडा यूपी को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के लेन-देन से संबंधित दो बैंक खातों को भी फ्रीज कर दिया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। टीम में मल्ला काठगोदाम चौकी प्रभारी दिलीप सिंह, एसआई नीतू, कांस्टेबल करतार सिंह शामिल रहे।

इस वर्ष रिकार्ड तोड़ चुगान

गौला नदी में इस वर्ष अब तक 2 करोड़ टन निकासी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। जिले में खनन राजस्व, नदियों में खनन वाहनों और उप खनिज चुगान के मामले में पिछले कई वर्षों का रिकॉर्ड इस वर्ष टूट गया है।

खासतौर पर गौला, नंधौर और कोसी नदियों में जिला प्रशासन के प्रयासों से खनन कार्य में अभूतपूर्व सफलता मिली है, जो पिछले पांच साल के आंकड़ों से स्पष्ट है। जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने बताया कि मुख्यमंत्री के निर्देश पर पारदर्शी और नीतिगत खनन चुगान प्रक्रिया को समय पर शुरू किया गया, जिससे यह सफलता प्राप्त हुई। जिला प्रशासन द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार गौला नदी में अक्टूबर 2022 से जनवरी 2023 तक कुल 6018 वाहनों के जरिए 414,345.42 टन उप खनिज की निकासी की गई थी। इसके बाद अक्टूबर 2023 से जनवरी 2024 तक 47,975 वाहनों से 5,141,445.48 टन उप खनिज निकाले गए। इसी तरह अक्टूबर 2024 से जनवरी 2025 तक 24,345 वाहनों से 2,357,708.76 टन खनिज निकाले गए। इसके साथ ही वर्तमान वर्ष में अक्टूबर 2025 से जनवरी 2026 तक 2,22,664 वाहनों के जरिए 2,13,99,739.38 टन उप खनिज की निकासी की गई है, जो पिछले कई वर्षों के रिकॉर्ड को ध्वस्त करता है। इस सफलता से सरकार को राजस्व प्राप्त हुआ और गौला नदी से जुड़े वाहन स्वामियों, चालकों और मजदूरों को रोजगार भी मिला। जिला प्रशासन ने खनन कार्य में जुटे मजदूरों को सुरक्षा उपकरण, कंबल और पानी छिड़काव के कार्यों को समय पर सुनिश्चित किया। जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने बताया कि राज्य सरकार की पारदर्शी खनन नीति और वार्षिक नीतिगत खनन चुगान व्यवस्था के कारण इस वर्ष सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

नंधौर नदी में रिकॉर्ड तोड़ खनन

नंधौर नदी में अक्टूबर 2022 से जनवरी 2023 तक केवल 50 वाहनों से 331.61 टन उप खनिज की निकासी हुई थी। इसके बाद, अक्टूबर 2023 से जनवरी 2024 तक 10,438 वाहनों से 99,784.71 टन उप खनिज निकाले गए। इस वर्ष, जिला प्रशासन के प्रयासों से 26,824 वाहनों से 2,17,763.60 टन उप खनिज की निकासी की गई, जो एक नया रिकॉर्ड है।

कोसी नदी ने भी तोड़ा पुराना रिकॉर्ड

कोसी नदी में भी इस वर्ष खनन चुगान में नए रिकॉर्ड बने हैं। अक्टूबर 2022 से जनवरी 2023 तक 12,916 वाहनों से 1,58,754.55 टन उप खनिज निकाले गए। अक्टूबर 2023 से जनवरी 2024 तक 13,122 वाहनों से 1,55,724.44 टन उप खनिज निकासी हुई। अक्टूबर 2024 से जनवरी 2025 तक 822 वाहनों से 98,657.86 टन उप खनिज निकाले गए, जबकि वर्तमान वर्ष में अक्टूबर 2025 से जनवरी 2026 तक 41,874 वाहनों से 5,01,997.05 टन उप खनिज निकाली गई है, जो रिकॉर्ड तोड़ है।

विकसित भारत की परिकल्पना स्वस्थ भारत के बिना संभव नहींः भट्ट

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। जिला स्वास्थ्य समिति की ओर से कालाढूंगी रोड स्थित बैंक्वेट हॉल में शुक्रवार को जिला स्तरीय आशा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के साथ आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका को और प्रभावी बनाना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ राज्य स्तरीय राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य एवं अनुश्रवण परिषद के उपाध्यक्ष सुरेश भट्ट, मेयर गजराज सिंह बिष्ट, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. हरीश चंद्र पंत एवं एसीएमओ डा. संजीव खड़वाल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि दर्जा राज्य मंत्री सुरेश भट्ट ने कहा कि विकसित भारत की परिकल्पना स्वस्थ भारत के बिना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, पोषण, परिवार नियोजन और जन-जागरूकता अभियानों में आशा कार्यकर्ता अहम कड़ी है। आशा कार्यकर्ताओं की मेहनत से ही सरकारी स्वास्थ्य योजनाएं घर-घर तक पहुंच पा रही हैं। मेयर गजराज बिष्ट ने कहा कि नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य अभियानों को सफल बनाने में आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका सराहनीय है। आशा कार्यकर्ता स्वास्थ्य विभाग और आम जनता के बीच सेतु का कार्य करती है और उनका योगदान किसी भी स्थिति में कमतर नहीं आंका जा सकता। सम्मेलन के दौरान स्वास्थ्य योजनाओं की समीक्षा की गई। इस मौके पर डा. श्वेता भंडारी, डा. सत्यनंद जोशी, दीपक कांडपाल, बसंत गोस्वामी, आनंद खंडूरी, पारस साह, सपना जोशी, ललित डोडियाल, राघवेंद्र रावत, हरेंद्र काठायत सहित बड़ी संख्या में आशा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

डीएम के आदेश पर शराब की दुकानों का निरीक्षण

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। शुक्रवार को जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल के निर्देश पर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में आबकारी विभाग की टीम द्वारा नियमित प्रवर्तन और गुणवत्ता नियंत्रण अभियान चलाया गया। इस दौरान टीम ने विभिन्न मदिरा दुकानों और हल्द्वानी में संचालित एफ.एल-2 अनुज्ञापनों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मदिरा ब्रांड्स की उपलब्धता, भंडारण व्यवस्था, स्टॉक अभिलेखों और बिक्री प्रक्रिया की जांच की गई। इसके साथ ही गुणवत्ता परीक्षण सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न मदिरा ब्रांड्स के सैंपल एकत्रित किए गए, जिन्हें प्रयोगशाला परीक्षण के लिए भेजा गया। यह पूरी कार्रवाई आबकारी अधिनियम और विभागीय दिशा-निर्देशों के अनुसार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न की गई। आबकारी विभाग ने यह भी स्पष्ट किया कि इस तरह की निरीक्षण और प्रवर्तन कार्यवाही भविष्य में भी जारी रहेगी, ताकि अवैध मदिरा विक्रय पर प्रभावी नियंत्रण और उपभोकताओं को गुणवत्तापूर्ण मदिरा की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

कार दुर्घटनाग्रस्त

हल्द्वानी। पहाड़ी आर्मी के संस्थापक अध्यक्ष हरीश रावत की कार शुक्रवार को हल्द्वानी के कमलुवागांजा रोड पर सड़क दुर्घटना का शिकार हो गई।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक एस.एन. राना द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं 63/9 ई-राजपुर रोड देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादकः
एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
स्थानीय सम्पादक
चेतन गुरूंग

देहरादून कार्यालय 63/9 ई-राजपुर रोड देहरादून
☎0135-2743363
R.N.I. No.UTT HIN 2001/05656
मोबाइल-9720007290
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

नैनीताल में फिर बढ़ा कुत्तों का आतंक

नैनीताल। नैनीताल में एक बार फिर से कुत्तों का आतंक बढ़ गया है। प्रतिमाह कुत्तों के काटने के बाद लगभग 150 मरीज एंटी रेबीज लगाने अस्पताल पहुंच रहे हैं। बता दें कि नैनीताल में कुत्तों से लोगों की सुरक्षा के लिए अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। जिसके चलते प्रतिमाह 150 लोगों को आवारा व पालतू कुत्ते काट कर जख्मी कर रहे हैं। राजकीय बीडी पांडे जिला अस्पताल के पीएमएस डक्ा तरुण कुमार टम्टा ने बताया कि जिला अस्पताल के आंकडों के हिसाब से रोजाना पांच से छह लोग कुत्तों के काटने का शिकार हो रहे हैं। बताया कि वर्ष 2025 में कुल 1912 मरीज बीडी पांडे अस्पताल में उपचार को पहुंचे थे। बताया कि इस वर्ष जनवरी से फरवरी अब तक 250 लोग कुत्तों के काटने के बाद उपचार के लिए पहुंचे हैं जिनको एंटी रेबीज लगाई जा रही है।

महिलाओं के गले में मारा झपटा, मंगलसूत्र उड़ाए

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। मुखानी थानाक्षेत्र में झपटामार बाइक सवारों ने दो अलग-अलग क्षेत्र में घटना को अंजाम देने के बाद फरार हो गए। झपटामार बाइक सवारों ने पहली घटना 30 जनवरी को फतेहपुर क्षेत्र में दी और उसके बाद बीते 4 फरवरी को बिठौरिया क्षेत्र में दी। एक महिला से पता पूछने के बहाने मंगलसूत्र झपटकर ले गए और दूसरी ओर दुकान में खरीददारी के बहाने दुकान स्वामिनी का मंगलसूत्र उठाकर ले गए। दोनों ही महिलाओं ने मुखानी थाने पहुंचकर अज्ञात दो बाइक सवार युवकों के खिलाफ तहरीर सौंपी। पुलिस ने पीड़ित महिलाओं की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर घटनास्थल के आस-पास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू कर दिए। जानकारी के अनुसार बिठौरिया नंबर एक ऊंचापुल निवासी बीना पाठक ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि बीते 4 फरवरी को दोपहर करीब ढाई बजे वह अपनी दुकान पर मौजूद थीं। इसी दौरान एक बाइक पर दो युवक उनकी दुकान के सामने आए और पीछे बैठा युवक उनकी दुकान में आया और मेहंदी मांगी। जैसे ही उसे मेहंदी देने के लिए सामने आई तभी उसने मंगलसूत्र में झपटा मारा और बाइक में बैठ कर फरार हो गए। जबकि दूसरा फतेहपुर देवभूमि सैनिक कालोनी पीपल पोखरा निवासी कमला देवी ने मुखानी पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा कि बीते 30 जनवरी की दोपहर वह अपने पोते को लेने जा रही थी तभी रास्ते में बाइक सवार युवकों ने पता पूछने के लिए उनको रोका तभी बाइक के पीछे बैठे युवक ने उनके गले में झपटा मारकर मंगलसूत्र लेकर फरार हो गए। मुखानी पुलिस ने दोनो पीड़ितों की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगालने शुरू कर दिए। पुलिस ने दावा किया है शीघ्र झपटामार बाइक सवारों को गिरफ्तार किया जाएगा।

मुक्त विश्वविद्यालय में शोध परिषद की चतुर्थ बैठक संपन्न

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में शुक्रवार को कुलपति की अध्यक्षता में शोध परिषद की चतुर्थ बैठक सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस बैठक में सदस्य सचिव निदेशक (शोध) प्रो. गिरिजा पांडे और अतिरिक्त निदेशक प्रो. मंजरी अग्रवाल ने चतुर्थ शोध परिषद की कार्यसूची और शोध नीतियों को अन्य सदस्यों के सामने रखा। बैठक में सहायक निदेशक डा. एसएन ओझा ने शोध अध्यादेश-2026 के प्रारूप को प्रस्तुत किया, जिस पर मौजूद सदस्यों ने विचार-विमर्श किया। विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा के बाद शोध अध्यादेश-2026 के प्रारूप को अनुमोदित कर दिया गया। बैठक में आमंत्रित बाह्य विशेषज्ञ डा. एचसी पुरोहित (दून विश्वविद्यालय) प्रो. गोपाल नंद साहू (कुमाऊं विश्वविद्यालय) प्रो. जयदीप शर्मा (इग्नू) और समस्त विद्याशाखाओं के निदेशकों ने विश्वविद्यालय द्वारा लागू की गई शोध नीतियों की सराहना की।

कार्यालय सहायक अभियन्ता-तृतीय (बीजापुर)
सिंचाई खण्ड विकासनगर कौलागढ़, देहरादून
ई-मेलः-sd3bijapur@gmail.com

अपार शक्तेः स्त्रोतः गंगेयम्

Water sufficient Village

पत्रांकः- 95 /स0अ0तृ0/सिं0ख0वि0/निविदा दिनांक 31.01.2026

निविदा सूचना संख्या -05/स0अ0-तृतीय/2025-26, दिनांक 31.01.2026

मा0 राज्यपाल महोदय, उत्तराखण्ड की ओर से अधोहस्ताक्षरी द्वारा इस उपखण्ड के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यों हेतु सीलबन्द निविदाएं सिंचाई विभाग, उत्तराखण्ड में निम्नानुसार वांछित पंजीकृत श्रेणी के ठेकेदारों से दिंनाक 16.02.2025 के अपरान्ह में 3:00 बजे तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में आंमत्रित की जाती हैं, जो उसी दिन अधोहस्ताक्षरकर्त्ता द्वारा अपरान्ह 3:30 बजे उपस्थित ठेकेदारों अथवा उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधियों के सम्मुख खोली जायेगी, इस दिवस पर किन्ही कारणों से अवकाश घोषित होने पर निविदायें अगले कार्य दिवस पर खोली जायेंगीं निविदा प्रपत्र निर्धारित मूल्य अदा करने पर अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय से दिनांक 01.02.2026 से दिनांक 14.02.2026 तक किसी भी कार्य दिवस में सायं 4:00 बजे तक प्राप्त की जा सकती हैं

क्र0 स0	कार्य का नाम	धरोहर धनराशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य+18% G.S.T	कार्य पूर्ण करने की अवधि	ठेकेदार की न्यूनतम श्रेणी
1	जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के अन्तर्गत सिंगली पंचायत में भू-कटाव रोकने हेतु बरसाती नाले में बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः- 0.00मी0 से 30.00मी0)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
2	जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के अन्तर्गत सिंगली पंचायत में भू-कटाव रोकने हेतु बरसाती नाले में बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः- 30.00मी0 से 60.00मी0 R/B)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
3	जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के अन्तर्गत सिंगली पंचायत में भू-कटाव रोकने हेतु बरसाती नाले में बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः-60.00मी0 से 70.00मी0 R/B, 0.00मी0 से 20.00मी0 Near Dharmendra House)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
4	जनपद देहरादून के अन्तर्गत विकासखण्ड सहसपुर की मसूरी विधानसभा में ग्राम पंचायत चन्द्रोटी में भू-कटाव रोकने हेतु सुरक्षा दीवार कार्य (रीचः-0.00मी0 से 27.00मी0 R/B)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
5	जनपद देहरादून के अन्तर्गत विकासखण्ड सहसपुर की मसूरी विधानसभा में ग्राम पंचायत चन्द्रोटी में भू-कटाव रोकने हेतु सुरक्षा दीवार कार्य (रीचः-27.00मी0 से 54.00मी0 R/B)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
6	जनपद देहरादून के अन्तर्गत विकासखण्ड सहसपुर की मसूरी विधानसभा में ग्राम पंचायत चन्द्रोटी में भू-कटाव रोकने हेतु सुरक्षा दीवार कार्य (रीचः-54.00मी0 से 81.00मी0 R/B)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
7	जनपद देहरादून के अन्तर्गत विकासखण्ड सहसपुर की मसूरी विधानसभा में ग्राम पंचायत चन्द्रोटी में भू-कटाव रोकने हेतु सुरक्षा दीवार कार्य (रीचः-0.00मी0 से 10.00मी0, 60.00मी0 से 80.00मी0 L/B)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
8	राज्य सैक्टर मद के अन्तर्गत जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के गुजराडा करनपुर के ग्राम जामुनवाला में बायांखाला से बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः- 0.00मी0 से 18.00मी0)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
9	राज्य सैक्टर मद के अन्तर्गत जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के गुजराडा करनपुर के ग्राम जामुनवाला में बायांखाला से बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः-18.00मी0 से 38.00मी0)	15000.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
10	राज्य सैक्टर मद के अन्तर्गत जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के गुजराडा करनपुर के ग्राम जामुनवाला में बायांखाला से बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः-38.00मी0 से 60.00मी0)	13500.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर
11	राज्य सैक्टर मद के अन्तर्गत जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर के गुजराडा करनपुर के ग्राम जामुनवाला में बायांखाला से बाढ सुरक्षा कार्य (रीचः-60.00मी0 से 77.00मी0)	13500.00	500.00+ G.S.T.18%	3 माह	'ई' एवं उच्चतर

निविदा देने सें पूर्व ठेकेदार को कार्यस्थल व अनुबन्ध की शर्तो आदि को देखकर समस्त परिस्थितियों से अवगत हो जाना चाहियें

शर्ते :-

1. समस्त निविदायें या किसी एक निविदा को बिना किसी कारण बताये निरस्त करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी के पास सुरक्षित हैं इस सम्बन्ध में किसी प्रकार के प्रार्थना पत्र पर कोई विचार नहीं किया जायेगां
2. निविदा प्रपत्र क्रय करने से पूर्व कार्य स्थल का भली-भांति निरीक्षण कर लिया जाये एवं निविदायें क्रय करते समय पुष्टि की जाये की कार्यस्थल का निरीक्षण कर लिया गया हैं
3. वांछित धरोहर धनराशि डाकघर बचत बैंक की सावधि जमा पासबुक/राष्ट्रीय बचतपत्र अथवा किसी राष्ट्रीयकृत बैंक की सी0डी0आर0/एफ0डी0आर0 के रूप में अधिशासी अभियन्ता, सिंचाई खण्ड, विकासनगर, देहरादून के नाम बंधक हो, निविदा के साथ संलग्न करनी होगीं
4. अनुबन्ध करते समय ठेकेदारों को अनुमानित लागत 10 प्रतिशत जमानत राशि नियमानुसार जमा करनी होगी (जिसमें धरोहर धनराशि सम्मिलित कर ली जायेगी) अन्यथा निविदा निरस्त कर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगीं
5. निविदा के साथ ठेकेदार को रू0 100/- का नॉन जूडिशियल स्टाम्प पेपर एवं रू0 1/- का रसीदी टिकट लगाना आवश्यक हैं अनुबन्ध करते समय ठेकेदारों को रू0 100/- का नॉन जूडिशियल स्टॉम्प पेपर अलग से देना आवश्यक हैं
6. विभाग द्वारा निर्माण कार्य के भुगतान पर नियमानुसार वस्तु एवं सेवाकर, आयकर, रॉयल्टी एवं अन्य करों की कटौती ठेकेदारों के बीजक से की जायेगीं
7. निविदा प्रपत्र डाक द्वारा मंगवाने पर रू0 100/- का अतिरिक्त शुल्क देय होगा परन्तु डाक द्वारा समय पर निविदा प्राप्त न होने पर उत्तरदायित्व विभाग का नहीं होगां
8. डाक द्वारा अपरान्ह 3:00 बजे तक प्राप्त निविदा पर ही विचार किया जायेगां 3:00 बजे के पश्चात प्राप्त निविदा पर विचार नहीं किया जायेगां
9. सशर्त निविदा मान्य नहीं होगी, कार्य की अन्य शर्तें एवं विषिश्टतायें तकनीकी निविदा के साथ संलग्न होगीं
10. निविदा बिक्री एवं खुलने की तिथि को, यदि षासन द्वारा अपरिहार्य परिस्थितियों में अवकाश घोषित किया जाता है, तो अगले कार्य दिवस को निविदायें बिक्री की जायेंगी एवं खोली जायेंगीं
11. निविदा खुलने के बाद निविदा 90 दिन तक वैध मानी जायेगीं यदि ठेकेदार निविदा स्वीकृत होने की दशा में कार्य करनें में असमर्थता प्रकट करता है अथवा निर्धारित समय के अन्दर समस्त औपचारिकताएं पूर्ण कर अनुबन्ध/कार्य करने हेतु उपस्थित नहीं होता है, तो उसकी धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगीं
12. निविदा की दरें प्रत्येक मद हेतु अंकों तथा षब्दों में पृथक-पृथक लिखी होनी चाहियें यदि अंक व षब्दों की दरों में अन्तर होतो शब्दो में लिखी दरें ही मान्य होंगीं निविदा में लिखित दर आदि पर कटिंग/ओवर राइटिंग होने पर ठेकेदार को पुनः स्पष्ट लिखकर अपने हस्ताक्षर करने होंगें
13. पंजीकृत ठेकेदारों द्वारा स्वयं कार्य स्थल पर कार्य कराया जायेगा तथा वे किसी अन्य फर्म/व्यक्ति को कार्य सबलेट नहींकरेंगें
14. निविदादाताओं द्वारा प्रस्तुत की गयी धरोहर धनराशि का एफ0डी0आर0/राष्ट्रीय बचतपत्र, पंजीकृत प्रमाणपत्र आदि की जांच करायी जायेगीं यदि कोई भी दस्तावेज फर्जी पाये जायेंगे, तो सम्बन्धित के विरूद्ध कार्यवाही की जायेगीं
15. कार्यों की जांच क्वालिटी कंट्रोल संस्था से भी करायी जायेगी, तत्पश्चात ही कार्यों का भुगतान किया जायेगां यदि क्वालिटी कंट्रोल संस्था/उच्चाधिकारियों द्वारा कोई कमी कार्यहित में इंगित की जाती है, तो नियमानुसार कार्यवाही की जायेगीं
16. निविदा की दरों पर 18 प्रतिशत जी0एस0टी0 अतिरिक्त देय होगा, जो कि भुगतान के समय ठेकेदार को भुगतान किया जायेगा तथा ठेकेदार को स्वयं जी0एस0टी0 संबंधित विभाग में जमा करना होगां

सहायक अभियन्ता-तृतीय
सिंचाई खण्ड, विकासनगर

भारत से मैच का बॉयकाट न करे पाक: श्रीलंका

श्रीलंका क्रिकेट के प्रेसिडेंट शम्मी सिल्वा ने गंभीर कमर्शियल और आर्थिक नतीजों की चेतावनी दी

कोलंबो, वार्ता। श्रीलंका क्रिकेट के प्रेसिडेंट शम्मी सिल्वा ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) से आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2026 के दौरान श्रीलंका में होने वाले भारत बनाम पाकिस्तान मैच के बॉयकॉट की रिपोर्ट पर फिर से सोचने की अपील की है। उन्होंने इसके गंभीर कमर्शियल और आर्थिक नतीजों की चेतावनी दी है, श्रीलंका के न्यूजवायर ने यह रिपोर्ट दी है। लेटर में, एसएलसी ने कहा कि उसे मीडिया रिपोर्ट्स से पता चला है कि पाकिस्तान के टूर्नामेंट में हिस्सा लेने की उम्मीद है, लेकिन 15 फरवरी, 2026 को कोलंबो के आर- प्रेमदासा इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले भारत बनाम पाकिस्तान मैच को छोड़ने का फैसला लिया जा सकता है। लेटर के मुताबिक, श्रीलंका में मैचों, खासकर भारत बनाम पाकिस्तान मैच के लिए टिकटों की बिक्री पूरी हो चुकी है और इसकी बहुत ज्यादा डिमांड देखी गई है, जो लोगों की पहले कभी न देखी गई दिलचस्पी और बड़ी कमर्शियल उम्मीदों को दिखाता है।

एसएलसी ने चेतावनी दी कि इतने बड़े मैच में हिस्सा न लेने के बड़े नतीजे होंगे, जिसमें काफी फाइनेंशियल नुकसान, टूरिज्म की उम्मीद में कमी और बड़े आर्थिक नतीजे शामिल हैं। न्यूजवायर ने बताया कि पाकिस्तान के 15 फरवरी का मैच न खेलने के फैसले की खबरों के बाद श्रीलंका के टूरिज्म और होटल सेक्टर को पहले ही झटका लगा है, कोलंबो के कई होटलों की बुकिग कैंसल हो गई है। लेटर में यह भी बताया गया कि श्रीलंका क्रिकेट, श्रीलंकाई सरकार के साथ मिलकर, बॉयकॉट के बड़े असर को ध्यान में रखता है, जिसका असर न सिर्फ एसएलसी पर बल्कि टूर्नामेंट के सफल आयोजन में शामिल कई स्टेकहोल्डर्स पर भी पड़ेगा। दोनों बोर्ड के बीच पिछले सहयोग को याद करते हुए, श्रीलंका क्रिकेट ने कहा कि उसकी नेशनल टीम ने कई बार मुश्किल और सेंसिटिव हालात में पाकिस्तान का दौरा किया है, जिसमें गंभीर सुरक्षा घटनाओं के बाद के समय भी शामिल हैं, जब दूसरी टीमें दौरा करने से हिचकिचा रही थीं। इसने कहा कि वे दौरे अच्छी नीयत और खेल भावना और आपसी सम्मान की भावना से किए गए थे। एसएलसी ने कहा कि इसलिए वह भी इसी तरह की भावना की उम्मीद करता है, यह देखते हुए कि श्रीलंका ने देश में होने वाले सभी मैचों के लिए सुरक्षा, न्यूट्रैलिटी और प्रोफेशनलिज्म के बारे में पूरा भरोसा दिया है। आखिर में, श्रीलंका क्रिकेट ने पीसीबी से भारत बनाम पाकिस्तान मैच का बॉयकॉट करने या उससे कुछ समय के लिए दूर रहने के किसी भी फैसले पर फिर से सोचने का आदरपूर्वक आग्रह किया और टूर्नामेंट, उसके स्टेकहोल्डर्स और दुनिया भर के लाखों क्रिकेट फैंस के फायदे के लिए पाकिस्तान से श्रीलंका में होने वाले सभी तय मैचों में हिस्सा लेने को कहा।

ICC ने टी-20 विश्वकप के कमेंटेटरों के नामों की घोषणा की

दुबई, वार्ता। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने शुक्रवार को टी-20 विश्वकप 2026 को जीवंत बनाने को लेकर तीक्ष्ण विश्लेषण, खिलाड़ियों के बेजोड़ अंदाज की कहानी को अपनी जानदार आवाज से श्रोताओं तक पहुंचाने वाले दुनिया के दिग्गज कमेंटेटरों के नामों की घोषणा की है। आईसीसी की ओर से जारी की गई कमेंटेरों की सूची में जाने-माने ब्रॉडकास्टर रवि शास्त्री, नासिर हुसैन, इयान स्मिथ और इयान बिशप इस साल के टूर्नामेंट के लिए डायनामिक कमेंट्री टीम की अगुवाई करेंगे। उनके साथ आरोन फिंच भी होंगे। इसमें आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप के अन्य पूर्व विजेता भी शामिल होंगे, जिनमें दिनेश कार्तिक, कुमार संगकारा, सैमुअल बद्री, रॉबिन उथप्पा और कार्लोस ब्रैथवेट शामिल हैं। इस सूची में अन्य दिग्गज नामों में इयोन मॉर्गन, वसीम अकरम, सुनील गावस्कर, मैथ्यू हेडन और रमीज राजा शामिल हैं। इस पैनल में खेल की अन्य जानी-मानी आवाजें भी शामिल हैं, जिनमें डेल स्टेन, माइकल एथरटन, वकार यूनिस, साइमन डूल, शॉन पोलॉक और केटी मार्टिन शामिल हैं। भारत और श्रीलंका में कमेंट्री लाइनअप को प्रमुख ग्लोबल ब्रॉडकास्टर हर्षा भोगले, म्पुमेलेलो मबांगवा, नताली जर्मनोस, डैनी मॉरिसन, एलन विल्किस, इयान वार्ड, मार्क हॉवर्ड, निक नाइट, अथर अली खान, कैस नायडू, बाजिद खान, रौनक कपूर और नियाल ओं ब्रायन ने और मजबूत किया है।

वैभव ने अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में सबसे तेज शतक ठोका

● इंग्लैंड के खिलाफ 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने महज 55 गेंदों में शतक पूरा किया

हरारे, वार्ता। वैभव सूर्यवंशी ने शुक्रवार को इंग्लैंड के खिलाफ अंडर-19 विश्वकप फाइनल में मात्र 55 गेंद में सबसे तेज शतक ठोका। इसके साथ ही वह अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में शतक बनाने वाले तीसरे भारतीय बल्लेबाज बन गए तथा एक पारी में सर्वाधिक छक्के लगाने की उपलब्धि भी हासिल की।

यहां टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम के लिए 14 वर्षीय बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए महज 55 गेंदों में अपना शतक पूरा किया, जोकि विश्वकप के फाइनल का सबसे तेज शतक है। उन्होंने अपनी 175 रनों की पारी में 80 गेंदों का सामना किया और 15 चौके और 15 छक्के उड़ाते हुए इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ा दी। उन्होंने 175 रन में 150 रन केवल चौके और छक्के लगाकर अर्जित किए।

वैभव ने एक सीजन में 23 छक्के लगाकर अंडर-19 विश्व कप में सर्वाधिक छक्के लगाने की उपलब्धि भी हासिल की। उन्होंने 71 गेंदों में सबसे तेज 150 रन बनाने की उपलब्धि भी हासिल की। उन्होंने इंग्लैंड के बेन मायस के रिकार्ड को तोड़ा। बेन मायस ने स्कॉटलैंड के खिलाफ 98 गेंदों में 150 रन बनाए थे। वैभव ने 32 गेंदों में अपना अद्धशतक पूरा किया तथा अगले 50 रन महज 16 गेंदों में ठोक डाले।

संक्षिप्त खेल समाचार

टी-20 विश्व कप से बाहर हो सकते हैं हर्षित राणा

मुंबई, वार्ता। भारतीय तेज गेंदबाज हर्षित राणा 7 फरवरी से भारत और श्रीलंका में होने वाले 2026 टी-20 वर्ल्ड कप से बाहर हो सकते हैं। चैंपियनशिप, जो 24 घंटे के अंदर शुरू होने वाली है, के लिए राणा की संभावित अनुपलब्धता का संकेत भारत के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने दिया। सूर्यकुमार यादव ने वर्ल्ड कप में भारत के पहले मैच की पूर्व संध्या पर कहा कि वह अभी तक बाहर नहीं हुए हैं, लेकिन संदिग्ध लग रहे हैं। हमें शाम तक पता चल जाएगा। बुधवार को वार्म-अप मैच (मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ) के दौरान उन्हें थोड़ी चोट लगी थी, लेकिन स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं है। डिफेंडिग चैंपियन भारत आज मुंबई के वानखेड़े में अमेरिका से भिड़ेगा।

चोटिल हेजलवुड टी-20 विश्व कप से बाहर हुए

सिडनी, वार्ता। भारत और श्रीलंका की मेजबानी में शुरु हो रहे टी-20 विश्वकप से पहले ऑस्ट्रेलिया को लगा झटका, अनुभवी तेज गेंदबाज जॉश हेजलवुड हैमस्ट्रिंग चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो गए है। 35 साल के हेजलवुड ने 12 नवम्बर को शेफील्ड शील्ड के दौरान हैमस्ट्रिंग में चोट लगने के बाद से कोई प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेला है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया की शुरुआती विश्व कप टीम में शामिल होने के बावजूद, तेज गें. दबाज सिडनी में ही रहे, जबकि बाकी टीम इस सप्ताह की शुरुआत से श्रीलंका में हैं। कोलंबो में आयरलैंड के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के पहले ग्रुप-स्टेज मैच से सिर्फ पांच दिन पहले, राष्ट्रीय चयनकर्ता टोनी डोडमेडे ने कहा है कि हेजलवुड समय पर ठीक नहीं हो पाएंगे।

गाइडेन ओडेन के खिलाफ पहला एकल खेलेंगे सुमित

बेंगलुरु, वार्ता। भारत बनाम नीदरलैंड्स डेविस कप वर्ल्ड ग्रुप आई फर्स्ट राउंड मैच के लिए ड्रॉ शुक्रवार को यहां एसएम कृष्णा टेनिस स्टेडियम में घोषित किया गया, जिसमें भारत के टॉप सिगल्स खिलाड़ी सुमित नागल मैच के दोनों दिन घरेलू चुनौती की अगुआई करेंगे। ड्रॉ के अनुसार, शनिवार को पहले दिन नागल का मुकाबला नीदरलैंड्स के गाइ डेन ओडेन से होगा। इसके बाद भारत के दक्षिणेश्वर सुरेश और जेस्पर जान रेंस डी जोंग के बीच दूसरा सिगल्स मैच होगा, जिन्हें डच टीम का नंबर दो खिलाड़ी चुना गया है। रविवार, दूसरे दिन डबल्स मैच से मैच शुरू होगा, जिसमें भारत ने युकी भांबरी और एन श्रीराम बालाजी को अपनी जोड़ी के तौर पर चुना है। उनका सामना डच जोड़ी सैंडर एरेंड्स और डेविड पेल से होगा। डबल्स के बाद, रिवर्स सिगल्स होने हैं, जिसमें नागल जोंग के खिलाफ कोर्ट पर वापसी करेंगे।

टी-20 विश्व कप थीम पर बन रही बनारसी साड़ी

● साड़ी की डिजाइन रेशम रत्न सम्मान से सम्मानित डिजाइनर लक्ष्मी विश्वकर्मा ने तैयार की है

वाराणसी, वार्ता। टी-20 विश्व कप के आगाज से पहले वाराणसी में विश्व कप थीम पर विशेष बनारसी साड़ियां तैयार की जा रही हैं।

काशी के साड़ी व्यापारी एवं काश्याम सृजन फाउंडेशन के ट्रस्टी सर्वेश श्रीवास्तव ने भारतीय क्रिकेट टीम के उत्साहवर्धन के उद्देश्य से यह पहल की है। लोहता स्थित कारखाने में हैंडलूम कारीगर इन साड़ियों को बुन रहे हैं। साड़ी की डिजाइन रेशम रत्न सम्मान से सम्मानित डिजाइनर लक्ष्मी विश्वकर्मा ने तैयार की है। साड़ियों पर विश्व कप ट्रॉफी, बल्ला, गेंद, स्टंप और पिच सहित विभिन्न क्रिकेट प्रतीकों को जरी और ब्रोकेट कतान शैली में उकेरा गया है। श्रीवास्तव ने बताया कि इससे पूर्व भी वे विभिन्न विश्व कप अवसरों पर थीम आधारित बनारसी साड़ियां तैयार करा चुके हैं। उन्होंने कहा कि क्रिकेट के प्रति अपने लगाव के कारण उन्होंने बनारसी शिल्प को क्रिकेट से जोड़ने का प्रयास किया है। इन विशेष साड़ियों में 1983, 2007 टी-20, 2011 और 2024 टी-20 विश्व कप सहित महिला विश्व कप विजेता टीम की उपलब्धियों को भी दर्शाया गया है। बुनकर बहादुर और उनके सहयोगी इन्हें तैयार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे इन साड़ियों को भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों को उपहार स्वरूप देना चाहते हैं। एक साड़ी की अनुमानित कीमत 15 से 20 हजार रुपये बताई गई है।

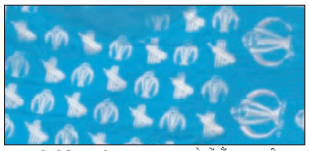

कोयल बोर ने तीसरे दिन पांच रिकॉर्ड तोड़े

मोदीनगर, वार्ता। नेशनल वेटलिफ्टिग चैंपियनशिप 2025-26 आज यादव फार्म हाउस में जारी रही, जिसमें यूथ, जूनियर और सीनियर डिवीजन में महिलाओं की 53 किग्रा कैटेगरी में शानदार टैलेंट दिखाया गया। ज्ञानेश्वरी यादव और कोयल बोर ने पोडियम पर अपना दबदबा बनाया, कोयल बार ने यूथ सेक्शन में 3 नए नेशनल रिकॉर्ड भी तोड़े, जिसमें स्नैच में 78 किग्रा , क्लीन एंड जर्क में 99 किग्रा और ओवरऑल टोटल में 175 किग्रा का पिछला रिकॉर्ड तोड़ा और जूनियर सेक्शन में 2 रिकॉर्ड बनाए, जिसमें स्नैच में 81 किग्रा और ओवरऑल टोटल में 181 किग्रा का रिकॉर्ड तोड़ा (पुराने रिकॉर्ड इंडियन स्टैंडर्ड के थे)। इस कॉम्पिटिशन में ज्ञानेश्वरी यादव ने शानदार परफॉर्मेंस दी, जिन्होंने सीनियर डिवीजन में 186 किग्रा के शानदार टोटल के साथ गोल्ड मेडल जीता। उनके ठीक पीछे पश्चिम बंगाल की कोयल थीं, जिन्होंने कई कैटेगरी में शानदार परफॉर्मेंस दी। कोयल ने सीनियर सेक्शन में सिल्वर मेडल जीता और जूनियर और यूथ दोनों सेक्शन में गोल्ड मेडल हासिल किए।

नीतू, प्रीति सेमीफाइनल में पहुंची

● बॉक्सम एलीट इंटरनेशनल 2026 में भारतीय मुक्केबाज दल ने 19 पदक पक्के कर लिए हैं

ला नुसिया, वार्ता। प्रतिष्ठित बॉक्सम एलीट इंटरनेशनल 2026 में भारतीय मुक्केबाजी दल ने 19 मेडल पक्के कर लिए हैं, तीसरे दिन भी अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए नीतू (51किग्रा) और प्रीति (54किग्रा) सेमीफाइनल में पहुंच गईं, जबकि जदुमणि सिंह (55किग्रा) ने पुरुषों के ड्रॉ में एक और शानदार प्रदर्शन किया।

नए हेड कोच सैंटियागो नीवा के मार्गदर्शन में भारतीय महिला टीम ने 12 मेडल पक्के कर लिए हैं, जबकि भारतीय पुरुष टीम ने सेमीफाइनल से पहले 7 मेडल पक्के कर लिए हैं। नीतू शानदार फॉर्म में थीं, उन्होंने कनाडा की मैकेंजी राइट को 5-0 से हराकर सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की की। प्रीति ने भी स्पेन की मारिया गोंजालेज के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया, लगातार दबाव बनाकर तीसरे राउंड में ही मुकाबला खत्म कर दिया। पूनम (54) ने थाईलैंड की नटनिचा चोंगप्रोंगक्लांग पर 5-0 से एक और शानदार जीत हासिल की, जबकि प्रिया (60) और प्रांजल (65) ने क्रमशः स्पेन की लौरा गैलानो और चेक बॉक्सर विक्टोरिया के खिलाफ सर्वसम्मत जीत दर्ज की। काजल (65) ने कजाकिस्तान की अकबर इचशानोवा को एक कड़े मुकाबले में 4-1 से हराया। पुरुषों की प्रतियोगिता में, जदुमणि सिंह ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा, 55किग्रा वर्ग में चीनी ताइपे के पेंग चिया-फेंग को 5-0 से हराया। मोहम्मद हुसामुद्दीन (60किग्रा) ने यूक्रेन के अली डाहली को सर्वसम्मति से हराकर शानदार प्रदर्शन किया, जबकि सचिन (60किग्रा) ने यूक्रेन के एडर को एक कड़े मुकाबले में 3-2 के फैसले से हराया।

पहलवान नीलम सिरोही ने 50 किग्रा वर्ग में जीता रजत पदक

क्रोएशिया, वार्ता। भारतीय पहलवान नीलम सिरोही ने जागरेब ओपन 2026 कुश्ती टूर्नामेंट में महिलाओं की 50 किलोग्राम फ्रीस्टाइल वर्ग में रजत पदक जीता। गुरुवार को हुए अन्य मुकाबलों में विकी हुड्डा (पुरुष 97 किग्रा), दिनेश धनखड़ (पुरुष 125 किग्रा) और मुस्कान (महिला 50 किग्रा) के कांस्य पदकों के साथ इस साल की पहली विश्व कुश्ती महासंघ (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) रैंकिंग सीरीज में भारत के पदकों की संख्या सात हो गई है। भारत ने टूर्नामेंट में एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक जीते है। नीलम सिरोही ने फाइनल तक पहुंचने के रास्ते में शानदार प्रदर्शन किया। भारतीय पहलवान ने पोलैंड की अगाता वालेरजाक को 10-0 से हराकर शुरुआत की, जिसके बाद क्वार्टर फाइनल में अजरबैजान की एलनूरा मम्मादोवा को 12-2 से हराया। सेमीफाइनल में हमवतन मुस्कान पर 7-4 की जीत ने उन्हें स्वर्ण पदक मुकाबले में पहुंचाया, जहां वह अंडर-23 विश्व चैंपियन जापान की हारुना मोरिकावा से 5-2 से हार गईं। इस बीच, मुस्कान ने सेमीफाइनल में हार के बाद वापसी करते हुए अगाता वालेरजाक को 11-0 से हराकर इस कैटेगरी में कांस्य पदक जीता। पुरुषों के 97 किग्रा वर्ग में, विकी हुड्डा ने अमेरिका के स्टीफन बुकानन प्प से क्वार्टर फाइनल में हार के बाद वापसी की। अमेरिकी पहलवान ने उन्हें 14-7 से हराया। भारतीय पहलवान रेपचेज में पहुंच गए, जहां विकी ने कनाडा के सैमुअल मिकलोस मारिया परेरा को 12-1 से शिकस्त दी। भारतीय पहलवान ने उसी लय को कांस्य पदक मुकाबले में भी जारी रखा, फ्रांस के एडलान विश्खानोव को 8-2 से हराकर पोडियम पर जगह बनाई। दीपक चहल ने भी इसी वेट कैटेगरी में हिस्सा लिया था लेकिन क्वालिफिकेशन राउंड में ही बाहर हो गए। इस बीच, दिनेश धनखड़ का 125 किग्रा का कांस्य पदक पोलैंड के कामिल को. सिओलेक पर पिनफॉल जीत के साथ आया। भारतीय पहलवान क्वार्टर फाइनल में बहरीन के शमिल शरीपोव से 13-1 से हार गए थे, लेकिन रेपचेज में अमे. रिका के डेमेट्रियस थॉमस पर 12-2 की शानदार जीत के साथ वापसी की। महेंद्र बाबासाहेब गायकवाड़ 125किग्रा भार वर्ग के क्वार्टरफाइनल में बाहर हो गए।

टॉप सीडेड रुतुजा भोसले ने किया उलटफेर

● रुतुजा भोसले और पेगटार्न प्लिप्यूच को भी हार का सामना करना पड़ा, लिली ने टूर्नामेंट के अगले दौर में प्रवेश किया

मुंबई, वार्ता। एल एंड टी मुंबई ओपन डब्ल्यूटीए 125के सीरीज के चौथे दिन गुरुवार को महाराष्ट्र स्टेट लॉन टेनिस एसोसिएशन में सिगल्स और डबल्स मुकाबलों में रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। फांगरान टियान ने दिन का सबसे शानदार नतीजा दर्ज किया, उन्होंने टूर्नामेंट की चौथी सीड हैने वैंडविकेल को बाहर कर दिया।

डबल्स कैटेगरी में, टॉप सीडेड जोड़ी रुतुजा भोसले और पेंगटार्न प्लिप्यूच को भी क्वार्टर फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। इस बीच, लिली टैगर ने टूर्नामेंट में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अगले राउंड में जगह बनाई। लानलाना तारारुडी और तातियाना प्रोजोरोवा ने भी सिगल्स ड्रॉ में जीत हासिल की। दिन की शुरुआत एक बड़े उलटफेर के साथ हुई, जब चीन की फांगरान टियान ने चौथी सीड और वर्ल्ड नंबर 135 महिला सिगल्स खिलाड़ी, हैने वैंडविकेल को ढाई घंटे तक चले कड़े मुकाबले में 2-6, 6-4, 6-4 से हराया। टियान, जिन्होंने पहले राउंड में अपनी पहली डब्ल्यूटीए मेन ड्रॉ जीत भी हासिल की थी, ने सेंटर कोर्ट पर पहला सेट हारने के बाद शानदार वापसी करते हुए मुंबई ओपन के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई।

इस बीच कोर्ट 1 पर, थाईलैंड की लानलाना तारारुडी और दक्षिण कोरिया की पार्क सो-ह्यून के बीच एक और लंबा मुकाबला हुआ। पहला सेट हारने के बावजूद, ऑस्ट्रेलियन ओपन मेन ड्रॉ में हिस्सा लेने वाली तारारुडी ने बाकी दो सेटों में अपनी प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ते हुए मैच 3-6, 6-3, 6-0 से जीत लिया, यह मुकाबला दो घंटे से थोड़ा ज्यादा समय तक चला। सातवीं सीड और वर्ल्ड नंबर 128 महिला सिगल्स खिलाड़ी, लिली टैगर ने जापान की एरी शिमिजु के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया और सीधे सेटों में 6-2, 6-2 से जीत हासिल की। 17 साल की इस होनहार खिलाड़ी ने अपनी पावरफुल सर्व और एक-हाथ वाले बैकहैंड एक्शन का जबरदस्त इस्तेमाल किया और गेम को छह ऐस के साथ खत्म किया, जिससे शिमिजू को कभी सेटल होने का मौका नहीं मिला। 2025 जूनियर रौलां गैरो की विनर का मुकाबला दूसरी सीड और 2024 की मुंबई ओपन चैंपियन, डारजा सेमेनिस्टाजा से होगा। नौवीं सीड तातियाना प्रोजोरोवा ने 19 साल की क्रिस्टियाना सिदोरोवा को 6-4, 6-1 से हराकर मैच सीधे सेटों में जीत लिया। फिलीपीन महिला ओपन की सेमीफाइनलिस्ट प्रोजोरोवा ने दूसरे सेट में बेहतरीन बेसलाइन कंट्रोल के साथ शानदार प्रदर्शन किया और टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल स्टेज में जगह बनाई। डबल्स क्वार्टर फाइनल में, टॉप सीडेड जोड़ी रुतुजा भोसले और थाईलैंड की पेंगटार्न प्लिप्यूच का मुकाबला सेंटर कोर्ट पर निकोल फोसा ह्यूर्गो और उनकी पार्टनर मनंचया सवांगकेव से हुआ। पहला सेट जीतने के बाद, भारत की नंबर 1 महिला खिलाड़ी रुतुजा और प्लिप्यूच अपनी शुरुआती सफलता को दोहरा नहीं पाईं, क्योंकि फोसा ह्यूर्गो और मनंचया ने टाईब्रेकर में जीत हासिल की और 4-6, 6-1, (11-9) से मैच जीत लिया।

नीदरलैंड टीम डेविस कप मुकाबले के लिए तैयार: पॉल हारहुइस

● कहा: पिछले चार दिनों में तैयारियां बहुत अच्छी रही हैं और बेंगलुरु की गर्मजोशी भरी मेहमाननवाजी की तारीफ की

बेंगलुरु, वार्ता। डच डेविस कप टीम इस वीकेंड भारत के खिलाफ कड़े मुकाबले के लिए न सिर्फ तैयारी कर रही है, बल्कि अपनी तैयारियों को बेहतर बनाने के साथ-साथ बेंगलुरु की संस्कृति में भी पूरी तरह घुल-मिल गई है। शहर की ऊंचाई के हिंसाब से खुद को ढालने के लिए सामान्य से पहले पहुंची टीम ने स्थानीय जानकारी के लिए डच महिला टीम से भी सलाह ली है और भारतीय खाने और अनुभवों का आनंद लिया है। मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए, कप्तान पॉल हारहुइस ने कहा कि टीम को शानदार सुविधाओं और भारतीय एसोसिएशन से मिले मजबूत समर्थन से फायदा हुआ है। उन्होंने कहा कि पिछले चार दिनों में तैयारियां बहुत अच्छी रही हैं,ष और बेंगलुरु की गर्मजोशी भरी मेहमाननवाजी की तारीफ की। भारतीय टीम की ताकत को मानते हुए, हारहुइस ने कहा कि यह वीकेंड मुश्किल होगा। दोनों टीमें मजबूत हैं, और यह उस दिन के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा। उन्होंने बताया कि खिलाड़ियों को खास तौर पर स्थानीय परिस्थितियों, जिसमें ऊंचाई भी शामिल है, को संभालने के लिए चुना गया है, और टीम ने एडजस्ट करने के लिए अतिरिक्त दिन लिए हैं - जो कि मुकाबले से पहले सामान्य दो या तीन दिनों से कहीं ज्यादा हैं। हारहुइस ने दोपहर और शाम के मैचों के बीच खेलने की परिस्थितियों में अंतर पर भी ध्यान दिया, और कहा कि टीम सभी स्थितियों के लिए तैयार है। ज्यादातर घरेलू दर्शकों का सामना करने पर, उन्होंने कहा कि हमें दर्शकों की एनर्जी पसंद आती है, भले ही वह हमारे खिलाफ हो। हमें अपनी टीम और घर से बहुत अच्छा सपोर्ट मिलता है, जो हमें मोटिवेट करता है। विदेशी टीम ने टेनिस कोर्ट से परे स्थानीय संस्कृति को भी एक्सप्लोर किया है। हारहुइस ने बताया कि अगर टीम जीतती है तो वे फैंस का मनो. रंजन करने के लिए एक खास बेली-डांसिग परफॉर्मेंस देंगे, जो उनके रहने के दौरान मुकाबले और भाईचारे के मेल को दिखाता है। प्रेस कॉन्फेंस खत्म करते हुए, कप्तान ने कहा कि टीम ष्अच्छी तरह से तैयार है और खेलने के लिए उत्साहित है, और शनिवार को एसएम कृष्णा टेनिस स्टेडियम में होने वाले मुकाबले के लिए उत्सुकता जताई।

फ्लू से लड़कर मंधाना ने RCB को जिताया खिताब

आरसीबी के कोच ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ छह विकेट की जीत के बाद कहा कि स्मृति मंधाना को तेज बुखार था और हालत सच में खराब थी

वडोदरा। स्मृति मंधाना ने फ्लू से लड़ते हुए ना सिर्फ रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को दूसरी बार डब्ल्यूपीएल खिताब जिताया, बल्कि खुद सामने से नेतृत्व करते हुए इस जीत में 41 गेंदों पर 87 रन बनाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आरसीबी के प्रमुख कोच मलोलन रंगराजन ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ छह विकेट की जीत के बाद कहा कि उन्हें (स्मृति को) तेज बुखार था और हालत सच में खराब थी। लेकिन फिर भी वह मैदान पर आईं और एक पल के लिए भी किसी को महसूस नहीं होने दिया कि उन्हें फ्लू है। टीम में यह किसी को पता तक नहीं था। यही स्मृति हैं। जब आज दोपहर मैंने उनसे बात की तो उन्होंने कहा, 'नहीं, मालो, कोई प्रॉब्लम नहीं, मैं खेलूंगी।' यही उनका वर्क एथिक है। मंधाना के ऊंचे मानकों के हिंसाब से भी यह पारी बड़े दबाव में लक्ष्य का पीछा करने की एक शानदार मिसाल थी। शुरुआत में उन्होंने अपनी ऑस्ट्रेलियाई साथी जॉर्जिया वॉल को स्ट्राइक दी और फिर अपने खेल के रफ्तार को भी बढ़ाया। पांचवें ओवर के अंत में मंधाना पांच गेंदों पर छह रन पर थीं, उसके बाद उन्होंने तबाही मचानी शुरू की। उनकी पारी की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि उन्होंने दिल्ली की स्पिन गेंदबाजी को कैसे तोड़ा। आरसीबी की इकलौती बाएं हाथ की बल्लेबाज होने के नाते, मंधाना ने श्री चरणी की बाएं हाथ की स्पिन पर हमला किया, जो वडोदरा चरण में काफी असरदार रही थीं। इससे डीसी की कप्तान जेमिमा रॉड्रिग्स के पास कोई विकल्प नहीं बचा। मंधाना ऐसे जोन में थीं, जहां वह एक जैसी गेंदों को अलग-अलग जगह भेज रही थीं। वह कभी पीछे हटकर शॉर्ट गेंद को प्वाइंट के ऊपर से मार रही थीं, तो कभी स्टंप्स के एक्रॉस जाकर उसी तरह की गेंद को लॉन्ग-ऑन और डीप मिडविकेट के बीच उड़ा रही थीं। इतना अनुभव होने के बावजूद स्नेह राणा के पास भी मंधाना के आक्रमण का कोई जवाब नहीं था। आरसीबी ने हर ओवर में कम से कम एक बाउंड्री लगाई और मंधाना का पीछे हटकर राणा को वाइड लॉन्ग-ऑफ के ऊपर से इनसाइड आउट मारना इसकी एक बानगी भर थी। उन्होंने इस सीजन का अंत टॉप स्कोरर के रूप में 377 रनों के साथ किया। रंगराजन ने कहा कि मुझे लगता है कि उन्होंने अपनी बेहतरीन पारियों में से एक को फाइनल के लिए बचाकर रखा था। जिस तरह से उन्होंने बल्लेबाजी की, वह अमानवीय? मुझे नहीं पता इसे क्या कहूं। इतनी क्लासी, इतनी एलिगेंट, ऐसा नहीं लगा कि वह दबाव में हैं। उन्हें देखकर साफ दिख रहा था कि वह पूरी तरह नियंत्रण में थीं। वह गेंद को टाइम कर रही थीं, हिट कर रही थीं और तय कर रही थीं कि कहां आक्रमण करना है। उन्होंने मैच से दो दिन पहले अभ्यास किया था और हम उनकी बल्लेबाजी को लेकर काफी बातचीत कर रहे थे। मुझे लगता है कि उनका आखरी अभ्यास सत्र (बुधवार को) उनके बेहतरीन सत्रों में से एक था। सोच में यह बदलाव लीग के आखिरी मैच में आया, जब आरसीबी लगातार दो हार के बाद वापसी करना चाह रही थी। प्ले-ऑफ में उनकी जगह पक्की थी, लेकिन उन्होंने यूपी वॉरियर्ज के खिलाफ 27 गेंदों पर नाबाद 54 रन बनाकर अपनी टीम को सीधे फाइनल में पहुंचा दिया। यह पारी इसलिए भी अहम थी क्योंकि उन्होंने तेज खेलने के साथ-साथ शॉट चयन

मंगलौर कोतवाली क्षेत्र के घोसीपुरा में पुरानी रंजिश व अवैध खनन की शिकायत करने पर

युवक को खनन माफिया ने जमकर पीटा, हायर सेंटर रेफर

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम घोसीपुरा में खनन की शिकायत करना एक ग्रामीण को भारी पड़ गया। गांव निवासी हाकम सिंह ने क्षेत्र में चल रहे खनन की शिकायत खनन विभाग से कर कार्रवाई की मांग की थी। शुक्रवार को खनन टीम हाकम सिंह को साथ लेकर मौके पर पहुंची, लेकिन वहां मौजूद खनन माफियाओं ने अचानक हमला कर दिया।

बताया जा रहा है कि हमलावरों के तेवर इतने आक्रामक थे कि खनन टीम को अपनी जान बचाकर मौके से भागना पड़ा। इसी दौरान खनन माफियाओं ने हाकम सिंह को बेरहमी से पीट दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल हाकम सिंह को उपचार के लिए सिविल अस्पताल रुड़की में भर्ती कराया गया। उनकी हालत को देखते हुए डॉक्टरों की निगरानी में इलाज चल रहा है। घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है और हमलावरों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात कही जा रही है।कोतवाली प्रभारी

पीड़ित को मंगलौर कोतवाली पुलिस ने पहुंचाया अस्पताल, आरोपी फरार

अमरजीत सिंह ने बताया कि ग्राम घोसीपुरा में जेसीबी से मिट्टी खनन चल रहा था वही हाकम सिंह खनन टीम को साथ लेकर मौके पर पहुंचा तो खनन माफिया द्वारा उसके साथ मारपीट की गई जिससे उसके चोट आई है और उसे रुड़की सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है उनका कहना है कि तहरीर आने पर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी

नन माफियाओं के हौसले बुलंद खनन टीम ने भी भागकर बचाई जान

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। जनपद में अवैध खनन का खेल हर तरफ जारी है और खनन माफियाओं के हौसले कितने बुलंद है इस बात का अंदाजा है इसी बात से लगाया जा सकता है कि शिकायतकर्ता को खनन टीम के साथ जाना अपनी जान बचाने के लिए उल्टे पैर भागना पडा। पीडित को भी मंगलौर कोतवाली पुलिस ने जाकर बचाया और अस्पताल भर्ती कराया। तो पीडित की जान बच पायी वरना ऐसा लग रहा था कि शिकायतकर्ता का आज बचना मुश्किल है।

बताया जा रहा है कि पीडित की आरोपियों से पुरानी भी रंजिश हैं क्योंकि शिकायतर्ता उनके अवैध काम की लगातार शिकायत करता रहता है जिससे आरोपी पहले से ही रंजिश रखते हैं। बताते हैं कि जैसे ही खनन की टीम शिकायतकर्ता को साथ लेकर जब मौके पर पहुंची तो खनन माफियाओं ने पहले तो देखते ही शिकायकर्ता को गाली गलोज करते हुए पीटना शुरू कर दिया और खनन की टीम पर भी आग बबूला हो गए और फिर शिकायकर्ता के साथ मारपीट के दौरान हालत बिगड़ने पर खनन की टीम तो चुपचाप वहां से भाग आई लेकिन शिकायतकर्ता को लाठी डंडों से जमकर कूटते रहे। सूचना पर तुरंत ही मंगलौर कोतवाली पुलिस पहुंची तो आरोपी वहो स फरार हो गये लेकिन गंभीर हालत में पीडित को कोतवाली ने खुद अस्पताल पहुंचाया और हालत गंभीर होने पर हायर सैंटर रेफर किया गया। वहीं मंगलौर कोतवाली पुलिस का कहना है कि आरोपियों को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जायेगा। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा जायेगा। इस घटना से साफ हो गया है कि जनपद में खनन माफिया के हौसले कितने बुलंद हैं अब से पहले भी कई क्षेत्रों में खनन माफियाओं ने शिकायतकर्ताओं के साथ मारपीट की है वहीं खनन टीम के साथ भी खनन माफियाओं द्वारा अभद्रता करना आम बात है। तो ऐसे में किस तरह खनन माफियाओं पर अंकुश लगेगा यह खनन माफिया प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती बने हुए हैं।

आठ पुलिस अधिकारियों को नई जिम्मेदारी

नताशा रुड़की व अभिनय मंगलौर के सीओ नियुक्त

शाह टाइम्स संवाददाता

रूड़की। नव नियुक्त पुलिस उपाधीक्षक के जनपद आगमन के बाद वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र डोभाल ने राजपत्रित पुलिस अधिकारियों के कार्यक्षेत्र में बदलाव करते हुए अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंप दी हैं। जारी आदेश के अनुसार अधिकारियों को निम्नानुसार दायित्व दिए गए हैं-जितेंद्र चौधरी-पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) निशा यादव ख़ पुलिस अधीक्षक (तकनीकी एवं महिला सुरक्षा), सुरेंद्र प्रसाद बलूनी ख़ क्षेत्राधिकारी सदर/लाइन/ कार्यालय, संजय चौहान ख़ क्षेत्राधिकारी सर्किल ज्वालापुर / आँकिक कार्यालय, नताशा सिंह क्षेत्राधिकारी सर्किल रुड़की, अभिनय चौधरी ख़ क्षेत्राधिकारी सर्किल मंगलौर, देवेंद्र सिंह नेगी ख़ क्षेत्राधिकारी सर्किल लक्सर, विपेंद्र सिंह क्षेत्राधिकारी यातायात/ कुंभ मेला 2027/ थाना बुग्गावाला।

बहुउद्देशीय मंगलौर पूर्वी किसान सहकारी समिति की नीलम निर्विरोध संचालक निर्वाचित

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। बहुउद्देशीय मंगलौर पूर्वी किसान सेवा सहकारी समिति लिव के निर्वाचन क्षेत्र मुण्डलाना प्रथम की रिक्त हुई संचालक की सीट पर हुई नामांकन प्रक्रिया में निर्वाचन अधिकारी जसवीर कुमार ने आज नीलम पत्नी अमरजीत निवासी मुण्डलाना को निर्विरोध संचालक निर्वाचित घोषित किया।

जानकारी के अनुसार निर्वाचन अधिकारी जसवीर कुमार ने बताया कि नवंबर में हुई चुनावी प्रक्रिया में निर्वाचन क्षेत्र मुंडलाना प्रथम से निर्वाचित हुए संचालक सुरेशपाल का निधन होने के कारण रिक्त हुई सीट पर नामांकन प्रक्रिया में एक ही नामांकन नीलम पत्नी अमरजीत निवासी मुण्डलाना द्वारा दाखिल किया गया, एक ही नामांकन दाखिल होने पर आज नीलम पत्नी अमरजीत निवासी मुण्डलाना को निर्विरोध संचालक निर्वाचित घोषित किया गया, इस अवसर पर प्रबन्ध निदेशक अजय कुमार, चेयरमैन अवनीश सिंह, वाईस चेयरमैन सन्नी कुमार समेत समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे!

आज रुड़की में चलेगा स्वच्छता अभियान

रुड़की। नगर को स्वच्छ, सुंदर एवं आदर्श शहर के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से आगामी 7 फरवरी को जिला प्रशासन एवं रुड़की नगर निगम द्वारा संयुक्त रूप से महा स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। अभियान की तैयारियों को लेकर आज नगर निगम सभागार में एक महत्वपूर्ण समन्वय बैठक आयोजित की गई।

बैठक दीपक रामचंद्र सेठ, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट, रुड़की की देखरेख में संपन्न हुई। बैठक में जिला प्रशासन एवं नगर निगम के अधिकारियों के साथ-साथ विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि, सामाजिक एवं शिक्षण संस्थानों के पदाधिकारी, व्यापारी वर्ग तथा बार एसोसिएशन के पदाधिकारी भी शामिल रहे। पत्रकारों को जानकारी देते हुए राकेश चंद्र तिवारी, मुख्य नगर आयुक्त, रुड़की नगर निगम ने बताया कि यह महा स्वच्छता अभियान मुख्यमंत्री के निर्देशन में प्रदेशभर में चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य नगर निगमों एवं नगर निकायों को स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतर रैंक दिलाना है, वहीं हरिद्वार जनपद को मॉडल सिटी के रूप में नंबर-वन रैंक पर पहुंचाना भी इसका प्रमुख लक्ष्य है। इस अवसर पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दीपक रामचंद्र सेठ ने कहा कि "शहर की स्वच्छता केवल एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली सामूहिक जिम्मेदारी है। प्रशासन, नगर निगम और समाज के सभी वर्ग मिलकर यदि कार्य करें तो रुड़की को स्वच्छ और सुंदर शहर बनाया जा सकता है। महा स्वच्छता अभियान का उद्देश्य लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करना है। हमें विश्वास है कि नागरिकों के सहयोग से रुड़की नगर प्रदेश में एक आदर्श मॉडल सिटी के रूप में अपनी पहचान बनाएगा।

लक्सर विधायक ने किया कब्रिस्तान की बाउंड्री वाल का उद्घाटन

हर वर्ग-क्षेत्र में कराया जा रहा है विकास : शहजाद

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। विधायक मोहम्मद शहजाद ने क्षेत्र की भीक्कमपुर जीतपुर ग्राम पंचायत में 22 लाख रुपए से बनी कब्रिस्तान की बाउंड्री का उद्घाटन किया है।

जानकारी के अनुसार लक्सर विधायक मोहम्मद शहजाद के द्वारा बताया गया कि लोगों की मांग पर लक्सर विधानसभा क्षेत्र मे सार्वजनिक काम किये जा रहे हैं उन्होंने कहा सर्व समाज ने कहा था कि भीक्कमपुर जीतपुर में कब्रिस्तान की बाउंड्री बना दी जाए जिससे बराबर वाले को कभी भी कोई परेशानी ना हो उनकी मांग पर भीक्कमपुर में 22 लाख रुपए से कब्रिस्तान की बाउंड्री का निर्माण किया गया है जो सभी के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा उन्होंने कहा जो भी बचे हुए कार्य है उनको भी लगातार किया जा रहा है किसी को भी अपने क्षेत्र में काम के लिए निराश नहीं होने दिया जाएगा। विधायक हाजी मोहम्मद शहजाद ने कहा कि वह अपने विधानसभा क्षेत्र के हर गांव में हर वर्ग में बिना भेदभाव विकास कार्य कर रहे हैं कब्रिस्तान की बाउंड्री वाल हो या मंदिरों की बाउंड्री हो सबको साथ लेकर चल रहे हैं वहीं क्षेत्र में सड़कों का भी जाल बिछाया जा रहा है उन्होंने कहा कि क्षेत्र का विकास ही उनकी पहली प्राथमिकता है। और क्षेत्र के विकास के लिए ही पूरी ईमानदारी जिम्मेदारी से काम कर रहे हैं। बाउंड्री वॉल के उद्घाटन के लिए जैसे ही गांव में पहुंचे तो सैकड़ो की संख्या में लोगों ने शहजाद विधायक का जोरदार स्वागत किया।

खेतों से किसानों के नलकूपों के विद्युत उपकरण चोरी

शाह टाइम्स संवाददाता

झबरेड़ा। ग्राम डेलना में गुरुवार रात्रि किसानों के खेतों से नलकूपों से विद्युत उपकरण चोरी कर लिए गए।

ग्राम डेलना निवासी डॉक्टर राज सिंह भूरा सिंह लाहौर सिंह भवँर सिंह लोकेश कुमार सुरेश कुमार आदि ने बताया कि उनके तथा कुछ अन्य किसानों के खेतों में स्थित नलकूपों से गुरुवार रात्रि के समय किन्हीं चोरों द्वारा विद्युत उपकरण विद्युत केबल स्टार आदि चोरी कर लिए गए। उक्त किसानों का कहना है कि बार-बार उनके खेतों में स्थित नलकूपों से विद्युत उपकरण चोरी होने से गांव के सभी किसान परेशान हो गए हैं। कई बार पुलिस को भी सूचना दी गई लेकिन कोई लाभ नहीं हो पा रहा है। थानाध्यक्ष अजय शाह का कहना है कि किसानों के नलकूपों से विद्युत उपकरण चोरी करने वाले चोरों को शीघ्र पता लगाकर उनके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

आमजन के लिए जी का जंजाल बना लक्सर रेलवे क्रॉसिंग

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। लक्सर को रुड़की से जोड़ने वाली मुख्य सड़क पर बहादरपुर फाटक के पास हरिद्वार लक्सर रेलवे लाईन पर बना रेलवे क्रॉसिंग आजकल राहगीरों के बड़ी परेशानी का सबब बना हुआ है ।यह रेलवे क्रॉसिंग घन्टो बंद पड़ा रहता है इस रेलवे लाइन से 24 घण्टे में करीब आने जाने में 60 से ज्यादा रेलगाडी गुजरती है जिनमे से ज्यादातर गाड़िया बाईपास से होकर गुजरती है जिसके चलते रेलवे क्रॉसिंग को बहुत पहले बंद कर दिया जाता है आम जनता को पहले से बंद गाड़ियों को गुजरने का इंतजार करना पड़ता है और लोग आधा एक घंटा खड़े रहते हैं कोई बीमार हो या मजबूर सभी को ट्रेन गुजरने का इंतजार रहता है अगर इसी तरह से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़े तो कुछ केस बहुत ज्यादा सीरियस भी होते हैं जो अपने बीमार को रुड़की ले जाना चाहते हैं लेकिन फाटक ज्यादा देर बंद होने से लोग बहुत ज्यादा परेशान हो जाए सरकार को इंग फाटक पर भी ध्यान देना चाहिए जिससे आमजन अपने जरूरी काम के लिए रुड़की आ जा सके

लंढौरा में रुड़की-लक्सर मार्ग पर घंटों लगा रहा जाम

शाह टाइम्स संवाददाता

लंढौरा। शुक्रवार की दोपहर लंढौरा में करीब दो घंटे तक जाम लगा रहने से लोगों को भारी परेशानीयों का सामना करना पड़ा। लोगों का कहना है कि साप्ताहिक पीठ ठेकेदार व दुकानदारों की मनमानी के चलते सड़क किनारे दुकान लगाने के कारण शुक्रवार के दिन अक्सर जाम लग जाता है। लंढौरा में शुक्रवार की दोपहर कस्बे के रुड़की-लक्सर मार्ग पर करीब दो घंटे तक जाम लगा रहा। इस दौरान रुड़की लक्सर, मंगलौर, गाधारीना और जौरासी मार्ग पर वाहनों की लंबी कतार लगी रही। लोगों का कहना है कि दोपहर करीब 12 बजे जाम लगने लगा था। जो 2 बजे तक लगा रहा। दो घंटे तक जाम में फंसे रहने से राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा, दुकानदार रविकान्त धीमान, तौसीफ, वरुण अग्रवाल , हसीन हैदर, अमित गिरी, फारूक, सद्दाम, नौशाद आदि का कहना है कि शुक्रवार को साप्ताहिक पीठ में आने वाले दुकानदारों द्वारा सड़क से हटाकर दुकान लगाने के कारण अक्सर जाम लग जाता है। लोगों का कहना है कि रेलवे स्टेशन मार्ग पर फल व सब्जी विक्रेताओं द्वारा किया गया अतिक्रमण भी जाम लगने में मददगार साबित होता है। नगर पंचायत ईओ हेमंत गुप्ता का कहना है कि समय समय पर दुकानदारों को चेतावनी दी जाती रहती है। शुक्रवार को लगने वाले जाम के संबंध में उन्होंने पीठ ठेकेदार को सख्त हिदायत देने की बात कही।

कांग्रेसियों में मनरेगा बदलने पर आक्रोश

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। क्षेत्र के खड़जा कुतुबपुर गांव राकेश शर्मा के आवास पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा मनरेगा बचाव को लेकर मीटिंग का आयोजन किया गया है कांग्रेस जिला अध्यक्ष बालेश्वर सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार हिंदू मुस्लिम राजनीति करती है मनरेगाका नाम बदलने से किसी को भी ऐतराज नहीं है लेकिन उनकी नियत पर शक है कि यह लोग मनरेगा को खत्म कर रहे हैं उन्होंने कहा कांग्रेस ने इस योजना की शुरुआत की थी इसीलिए कांग्रेस पार्टी मनरेगा को लेकर गांव से विधानसभासंसद तक मनरेगा बचाओ प्रदर्शन करेगी जिला पंचायत मेंबर संजय सैनी ने कहा कि इस तरह से यह डबल इंजन के सरकार लोगों को गुमराह कर रही है इस सरकार पर बागगंगा सोलानी नदी बांध कांग्रेस के द्वारा बांध बनाया गया था उसकी मरम्मत भीनहीं हुई है और मनरेगा योजना को बंद करने के फिराक में लगी हुई है उन्होंनेकहा कि विधानसभा में जो चुनाव लड़ेगा वह लक्सर विधानसभा का ही होगा।

न्यायालय से फरार वारंटी दबोचा

झबरेड़ा। काफी समय से वांछित चल रहे एक वारंटी को पुलिस ने गाजियाबाद से गिरफ्तार कर लिया है। थानाध्यक्ष अजय शाह ने बताया कि ग्राम सुसाडी निवासी प्रदीप कुमार काफी समय से मारपीट व धोखाधड़ी के मामलों में काफी समय से वांछित चल रहा था ।न्यायालय द्वारा उक्त के खिलाफ गैर जमानती वारंट के साथ-साथ कुर्की वारंट भी जारी किया गया था। पुलिस द्वारा गुरुवार रात्रि उक्त के घर ग्राम सु साड़ी में दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया गया। शुक्रवार को उक्त आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया है।

लंढौरा चेयरमैन ने अधीक्षण अभियंता से की

250 केवी के ट्रांसफॉर्मर लगाने की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

लंढौरा। नगर पंचायत अध्यक्ष डॉ नसीम ने विधुत विभाग के अधीक्षण अभियंता से मुलाकात कर लंढौरा में कम वोल्टेज के चलते अतिरिक्त लोड पड़ने पर आए दिन फूंक रहे कम ट्रांसफार्मरों को बदलकर उनकी जगह 250 केवी के ट्रांसफार्मर लगाने की मांग की है।

नगर पंचायत अध्यक्ष डॉ नसीम ने शुक्रवार को विधुत विभाग के अधीक्षण अभियंता से मुलाकात कर दिए मांग पत्र में बताया कि लंढौरा में अधिकांश जगहों पर 25 झट व 100 झट के ट्रांस्फार्मर लगे हुए हैं। जिनके कारण कस्बे में विद्युत सप्लाई में बहुत कम वॉल्टेज आ रहे है। कम वॉल्टेज होने से ट्रास्फार्मर अतिरिक्त लोड होने के कारण बार-बार फूंक कर खराब हो जाते है। उन्होंने बताया कि उक्त ट्रास्फार्मरों के कम वॉल्टेज होने के कारण लोगों के पीने हेतु पानी भरने पशुओं के लिए चारा कटान के कार्य नही हो पा रहे है साथ ही घर में लगे उपकरण भी कम वॉल्टेज से खराब हो रहे हैं। नगर पंचायत अध्यक्ष ने आगामी गर्मियों व रमजान माह को देखते हुए पुराने ट्रांसफार्मरों की जगह 250 केवी के ट्रांसफार्मर बदलने की मांग की है। अधीक्षण अभियंता ने उन्हें जल्द ही समस्या के समाधान का आश्वासन दिया है।

डायट में जेंडर सेंसटाइजेशन कार्यशाला

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। रुड़की, हरिद्वार उत्तराखंड) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) रुड़की के सभागार में तीन दिवसीय जेंडर सेंसटाइजेशन कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। कार्यशाला का उद्घाटन जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के प्राचार्य मेराज अहमद ने किया।

जानकारी के अनुसार रुड़की के सभागार में तीन दिवसीय जेंडर सेंसटाइजेशन कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा समाज के विकास में जेंडर समानता का होना अति आवश्यक है क्योंकि समाज के विकास में महिला एवं पुरुष का समान योगदान रहता है। कार्यशाला में डॉक्टर गरिमा डागर, कविता वर्मा (कार्यक्रम समन्वयक)एवं प्रेरणा बहुगुणा ने उपस्थित प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले को प्रशिक्षण देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यशाला की प्रथम दिन जेंडर एवं लिंग की अवधारणा, समाजीकरण में परिवार एवं विद्यालय की भूमिका पर पर गहन चर्चा हुई। कार्यशाला में प्रकाश चंद्र कुलासरी, डॉक्टर कमल कांत बरूआ, सतवीर पांचाल, प्रदीप कुमार, आलोक पवार, संध्या पाल, आलोक द्विवेदी एवं सपना रानी आदि उपस्थित रहे।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

शनिवार, 7 फरवरी 2026

Dainikshahtimes@gmail.com For Articles

बढ़ा समय

शुक्रवार को उप्र में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण अभियान को लेकर मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिनवा ने कहा कि अब दस अप्रैल को अंतिम मतदाता सूची जारी होगी। जोकि पहले 6 मार्च को होनी थी। उनका कहना था कि ऐसा मतदाताओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इस तरह दावा-आपत्ति की अवधि एक माह बढ़ाकर 6 मार्च तक कर दिया गया है। वहीं मैपिंग से जुड़े सभी कार्यों की प्रक्रिया 27 मार्च तक पूरी करने की बात उन्होंने कही। रिनवा के अनुसार मतदाता सूची को शुद्ध बनाने के उद्देश्य से व्यापक स्तर पर दावा-आपत्ति और मैपिंग की प्रक्रिया जारी है। अब तक फार्म 7 के कुल 82 हजार 684 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जबकि फार्म 6 के अनुसार 37 लाख 80 हजार 414 आवेदन आए हैं। फार्म 6 के आवेदन लगातार बढ़ने की बात भी उन्होंने कही है। उनका कहना था कि इस प्रक्रिया के दौरान लगभग एक करोड़ 4 लाख मतदाता ऐसे पाए गए, जिनमें तार्किक विसंगति थी और इन्हीं के कारण उन्हें सूची में शामिल नहीं किया गया और अब इन्हीं को नोटिस भेजे जा रहे हैं। रिनवा ने यह भी बताया कि कुल 3 करोड़ 26 लाख मतदाताओं को नोटिस भेजे जाने हैं, जिनमें से अब तक 2 करोड़ 37 लाख नोटिस जनरेट हो गए हैं, इनमें से 86 लाख मतदाताओं को वितरित किए जा चुके हैं। अब तक 30 लाख 30 हजार मतदाताओं की सुनवाई पूरी कर ली गई है। एसआईआर का काम पूरे जोरो-शोरों से चल रहा है, लेकिन साथ-साथ विवाद भी चल रहा है। जहां चुनाव आयोग बराबर दावा कर रहा है कि कोई भी पात्र उम्मीदवार नहीं छोड़ा जाएगा। वहीं तमाम विपक्षी नेता चुनाव आयोग की नीयत पर संदेह जता रहे हैं और वह साफ कह रहे हैं कि एसआईआर का असली मकसद नाम जोड़ना नहीं बल्कि नामों में कटौती करना है। यह देखना किसी विडंबना से कम नहीं है कि कोई भी पक्ष इस संबंध में अपने स्टैंड से पीछे हटता दिखाई नहीं दे रहा है। तमाम विपक्षी नेता जिसमें राहुल गांधी, अखिलेश यादव, ममता बनर्जी जैसे नाम शामिल हैं, खुलकर चुनाव आयोग की आलोचना कर रहे हैं और उसको भाजपा का एजेंट तक कह रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ चुनाव आयोग की सेहत पर किसी तरह का कोई फर्क पड़ता दिखाई नहीं दे रहा है और वह अपने काम को अपने तरीके से आगे बढ़ाते जा रहे हैं। इसमें कोई दोराय नहीं कि मतदाताओं की जो लिस्ट बने वह पारदर्शी और निष्पक्ष हो और उसमें किसी तरह का भेदभाव नहीं दिखाई देना चाहिए, तो वहीं चुनाव आयोग का यह भी दायित्व बनता है कि वह सत्ता पक्ष व विपक्ष को समान रूप से साथ लेकर आगे बढ़े। अगर एक पक्ष को उस पर विश्वास नहीं होगा, तो फिर चुनाव की निष्पक्षता पर भी सवाल उठेगा और जब सवाल उठेंगे तो लोगों के मन में भी संशय पैदा होगा। ऐसे में यह काम मनमानी से नहीं बल्कि सहमति के आधार पर होना चाहिए।

ब्राह्मण समाज का अपमान और अनादर

फिल्म घूसखोर पंडित में पंडित शब्द को लेकर की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणी बेहद दुखद और चिंताजनक है, अब फिल्मों के माध्यम से भी एक विशेष वर्ग का अपमान किया जा रहा है, जिससे पूरे देश में आक्रोश व्याप्त है, फिल्म में पंडित को घुसपैठिया बताकर पूरे ब्राह्मण समाज का अपमान और अनादर किया गया है, इस तरह की जातिसूचक टिप्पणियां सामाजिक सौहार्द को नुकसान पहुंचाने वाली हैं और इन्हें किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जा सकता, बसपा इस तरह की टिप्पणी की कड़ी निंदा करती है, ऐसी जातिसूचक और समाज को बांटने वाली फिल्म पर तत्काल प्रतिबंध लगाया जाए, किसी भी माध्यम से किसी समाज को अपमानित करना न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि कानून-व्यवस्था और सामाजिक समरसता के लिए भी घातक है। **-सुश्री मायावती, अध्यक्ष, बहुजन समाज पार्टी**

चैनलों का खेल खत्म, सरेंडर हो रहे हैं लाइसेंस

पवन सिंह

भारतीय न्यूज चैनलों का भविष्य क्या दांव पर लग चुका है? बड़ी संख्या में न्यूज चैनलों से दर्शक विमुख हुए हैं। तमाम दर्शकों ने विगत कुछ सालों से न्यूज चैनलों को आंख तक नहीं लगाया है। मात्र 25 सालों में ही न्यूज चैनल अपनी विश्वसनीयता और अपना विशालकाय दर्शक वर्ग खो देंगे, ऐसा नहीं सोचा गया था लेकिन यह हो चुका है। न्यूज चैनल्स के दर्शक अब सिरे से गायब हो चुके हैं। इसका बहुत बड़ा कारण है चौनलों का जनसरोक. ारी खबरों से दूर होना और पूरा दिन सांप्रदायिक बहसों को हवा देना। दरअसल, भारतीय चैनल्स एक्सपो हो चुके हैं और यह प्रकृति का नियम है कि जो एक बार एक्सपोज हो जाता है वह हमेशा के लिए हाशिए पर चला जाता है। विश्वसनीयता का धूलधूसरित होना न्यूज चैनलों के विनाश का प्रमुख कारण बन रहा है। एक उदाहरण देना चाहूंगा जैसे ही दिल्ली के एक बड़े हिंदी न्यूज चैनल को एक विशालकाय उद्योगपति ने टेक ओवर किया, उसके कुछ ही महीनों बाद चैनल का एक बड़ा दर्शक वर्ग उस चैनल से भाग खड़ा हुआ। अब हुआ यह कि चैनल संचालक जनता से दूर हटे और जनता उनसे दूर हुई। आप न्यूज चैनल तो खोल सकते हैं, लेकिन दर्शक वर्ग किसी भी कीमत पर नहीं ला सकते। आज हालात यह हो चले हैं कि तमाम न्यूज चैनलों ने अपने-अपने ब्राड कास्टिंग लाइसेंस सेरेंडर करने आरंभ कर दिए हैं। यह सब मात्र ढाई दशकों में ही देखने को मिलेगा ऐसा नहीं सोचा था। देश में विगत तीन वर्षों में करीब 50 टीवी चैनलों ने अपने ब्रॉडकास्टिंग लाइसेंस सरेंडर कर दिए हैं।

लगातार एक ही तरह की प्रायोजित और एक तरफा खबरों से उकताए दर्शकों का एक बड़ा वर्ग डिजिटल व OTT प्लेटफॉर्म्स की ओर जा चुका है। इसके बाद चैनल आपरेटरों को दूसरा झटका गिरते विज्ञापन राजस्व, उच्च परिचालन लागत और बाजार की बदलती हुई स्थितियों ने दिया। परिचालन लागत ज्यादा हुई व विज्ञापन राजस्व कम हुआ। साथ ही दर्शक वर्ग गायब और कम दर्शकों के कारण विज्ञापन दाता कंपनियों द्वारा हाथ खींचना या विज्ञापन दरें कम कर देना, एक बड़ा कारण रहा। यह असर इंटरनेट चौनलों पर भी देखा जा रहा है। देश में DTH ग्राहकों में भी लगातार भारी गिरावट होती जा रही है। भारत में DTH ग्राहकों की संख्या वित्तीय वर्ष 2019-20 में 72 मिलियन से घटकर वित्तीय वर्ष 2024 में 62 मिलियन रह गई। यह संख्या लगातार तेजी से घटती जा रही है। विगत वर्षों में जिन प्रमुख ब्रॉडकास्टर्स ने अपने-अपने लाइसेंस सरेंडर किए हैं उनमें-JioStar, Zee Entertainment, Eenadu Television, TV Today Network, NDTV और ABP छमजूवता के नाम शामिल हैं जिन्होंने अपने कई चैनलों के लाइसेंस सरेंडर कर दिए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार Culver Ma Entertainment यानी सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया ने भी 26 डाउनलिंकिंग अनुमतियां सरेंडर की हैं। ABP Network ने उच्च लागत के कारण ABP News HD बंद कर दिया और NDTV ने अपने प्रस्तावित NDTV Gujarati चैनल का लाइसेंस वापस कर दिया। न्यूज चैनल्स जो कभी धड़ाधड़ प्रादेशिक न्यूज चैनल्स खोल रहे थे वह सब के सब धीरे-धीरे बंद होते चले गए। सबसे ज्यादा प्रादेशिक चैनल्स बंद हुए। मेरे एक पत्रकार साथी ने 2016 में बातचीत में कहा था कि एक दिन लाल किले के पीछे बाजार में न्यूज चैनलों के कैमरे और आईडी किलो में बिकेंगी। वह बात आज सच साबित हो रही है। जो न्यूज चैनल्स जिंदा भी हैं उनको विभिन्न राज्यों के सूचना विभाग और दिल्ली की मिनिस्ट्री आफ ब्राड कास्टिंग ने वेंटीलेटर की सुविधा पर रख रखा है। नाम न खोलने की शर्त पर एक बड़ी कंपनी के सीईओ जो कि मेरे मित्र भी हैं, का कहना है-हर साल हमारी कंपनी का पब्लिसिटी बजट करीब 20 करोड़ का हुआ करता था, लेकिन जिस तरह से आम जनता की पर्चेजिंग पावर घटी है और निर्यात में दिक्कतें बढ़ी हैं, अब पब्लिसिटी बजट जारी रख पाना कठिन है। चीन से जबरदस्त चुनौती अलग से है। कमोबेश देश की तमाम बड़ी कंपनियों ने अपना पब्लिसिटी बजट घटा दिया है और अब अपनी शर्तों पर विज्ञापन जारी कर रही हैं। उनके रेट पर विज्ञापन लेना हो तो आओ वरना चैनल के आफिस में बैठो। न्यूज चैनल्स के संदर्भ में हालात अभी और भी खराब होंगें। दर्शकों को बड़े पत्रकारों के यूट्यूब चैनल्स लुभाने लगे हैं। जहां संदर्भों के साथ और बिना किसी सेंसर शिप का कंटेंट हैं। कमेंट्स खुला है। सहमति-असहमति प्रगट करने की त्वरित सुविधा है। बहस का एक स्तर है। शाम छह बजे से आठ बजे तक स्टूडियो में बेमतलब के विषयों पर मुर्गे-मुर्गियां लड़ाने की परंपरा नहीं है। इंटरटेनमेंट के लिए तमाम ओटीटी प्लेटफॉर्म हैं और तात्कालिक न्यूज के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म हैं। इधर चैनलों की महंगी विज्ञापन दरों की काट देश के कुछ सूचना विभागों ने निकाल ही है। वे कम लागत में एलईडी वैन पर गांव-गांव व सुदूर कस्बों तक सरकारी योजनाओं को सीधे जनता तक कनेक्ट करने में सफल हो रहे हैं। जहां विज्ञापन की अवधि और उस बढ़ी अवधि के हिसाब से दरों के बढ़ने का डर नहीं है। एलईडी वैन की जीपीएस से मानीटरिंग हो रही है।

कम लागत और सीधे जनता से कनेक्टिविटी का यह प्रयोग छोटे राज्यों में धीरे-धीरे लोकप्रिय होता जा रहा है। भारत में न्यूज चैनल्स की शुरुआत औपचारिक रूप से 1965 में दूरदर्शन से हुई थी। 1965 में दूरदर्शन पर मात्र 5 मिनट का पहला नियमित समाचार बुलेटिन प्रतिमा पुरी द्वारा पढ़ा गया था। इसके बाद दूरदर्शन न्यूज का एक लंबा युग चला। प्रादेशिक समाचार प्रसारण भी आरंभ हुए। वर्ष, 1991 में जब खाड़ी युद्ध आरंभ हुआ और CNN जैसे विदेशी चैनल्स ने कवरेज दी तो लोग आश्चर्यचकित रह गए। भारत में 1992 में पहला प्राइवेट ब्रॉडकास्टिंग न्यूज चैनल जी न्यूज आया और फिर आज तक। सैटेलाइट टीवी के आने के बाद बहुत कुछ बदला। वर्ष, 1999 में आज तक डीडी से हटा और 24 घंटे का स्वतंत्र चैनल बना। 2000 के बाद तमाम न्यूज चैनल्स आए और 2025 के अंत तक आते-आते अब सरेंडर युग की ओर जा रहे हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

जलवायु परिवर्तनः आल्पस में भूकंप का खतरा

हम अक्सर सुनते हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण लू, बाढ़, जंगलों में आग और समुद्र स्तर बढ़ रहे हैं। लेकिन अब इसका एक और चौंकाने वाला असर पता चला है-आल्प्स पर्वतों में ग्लेशियरों के पिघलने से भूकंप का खतरा बढ़ सकता है। ऐसी घटना फ्रांस के मॉन्ट ब्लांक इलाके के एक ऊंचे बर्फ से ढंके पर्वत ग्रांड जोरासेस में घटी है। 2015 में जब इस क्षेत्र में भीषण गर्मी पड़ी तो भारी मात्रा में बर्फ पिघली।

इसके तुरंत बाद पहाड़ के नीचे छोटे-छोटे भूकंप महसूस किए गए। कोई नुकसान तो नहीं हुआ, लेकिन विशेषज्ञों के मुताबिक ऐसे छोटे-छोटे भूकंप कभी-कभी बड़े भूकंप की चेतावनी भी होते हैं, लेकिन बर्फ के पिघलने से भूकंप कैसे आ सकते हैं? जब ग्लेशियर पिघलते हैं तो पानी चट्टानों की दरारों से गहराई तक चला जाता है। वहां यह पानी चट्टानों पर दबाव बनाता है और जमीन के अंदर जो फॉल्ट लाइनें होती हैं, उनकी पकड़ कमजोर कर देता है। इन फॉल्ट लाइनों के फिसलने से ऊर्जा निकलती है जो भूकंप का कारण बनती है। ऐसा नहीं है कि यह प्रक्रिया सिर्फ आल्प्स में होती है। वैज्ञानिकों ने ताइवान जैसे इलाकों में भी देखा है कि बारिश के हिसाब से भूकंप की संख्या बदलती है। इसी तरह, जहां फ्रैकिंग (तेल और गैस निकालने की प्रक्रिया) या जियोथर्मल ऊर्जा के लिए जमीन के भीतर दबाव के साथ पानी डाला जाता है, वहां भी छोटे भूकंप आ सकते हैं। ETH ज्यूरिख के वैज्ञानिकों द्वारा मॉन्ट ब्लांक इलाके में छोटे भूकंप को मापने वाले यंत्रों की मदद से 2006 से अब तक दर्ज 12,000 से ज्यादा छोटे-छोटे भूकंपों के विश्लेषण से पता चला है कि 2015 की गर्मी के बाद इन भूकंपों की संख्या बढ़ी थी। यही पैटर्न अगले साल की ग्रीष्म लहरों के बाद भी दिखे। दिलचस्प बात यह है कि सतह के पास वाले छोटे भूकंप गर्मी के लगभग एक साल बाद बढ़े, जबकि गहराई (लगभग 7 कि.मी) में आने वाले भूकंप दो साल बाद बढ़े। इसका कारण यह हो सकता है कि पानी को गहराई तक पहुंचने में समय लगता है। भूकंप सम्बंधी ऐसे अनुभव पहले भी हुए हैं।

1960 के दशक में जब मॉन्ट ब्लांक टनल बनाई जा रही थी तो पहाड़ों के भीतर से अचानक तेजी से बहता हुआ बिलकुल ताजा पानी मिला। यह पानी इतना ताजा था कि उसमें अभी तक चट्टानों के खनिज भी नहीं घुल पाए थे। हालांकि, कुछ वैज्ञानिकों ने इन निष्कर्षों पर थोड़ी सावधानी बरतने की बात कही है। वैज्ञानिक फिलिप वर्नाट का कहना है कि वैसे तो आंकड़े काफी मजबूत हैं लेकिन यह भी मुमकिन है कि मॉन्ट ब्लांक सुरंग बनाने के प्रभाव देर से सामने आ रहे हों। इसलिए जरूरी है कि इस तरह की घटनाओं पर लंबे समय तक अध्ययन किए जाएं ताकि पता चल सके कि ऐसा पैटर्न केवल आल्प्स में है या दुनिया के अन्य पहाड़ी इलाकों में भी है।

1960 के दशक में जब मॉन्ट ब्लांक टनल बनाई जा रही थी तो पहाड़ों के भीतर से अचानक तेजी से बहता हुआ बिलकुल ताजा पानी मिला। यह पानी इतना ताजा था कि उसमें अभी तक चट्टानों के खनिज भी नहीं घुल पाए थे। हालांकि, कुछ वैज्ञानिकों ने इन निष्कर्षों पर थोड़ी सावधानी बरतने की बात कही है। वैज्ञानिक फिलिप वर्नाट का कहना है कि वैसे तो आंकड़े काफी मजबूत हैं लेकिन यह भी मुमकिन है कि मॉन्ट ब्लांक सुरंग बनाने के प्रभाव देर से सामने आ रहे हों। इसलिए जरूरी है कि इस तरह की घटनाओं पर लंबे समय तक अध्ययन किए जाएं ताकि पता चल सके कि ऐसा पैटर्न केवल आल्प्स में है या दुनिया के अन्य पहाड़ी इलाकों में भी है। अभी तक तो आल्प्स में आए इन भूकंपों से मॉन्ट ब्लांक सुरंग या आस-पास के शहरों को कोई खतरा नहीं है। इस क्षेत्र की इमारतें रिक्टर पैमाने पर 6 स्तर के भूकंप

झेलने लायक बनाई गई हैं, लेकिन स्थिति हिमालय जैसे इलाकों में ज्यादा गंभीर हो सकती है, जहां ग्लेशियर बहुत तेजी से पिघल रहे हैं और जहां बड़े और खतरनाक भूकंप आने की आशंका भी ज्यादा है। जलवायु परिवर्तन बढ़ता जा रहा है और यह अध्ययन हमें याद दिलाता है कि हमारी धरती पहले से ही एक नाजुक हालत में हैय ग्लेशियर पिघलने जैसे छोटे बदलाव भी इसे और अस्थिर कर सकते हैं।

-स्रोत फीचर्स

आकस्मिक चिकित्सा सुविधाओं पर पुनर्विचार की आवश्यकता

जब सिर्फ पैसों के कारण आपात स्थिति में इलाज नहीं दिया जाता, तो कई बार जान चली जाती है। यह लेख ऐसे ही कुछ बेहद जरूरी मामलों को सामने लाता है और सख्त नियमों और उन्हें सही तरीके से लागू करने की मांग करता है, ताकि संकट के समय किसी को भी इलाज से वंचित न किया जाए। कुछ ही महीने पहले पुणे में एक बहुत दुखद घटना घटी। एक गर्भवती महिला, जिसे पहले से ही गंभीर स्थिति में माना गया था और जो समय से पहले जुड़वां बच्चों को जन्म देने वाली थी, उसे पुणे के जाने-माने दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल लाया गया, लेकिन इलाज शुरू करने के लिए अस्पताल ने 10 लाख रुपए एडवांस जमा करने की मांग की।

परिवार ने इलाज के लिए गुहार लगाई और भरोसा दिलाया कि थोड़ी देर में पैसों का इंतजाम हो जाएगा, लेकिन अस्पताल ने पैसे के बिना इलाज शुरू करने से मना कर दिया। इससे कीमती समय बर्बाद हुआ और महिला को दूसरे अस्पताल ले जाना पड़ा। वहां उसने जुड़वां लड़कियों को जन्म तो दिया, लेकिन उसकी खुद की जान नहीं बच सकी।

बेवजह देरी- जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में जब मातृत्व मृत्यु रोकने की बात होती है, तो अक्सर थ्री डिले मॉडल (तीन देरियों) का जिक्र होता है। इस मॉडल से यह समझने में मदद मिलती है कि इलाज में किस-किस स्तर पर होने वाली देरी मां की जान ले सकती है। सबसे पहली देरी होती है घर में-जब परिवार यह तय करने में समय लगाता है कि इलाज करवाना है या नहीं। दूसरी देरी होती है अस्पताल तक पहुंचने में-जब रास्ते की दूरी, खराब सड़कें या परिवहन की समस्या आड़े आती है। तीसरी देरी तब होती है जब मरीज अस्पताल पहुंच तो जाता है, लेकिन वहां स्टाफ की कमी, जरूरी साधनों के अभाव या तंत्र की लापरवाही के कारण समय पर इलाज नहीं मिल पाता। हालांकि यह मॉडल आम तौर पर गर्भवती महिलाओं के इलाज के संदर्भ में लागू किया जाता है, लेकिन इसे हर उस आपात स्थिति पर लागू किया जा सकता है जहां समय पर इलाज न मिलने से मरीज की जान जा सकती है।

हमारे देश में तीसरे प्रकार की देरी से होने वाली मौतें ज्यादातर ग्रामीण इलाकों में देखी जाती हैं, जहां न तो अस्पताल होते हैं और न ही स्टाफ। लेकिन यह मामला एक चौंकाने वाला शहरी उदाहरण है, जहां देरी का कारण सुविधाओं की कमी नहीं, बल्कि निजी अस्पतालों की कॉर्पोरेट सख्ती था। यह जानते हुए भी कि महिला की हालत बेहद गंभीर थी, अस्पताल ने सिर्फ पैसों की वजह से इलाज करने से मना कर दिया। इसलिए यह जरूरी है कि हम इस बात को सामने लाएं कि जो बड़े निजी अस्पताल सरकारी छूट और सुविधाएं लेते हैं, वे आपात स्थिति में जरूरतमंद मरीजों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं। कैसे कई बार वित्तीय हित मरीज की देखभाल और सुरक्षा से ज्यादा अहम हो जाते हैं।

मेरा निजी अनुभव- उपरोक्त खबर को पढ़ने के बाद मुझे भी अपना एक हालिया अनुभव साझा करने की जरूरत महसूस हो रही है, जो यह दिखाता है कि निजी अस्पतालों में नीतियों में बदलाव और जवाबदेही कितनी जरूरी है।

मेरी पत्नी को एक्टोपिक प्रेग्नेंसी जिसमें गर्भधारण गर्भाशय की बजाय किसी अन्य स्थान पर हो जाता है और यह एक गंभीर मेडिकल इमरजेंसी होती है की स्थिति में तुरंत अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। हमारे पास स्वास्थ्य बीमा था, इसलिए कैशलेस इलाज की सुविधा उपलब्ध थी। मैंने सारे जरूरी दस्तावेज तुरंत जमा कर दिए। बताया गया कि बीमा क्लेम की प्रक्रिया शुरू हो गई है और मंजूरी में लगभग तीन घंटे लगेंगे, लेकिन साथ ही यह भी कहा गया कि जब तक 25,000 रुपए एडवांस में नहीं दिए जाते, सर्जरी शुरू नहीं होगी।

मेरे लिए पैसा देना मुश्किल नहीं था, फिर भी मैंने पूछा कि जब कैशलेस सुविधा है तो क्या पैसे मिलने के लिए तीन घंटे का इंतजार नहीं किया जा सकता? जवाब मिला कि सर्जरी तभी शुरू होगी जब कैशलेस क्लेम मंजूर हो जाएगा। मैंने बार-बार समझाया कि यह इमरजेंसी है, लेकिन बिलिंग विभाग ने कोई नरमी नहीं दिखाई। आखिरकार मैंने एडवांस राशि दी, सर्जरी हुई और जैसा अनुमान था, क्लेम भी मंजूर हो गया। पत्नी की छुट्टी के बाद जमा की गई राशि लौटा दी गई। लेकिन इस अनुभव ने मेरे जेहन में कई सवाल छोड़ दिए।

यदि उस समय मेरे पास 25,000 रूपए न होते तो क्या मेरी पत्नी की सर्जरी टल जाती, जबकि मैंने कैशलेस इलाज के लिए सारे जरूरी दस्तावेज जमा कर दिए थे और यदि देरी से उनकी सेहत को नुकसान होता, तो उसका जिम्मेदार कौन होता? आपात स्थिति में इन प्रक्रियाओं की बजाय अस्पताल इलाज को प्राथमिकता क्यों नहीं देते? जब मरीज को सर्जरी या गंभीर इलाज की जरूरत है और वह 2.3 दिन अस्पताल में रहने वाला है, और 25,000 रुपए की एडवांस राशि बहुत बड़ी नहीं है, खासकर तब जब अस्पताल कैशलेस सुविधा वाला है और बीमा से पैसा मिलने ही वाला है। फिर भी इलाज शुरू करने से पहले इतनी बेरहमी से एडवांस की मांग क्यों? इलाज में देरी जान ले सकती है। क्या ऐसी स्थिति में इंसानियत और सहयोग की भावना जरूरी नहीं है? आपात समय में मरीज के परिवारजन घबराए होते हैं और कभी-कभी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होती है।

ऐसे मौके पर क्या अस्पताल को थोड़ी नरमी नहीं दिखानी चाहिए? मरीज की जान से जुड़ी स्थिति में अस्पताल इतनी कठोर नीति क्यों अपनाते हैं? और आखिर किसने निजी अस्पतालों को यह हक दिया कि वे मरीज की जान को इस तरह जोखिम में डालें? वैसे कैशलेस क्लेम को मंजूरी मिल गई थी, और जो पैसे मैंने एडवांस में दिए थे, वो पैसे मुझे तुरंत नहीं मिले थे। यहां मुझसे एक ग्राहक के तौर पर उम्मीद की गई थी कि मैं अस्पताल की आंतरिक प्रक्रिया के साथ सहयोग करूं। लेकिन क्या अस्पतालों द्वारा एडवांस राशि तुरंत जमा करवाने के नियम में ढील नही दी जानी चाहिए, खासकर इमर्जेंसी की स्थिति में? क्या मरीज के परि. जनों की यह उम्मीद गलत है कि ऐसी स्थिति में अस्पताल थोड़ा लचीलापन दिखाए? यहां साफ तौर पर असंतुलन हैय जहां मरीज से तो उम्मीद की जाती है कि वह अस्पताल की प्रक्रियाओं का सम्मान करे, लेकिन अस्पताल मरीज की जरूरतों को नजरअंदाज कर देता है। **-साभार एस.एफ**

मोदी ने रूस को यूक्रेन पर परमाणु हमला करने से रोका

पोलैंड के उप विदेश मंत्री व्लादिस्लाव बार्टोशेव्सकी ने किया दावा, कहाः भारतीय पीएम ने वैश्विक स्तर पर सकारात्मक भूमिका निभाई

■ जैसा कि मैंने नई दिल्ली में अपने एक इंटरव्यू में बताया था कि पीएम मोदी ने 2022 के आखिर में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बात की थीः बार्टोशेव्स्की

वाशिंगटन। पोलैंड के उप विदेश मंत्री व्लादिस्लाव बार्टोशेव्स्की ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक स्तर पर सकारात्मक भूमिका निभाई। बार्टोशेव्स्की ने कहा कि पीएम मोदी ने रूस को यूक्रेन पर परमाणु हमले से रोका था।

बार्टोशेव्स्की ने एक समाचार एजेंसीके साथ बातचीत में भारत के साथ पोलैंड के सौहार्दपूर्ण संबंधों की चर्चा की। उन्होंने कहा, हमारे भारत के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं। हम दुनिया में भारत की भूमिका को स्वीकार करते हैं। फिर उन्होंने रूस-यूक्रेन जंग में प्रधानमंत्री मोदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। बार्टोशव्स्की ने कहा, जैसा कि मैंने नई दिल्ली में अपने एक इंटरव्यू में बताया था कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2022 के आखिर में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बात की थी और उन्हें यूक्रेन में सामरिक परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने की कोशिश करने से रोका था। यह एक सकारात्मक भूमिका थी जो प्रधानमंत्री मोदी ने निभाई। भारत दुनिया के मामलों में सकारात्मक भूमिका निभाता है और मुझे उम्मीद है कि यह जारी रहेगा। पीएम मोदी के पोलैंड दौरे को याद करते हुए बार्टोशेव्स्की ने कहा, हमने 2024 में पीएम मोदी के साथ एक रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। तब वह भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर पोलैंड आए थे। वह 45 साल में हमारे देश आने वाले वो भारत के पहले पीएम थे। यह एक बहुत अच्छी यात्रा थी। उन्होंने आगे कहा, अब हमने ईयू के साथ विद. ेश व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर किए हैं। हम भी इसका हिस्सा हैं। मैं अभी विदेश मंत्रालय से लौटा हूं, जहां हमने सैन्य सहयोग, डिजिटल उद्योग सहयोग, सुरक्षा मुद्दे, हाई-टेक में आईटी निवेश, अंतरिक्ष में सहयोग और अन्य चीजों से जुड़े कई व्यावहा. रिक कदमों पर चर्चा की। जब उनसे पूछा गया कि क्या भारत ने दूसरे देशों की तुलना में अमेरिका के साथ ज्यादा फायदेमंद व्यापार समझौता किया है, तो उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि भारत एक बहुत बड़ी आर्थिक शक्ति है। आप अब दुनिया में जीडीपी के मामले में चौथे नंबर पर हैं और प्रधानमंत्री मोदी ने यह साफ कर दिया है कि आपका लक्ष्य बहुत जल्द दुनिया की तीसरी बड़ी शक्ति बनना है। भारत एक बहुत बड़ा बाजार है। लगभग डेढ़ अरब लोग यहां रहते हैं और इस वजह से भी यह एक बहुत ही उन्नत बाजार है।

रूसी सैन्य खुफिया एजेंसी के डिप्टी चीफ पर जानलेवा हमला

मॉस्को। रूस की सैन्य खुफिया एजेंसी (जीआरयू) के उप प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल व्लादिमीर अलेक्सेएव शुक्रवार को मॉस्को में एक अज्ञात हमलावर की गोलीबारी में गंभीर रूप से घायल हो गए। राजधानी के उत्तर-पश्चिमी इलाके में स्थित एक आवासीय इमारत के पास घात लगाकर बैठे हमलावर ने जनरल अलेक्सेएव पर कई गोलियां चलाईं और मौके से फरार हो गया। हमले के तुरंत बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। रूसी जांच समिति ने इस घटना को 'हत्या के प्रयास' का मामला मानते हुए आपराधिक जांच शुरू कर दी है। जनरल अलेक्सेएव 2011 से जीआरयू में दूसरे सबसे शक्तिशाली अधिक. ारी के पद पर तैनात हैं।

पुलवामा। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादिशें की मौजूदगी की खुफिया जानकारी के बाद चलाए गए तलाशी अभियान के दौरान सुरक्षाकर्मी निगरानी करते हुए।

सिंगापुर शांति बोर्ड में शामिल होने के प्रस्ताव का कर रहा है मूल्यांकन

सिंगापुर सिटी। सिंगापुर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के शांति बोर्ड में शामिल होने के प्रस्ताव का मूल्यांकन कर रहा है। यह जानकारी द स्ट्रेट्स टाइम्स अखबार ने सिंगापुर के विदेश मंत्री विवियन बालाकृष्णन के हवाले से गुरुवार को दी। रिपोर्ट में कहा गया कि संसद के पांच सदस्यों ने बालाकृष्णन से सिंगापुर को शांति बोर्ड में शामिल होने के लिए अमेरिका द्वारा दिए गए स्थाई निमंत्रण के बारे में सवाल किया था। उल्लेखनीय है कि 16 जनवरी को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने शांति बोर्ड के गठन की घोषणा की

बांग्लादेश में मोहम्मद यूनुस के घर के बाहर हिंसक प्रदर्शन

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में शुक्रवार को सरकारी कर्मचारियों और पुलिस के बीच जोरदार झड़प हो गई। ये कर्मचारी नौवें नेशनल पे स्केल को लागू करने की मांग कर रहे थे। ये झड़प मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस के सरकारी आवास 'जमुना' के बाहर हुआ। यह घटना ऐसे समय पर हुई है जब आम चुनाव में सिर्फ छह दिन बचे हैं। अगस्त 2024 में हुई हिंसा के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना को पद छोड़ना पड़ा था और वे भारत चली गई थीं। इसके बाद निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में एक केयरटेकर सरकार बनाई गई थी। शुक्रवार सुबह देश के अलग-अलग हिस्सों से आए प्रदर्शनकारी शहीद मीनार पर जमा हुए और वहां से जमुना की ओर मार्च करने लगे। वे नौवें नेशनल पे कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर गजट तुरंत जारी करने और वेतन बढ़ाने की मांग कर रहे थे। प्रदर्शन के दौरान लोग नारे लगा रहे थे कि पेट में चावल नहीं है, तो मुंह में विकास किस बात का। करीब साढ़े ग्यारह बजे प्रदर्शनकारियों ने शाहबाग इलाके में लगाए गए पुलिस बैरिकेड तोड़ दिए और आगे बढ़ने लगे। इसके बाद पुलिस ने भीड़ को रोकने के लिए वाटर कैनन, आंसू गैस, साउंड ग्रेनेड का इस्तेमाल किया और लाठीचार्ज भी किया।

अमेरिकियों को तुरंत ईरान छोड़ने की चेतावनी

वर्चुअल एंबेसी बोलीः मदद का इंतजार करें, खुद निकलें, ओमान में परमाणु मुद्दे पर बातचीत जल्द

■ यह पिछले करीब नौ महीनों में दोनों देशों के बीच पहली औपचारिक बैठक है, जो जून 2025 में हुए संघर्ष के बाद से निलंबित थी

वाशिंगटन। अमेरिका ने ईरान में रह रहे अपने नागरिकों को तुरंत देश छोड़ने की सख्त चेतावनी दी है। वर्चुअल अमेरिकी दूतावास ने कहा है कि देश में सुरक्षा की स्थिति बेहद खराब हो गई है। बढ़ती अशांति, पाबंदियां और यात्राा में रुकावटें लोगों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन रही हैं। एम्बेसी ने साफ कहा है कि जल्द से जल्द ईरान छोड़ दें। अपने निकलने का प्लान खुद बनाएं और इसमें अमेरिकी सरकार की मदद पर भरोसा न करें।

मौजूदा हालात में आधिकारिक सहायता बेहद सीमित है। ईरान में देशव्यापी विरोध प्रदर्शन और अशांति के कारण सुरक्षा व्यवस्था सख्त हो गई है। सड़कें बंद हैं, सार्वजनिक परिवहन ठप है, इंटरनेट और मोबाइल-लैंडलाइन सेवाएं बार-बार बाधित हो रही हैं। कई एयरलाइंस ने ईरान आने-जाने वाली उड़ानों को सीमित या रद्द कर दिया है, जिससे बाहर निकलना और भी मुश्किल हो गया है। इस बीच अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु वार्ता आज ओमान की राजधानी मस्कट में शुरू हो रही है।

यह पिछले करीब नौ महीनों में दोनों देशों के बीच पहली औपचारिक बैठक है, जो जून 2025 में हुए संघर्ष के बाद से निलंबित थी। जनवरी की शुरूआत में बढ़ती मंहगाई के खिलाफ हजारों प्रदर्शनकारी ईरान की सड़कों पर उतर आए। ईरान में तनाव बना हुआ है। अमेरिकी चेतावनी में कहा गया है कि अगर तुरंत निकलना संभव न हो तो सुरक्षित जगह पर रहें। वहां खाना, पानी, दवाइयां और जरूरी सामान का स्टाक रखें। इंटरनेट ब्लैकआउट जारी रहने की संभावना है, इसलिए परिवार और दोस्तों से संपर्क के लिए दूसरे तरीके सोचें। यूएसै एम्बेसी ने अमेरिका-ईरान की दोहरी नागरि. कता रखने वाले लोगों के लिए ज्यादा खतरा बताया है। ईरान दोहरी नागरिकता को मायूएसयता नहीं देता, इसलिए ऐसे लोग ईरानी पासपोर्ट से ही बाहर निकल सकते हैं। अमेरिकी पासपोर्ट दिखाना या अमेरिका से जुड़ाव जाहिर करना ईरानी अधिकारियों के लिए हिरासत में लेने का कारण बन सकता है। ऐसे में पूछताछ, गिरफ्तारी या लंबी हिरासत का खतरा है। जो अमेरिकी नागरिक बिना वैध अमेरिकी पासपोर्ट के हैं, उन्हें ईरान छोड़ने के बाद नजदीकी अमेरिकी दूतावास से पासपोर्ट बनवाने की सलाह दी गई है। अमेरिकी सरकार ने साफ किया है कि ईरान में कूटनीतिक और कांसुलर संबंध न होने की वजह से वह अपने नागरिकों की मदद करने की स्थिति में नहीं है। अमेरिका के हितों का प्रतिनिधित्व तेहरान में स्विट्जरलैंड दूतावास करता है। रूटीन कांसुलर सेवाएं बंद हैं और हालात में सुधार के कोई संकेत नहीं दिख रहे, इसलिए अमे. रिकी नागरिकों से खुद ही सुरक्षित निकलने की ठोस योजना बनाने की अपील की गई है। सुरक्षा के लिए कुछ जरूरी सलाह भी दी गई है, जैसे प्रदर्शनों और भीड़-भाड़ वाली जगहों से दूर रहें, फोन हमेशा चार्ज रखें, परिवार से संपर्क बनाए रखें और स्थानीय मीडिया पर नजर रखकर हालात की जानक. ारी लेते रहें। हाई-लेवल वार्ता से पहले व्हाइट हाउस ने कहा है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कूटनीति के पक्ष में हैं, लेकिन अगर बातचीत नाकाम होती है तो ताकत का इस्तेमाल करने के लिए भी तैयार हैं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलाइन लेविट ने गुरुवार को पत्राकारों से कहा कि ट्रम्प ओमान में होने वाली बातचीत में देखना चाहते हैं कि क्या कोई समझौता हो सकता है। साथ ही उयूएसहोंने ट्रम्प की मांग दोहराई कि ईरान के पास जीरो परमाणु क्षमता होनी चाहिए। उयूएसहोंने चेतावनी भी दी कि अगर बातचीत से नतीजा नहीं निकला तो राष्ट्रपति के पास कई विकल्प मौजूद हैं।

ईरान ने अमेरिका को दिया कड़ा संदेश

■ 'खोर्रमशहर-4' बैलिस्टिक मिसाइल को सैन्य अड्डे पर तैनात कर किया तैनात

तेहरान। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशन. री गार्ड कॉर्प्स ने अपनी नवीनतम लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल 'खोर्रमशहर-4' को एक सैन्य अड्डे पर तैनात कर दिया है। सरकारी प्रसारक प्रेस टीवी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। रिपोर्ट के अनुसार, यह मिसाइल आईआरजीसी एयरोस्पेस फोर्स द्वारा संचालित एक नए सैन्य स्थल के उद्घाटन के दौरान प्रदर्शित की गई। इसकी तैनाती को ईरान की रक्षा नीति में औपचारिक रूप से शामिल किए जाने का संकेत माना जा रहा है। प्रेस टीवी के मुताबिक, 'खोर्रमशहर-4' की मारक क्षमता 2,000 किलोमीटर (करीब 1200 मील) है और यह 1500 किलोग्राम (लगभग 3300 पाउंड) तक का वारहेड ले जाने में सक्षम है। आईआरजीसी के राजनीतिक मामलों के उप कमांडर ब्रिगेडियर जनरल यदोल्लाह जावानी ने कहा कि मिसाइल का प्रदर्शन अमेरिका को यह संदेश देने के लिए था कि ईरान अपनी रक्षा क्षमताओं से पीछे हटने का इरादा नहीं रखता। अल मायादीन से बातचीत में उन्होंने कहा कि ईरान 'अपने रुख से पीछे नहीं हटेगा और युद्ध नहीं चाहता कि लेकिन यदि दुश्मन कोई गलती करता है तो उसे कड़ा जवाब दिया जाएगा।

अफगान तालिबान ने आतंकी समूहों की सहायता वाले आरोपों को किया खारिज

■ पाकिस्तान के प्रतिनिधि आसिम इफ्तिखार अहमद ने तालिबान पर आतंकी समूहों की सहायता करने और उन्हें बढ़ावा देने का आरोप लगाया था

काबुल। अफगान तालिबान ने अफगानिस्तान में सक्रिय विद. ेशी आतंकवादी समूहों को किसी भी प्रकार की सहायता देने के आरोपों को खारिज कर दिया। उसने आरोप लगाया कि इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों ने पड़ोसी देशों में ठिकाने स्थापित किए हैं, जो पाकिस्तान की ओर एक अप्रत्यक्ष इशारा है।

तालिबान के प्रवक्ता जबिहुल्लाह मुजाहिद ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में कई देशों द्वारा तालिबान-नियंत्रित अफगानिस्तान से कथित आतंकवादी गतिविधियों के बारे में व्यक्त की गई चिंताओं का जवाब देते हुए गुरुवार को कहा कि अफगानिस्तान सुरक्षित है और इस्लामी अमीरात में कोई विदेशी या दुष्ट समूह मौजूद नहीं है। अफगानिस्तान में इस्लामिक स्टेट की हार का दावा करते हुए उन्होंने कहा कि दुर्भाग्यवश इस आतंकी समूह ने हमारे पड़ोसी देशों में अपने ठिकाने बना लिए हैं। मुजा. हिद ने देशों द्वारा उठाई गई सुरक्षा चिंताओं को बेबुनियाद करार देते हुए कहा कि ये चिंताएं संयुक्त राष्ट्र में तालिबान के प्रतिनिधित्व की कमी के कारण उत्पन्न हुई हैं। हालांकि उन्होंने किसी भी पड़ोसी देश का नाम नहीं लिया, जहां उनके अनुसार इस्लामिक स्टेट खोरासान ने कथित तौर पर शरण ली थी लेकिन तालिबान अधिका. रियों ने एक से अधिक बार पाकिस्तान पर इस्लामिक स्टेट के गुर्गों को पनाह देने, सहायता करने, प्रशिक्षण देने एवं वित्तपोषण करने का आरोप लगाया है। बुधवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सत्र में, संयुक्त राष्ट्र के एक वरिष्ठ अधिकारी, अलेक्जेंडर जुएव ने चेतावनी दी कि इस्लामिक अमीरात में आईएस-केपी क्षेत्र और उससे परे दोनों जगह सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा बना हुआ है, जो तालिबान द्वारा बार-बार किए गए उन दावों के विपरीत है कि उसने देश के भीतर इसे हरा दिया है। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत माइक वाल्ट्ज ने कहा कि अफगानिस्तान में इस्लामिक स्टेट का खतरा लगातार बना हुआ है और इसके लिए तत्काल समन्वित अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई की आवश्यकता है।

अमेरिका की खूंखार अपराधियों की सूची में 89 भारतीय शामिल

वाशिंगटन। अमेरिका ने अवैध प्रवास और अपराध के खिलाफ अपनी सख्त नीति को और तेज करते हुए 89 भारतीय नागरिकों को '**Worst of the Worst**' यानी सबसे खतरनाक अपराधी की सूची में शामिल किया है।

यह सूची अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग (डीएचएस) द्वारा एक नई सार्वजनिक वेबसाइट पर जारी की गई है, जिसमें गंभीर अपराधों में दोषी पाए गए अवैध प्रवासियों का विवरण दिया गया है। विभाग की ओर से शुरू की गई इस वेबसाइट में अपराधियों के नाम, तस्वीरें, राष्ट्रीयता और उनके द्वारा किए गए अपराधों की जानकारी सार्वजनिक की गई है। विभाग का कहना है कि इस पहल का उद्देश्य अमेरिकी नागरिकों को यह दिखाना है कि किन आपराधिक अवैध प्रवासियों को गिरफ्तार कर उनके समुदायों से हटाया गया है। वेबसाइट के शुरुआती संदेश में बताया गया है कि इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट (आईसीई) द्वारा गिरफ्तार किए गए सबसे गंभीर अपराधियों को प्राथमिकता के आधार पर चियूिएसहत किया जा रहा है। इसमें हत्या, यौन अपराध, ड्रग तस्करी और हिंसक अपराधों में शामिल लोगों को सबसे पहले सूचीबद्ध किया गया है। डीएचएस ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर भी इस वेबसाइट की जानकारी साझा करते हुए कहा कि अब आम लोग खुद देख सकते हैं कि किन अपराधियों को पकड़ा गया है, उयूएसहोंने क्या अपराध किए और उयूएसहें किन इलाकों से हटाया गया।

मैंडेलसन की नियुक्ति पर स्टारमर ने सार्वजनिक मांगी माफी

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने अमेरिका में ब्रिटेन के राजदूत के रूप में पीटर मैंडेलसन की नियुक्ति को लेकर सार्वजनिक रूप से माफी मांगी है। अमेरिका के यौन अपराधी जेफ्री एपस्टीन के साथ मैंडेलसन के कथित संबंधों को लेकर विवाद गहराने के बाद स्टारमर ने यह कदम उठाया। स्टारमर ने फरवरी 2025 में मैंडेलसन को अमेरिका में राजदूत नियुक्त किया था। बाद में एपस्टीन से उनके संबंधों को लेकर उठे विवाद के बीच सितम्बर में उन्हें पद से हटा दिया गया। रविवार को मैंडेलसन ने लेबर पार्टी से अपने इस्तीफे की भी घोषणा की। गुरुवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में स्टारमर ने कहा कि एपस्टीन के पीड़ितों ने न्याय में देरी और जवाबदेही से वंचित होने का अनुभव किया है

कश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा बनेगाः शहबाज

पाकिस्तानी पीएम बोलेः कश्मीरियों के साथ मजबूती से खड़े, यह इलाका पाक की लाइफ लाइन है

■ पाक के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने इस क्षेत्र को पाकिस्तान की लाइफ लाइन बताया था

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पीओके में कश्मीर को लेकर एक बार फिर विवादित बयान दिया है। मुजफ्फराबाद में विधानसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'कश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा बनेगा।' शहबाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान कश्मीरियों के साथ मजबूती से खड़ा है और जम्मू-कश्मीर विवाद का हल कश्मीर के लोगों की इच्छा के मुताबिक होना चाहिए।

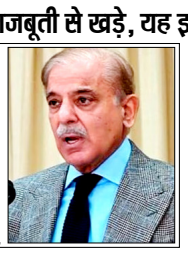

शहबाज ने कहा कि जम्मू-कश्मीर विवाद का समाधान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के प्रस्तावों को लागू करने से ही हो सकता है। उन्होंने कहा कि मैं पाकिस्तानी लोगों और पाकिस्तानी नेतृत्व की ओर से कश्मीर के अपने भाइयों के साथ एकजुटता दिखाने आया हूं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने इस क्षेत्रा को पाकिस्तान की लाइफ लाइन बताया था। शहबाज ने यह भी कहा कि पाकिस्तान क्षेत्रा में शांति चाहता है, लेकिन यह शांति बराबरी और न्याय के आधार पर ही संभव है। हर साल की तरह इस साल भी 5 फरवरी को पाकिस्तान में कश्मीर एकजुटता दिवस (कश्मीर सालिडैरिटी डे) मनाया गया। इसमें रैलियां, प्रदर्शन और सेमिनार आयोजित किए गए। स्टेट रन रेडियो पाकिस्तान ने बताया कि संघर्ष में जान गंवाने वालों की याद में सुबह 10 बजे एक मिनट का मौन रखा गया। लोग बैनर और प्लेकार्ड लेकर आए थे। भारत ने पाकिस्तान के दावों को लगातार खारिज किया है। नई दिल्ली का साफ कहना है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भारत के अभिन्न अंग थे, हैं और हमेशा रहेंगे। शहबाज शरीफ ने कहा कि कश्मीर का मुद्दा पाकिस्तान की फारेन पालिसी का आधार है। शहबाज ने भारत और पाकिस्तान के बीच मई 2025 में हुए चार दिवसीय सैन्य संघर्ष को भी याद किया। उन्होंने दावा किया कि इस संघर्ष के बाद कश्मीर मुद्दा एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरी ताकत के साथ उठाया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत अब प्राक्सी के जरिए आतंकवाद को बढ़ावा दे रहा है। पाकिस्तान मिलिटेंट ग्रुप बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) को भारत का समर्थन मिलने का दावा करता है, जबकि भारत ऐसे आरोपों को हमेशा खारिज करता रहा है। शहबाज ने सभा में कहा कि कश्मीर की लड़ाई फिलिस्तीन की तरह है। उन्होंने दोनों मुद्दों को न्याय और आत्म-निर्णय की लड़ाई बताया। पाकिस्तानी पीएम ने अलगाववादी और उग्रवादी आंदोलनों से जुड़े कई लोगों का भी जिक्र किया। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने भी एक बयान जारी कर कश्मीरियों के लिए पाकिस्तान के नैतिक, कूटनीतिक और राजनी. तिक समर्थन की बात दोहराई।

तारिक रहमान आठ को बीएनपी की रैली को करेंगे संबोधित

ढाका। बंगलादेश में चुनाव प्रचार अपने अंतिम चरण में प्रवेश कर रहा है, ऐसे में बंगलादेश राष्ट्रवादी पार्टी (बीएनपी) के अध्यक्ष तारिक रहमान आठ फरवरी को ढाका के नयापल्टन इलाके में पार्टी की अंतिम चुनावी रैली को संबोधित करेंगे। यह रैली दोपहर दो बजे शुरू होने वाली है, जिसमें रहमान मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। बीएनपी के वरिष्ठ संयुक्त महासचिव रुहुल कबीर रिजवी ने गुरुवार को पार्टी के नयापल्टन केंद्रीय कार्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में पत्रकारों को यह जानकारी दी। रिजवी ने कहा कि कार्यक्रम की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं और ढाका और आसपास के निर्वाचन क्षेत्रों से बीएनपी के उम्मीदवार रैली में शामिल होंगे।

ऑपरेशन सिंदूर से मिले सब को अमल में लाने की जरूरतः एयर मार्शल मिश्रा

नई दिल्ली। पश्चिमी वायु कमान के प्रमुख एयर मार्शल जीतेन्द्र मिश्रा ने ऑपरेशन सिंदूर से मिले सबकों को महत्वपूर्ण बताते हुए भविष्य के युद्धों और अभियानों में इनकी भूमिका पर बल दिया है।

कमान के सीनियर एयर स्टाफ ऑफिसर एयर मार्शल जे एस मान ने भी सेनाओं के बीच पारस्परिक संचालन क्षमता बढ़ाने, डोमेन-निरपेक्ष निर्णय प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने, 'सेंसर-टू-शूटर' संपर्कों को सुदृढ़ करने तथा अधिक दक्षता के लिए संचालन प्रक्रियाओं में सुधार को जरूरी बताया। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को एक वक्तव्य जारी कर कहा कि पश्चिमी वायु कमान मुख्यालय ने दो दिन के 'ऑल डोमेन जॉइंट ऑपरेशंस' अभ्यास के दौरान उच्चस्तरीय संयुक्त संच. ालन सम्मेलन का आयोजन किया। इसका उद्देश्य संचालन स्तर पर अंत सेना और अंतर-सेना समन्वय को सुदृढ़ करना था जिससे कि बढ़ते जटिल बहु-डोमेन माहौल में भारतीय रक्षा बलों की संयुक्त संच. ालन क्षमताओं को और अधिक मजबूत किया जा सके।

सम्मेलन में मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ , सेना, नौसेना, रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी तथा रक्षा खुफिया एजेंसी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ वायु सेना के वरिष्ठ नेतृत्व ने भाग लिया। एयर मार्शल मिश्रा ने ऑपरेशन सिंदूर से प्राप्त महत्वपूर्ण सबकों तथा भविष्य के युद्ध संच. ालन पर उनके व्यापक प्रभावों को रेखांकित किया। उन्होंने निर्णायक रणनीतिक प्रभाव उत्पन्न करने में वायु शक्ति की केंद्रीय भूमिका, सतही युद्धाभ्यास को आक्रामक वायु अभियानों के साथ समन्वित करने की आवश्यकता तथा स्टैंड-ऑफ हथियारों के प्रयोग से प्राप्त रणनीतिक लाभ को विशेष रूप से उजागर किया। उन्होंने 1971 की लड़ाई की पारंपरिक क्षरण-आधारित युद्ध अवधारणाओं तथा पारंपरिक 'इफेक्ट्स-बेस्ड ऑपरेशंस' ढांचे से आगे बढ़ते हुए अधिक फुर्तीले, अनुकूलनीय एवं पूर्णतः एकीकृत संयुक्त युद्धक प्रतिमान को अपनाने का आह्वान किया।

मोसाद के लिए जासूसी करने के आरोप में दो गिरफ्तार

इस्तांबुल। तुर्की के अधिकारियों ने इजरायल की खुफिया एजेंसी 'मोसाद' के लिये जासूसी करने के संदेह में इस्तांबुल में दो व्यक्तियों को हिरासत में लिया है। इस्तांबुल मुख्य लोक अभियोजक कार्यालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

संदिग्धों को 'मोनिटम' नामक एक जासूसी अभियान के तहत हिरासत में लिया गया। यह अभियान अभियोजक कार्यालय और इस्तांबुल पुलिस विभाग की आतंकवाद विरोधी शाखा के समन्वय में तुर्की के राष्ट्रीय खुफिया संगठन द्वारा चलाया गया था। तुर्की के सरकारी समाचार चैनल टीआरटी की रिपोर्ट के अनुसार, जांचकर्ताओं ने बताया कि दोनों संदिग्धों ने मुख्य रूप से इजरायली नीतियों का विरोध करने वाले फिलिस्तीनियों के साथ सामाजिक और व्यावसायिक संपर्क स्थापित किये और फिर खुफिया जानका. रियां एकत्र की। उन्होंने व्यक्तियों, स्थानों और नेटवर्क से संबंधित जानकारी इजरायली खुफिया एजेंसी को पहुंचाई। सुरक्षा स्रोतों के हवाले से टीआरटी ने बताया कि संदिग्धों में से एक ने कई यूरोपीय देशों में मोसाद के कई एजेंटों के साथ बैठकें की थीं। उस पर गाजा में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त करने की कोशिश करने का भी आरोप है, जहां उसने कथित तौर पर गोदाम के लिए रेकी की और उनकी तस्वीरें इजरायली खुफिया विभाग को भेजीं। रिपोर्ट में कहा गया है कि कानूनी प्रक्रिया जारी रहने तक दोनों संदिग्ध हिरासत में रहेंगे।